।। ओ३म् ।। वर्ष-७ अंक-६

वैदिक संसार

अप्रैल- २०१८ मासिक-हिन्दी मूल्य - २५/-

प्रारब्धानुसार शून्य से शिखर पर पहुंचने वाली तथा
न्याय की बलिवेदी पर एकमात्र पुत्र को आहूत कर
शिखर से शून्य को अंगीकार करने वाली
ईश्वर निष्ठ, शिव, गो एवं नर्मदा भक्त,
धर्मपरायणा, सादगी-सौम्यता की प्रतिमूर्ति

देवी अहिल्याबाई

जयन्ति दिवस पर

शत-शत नमन

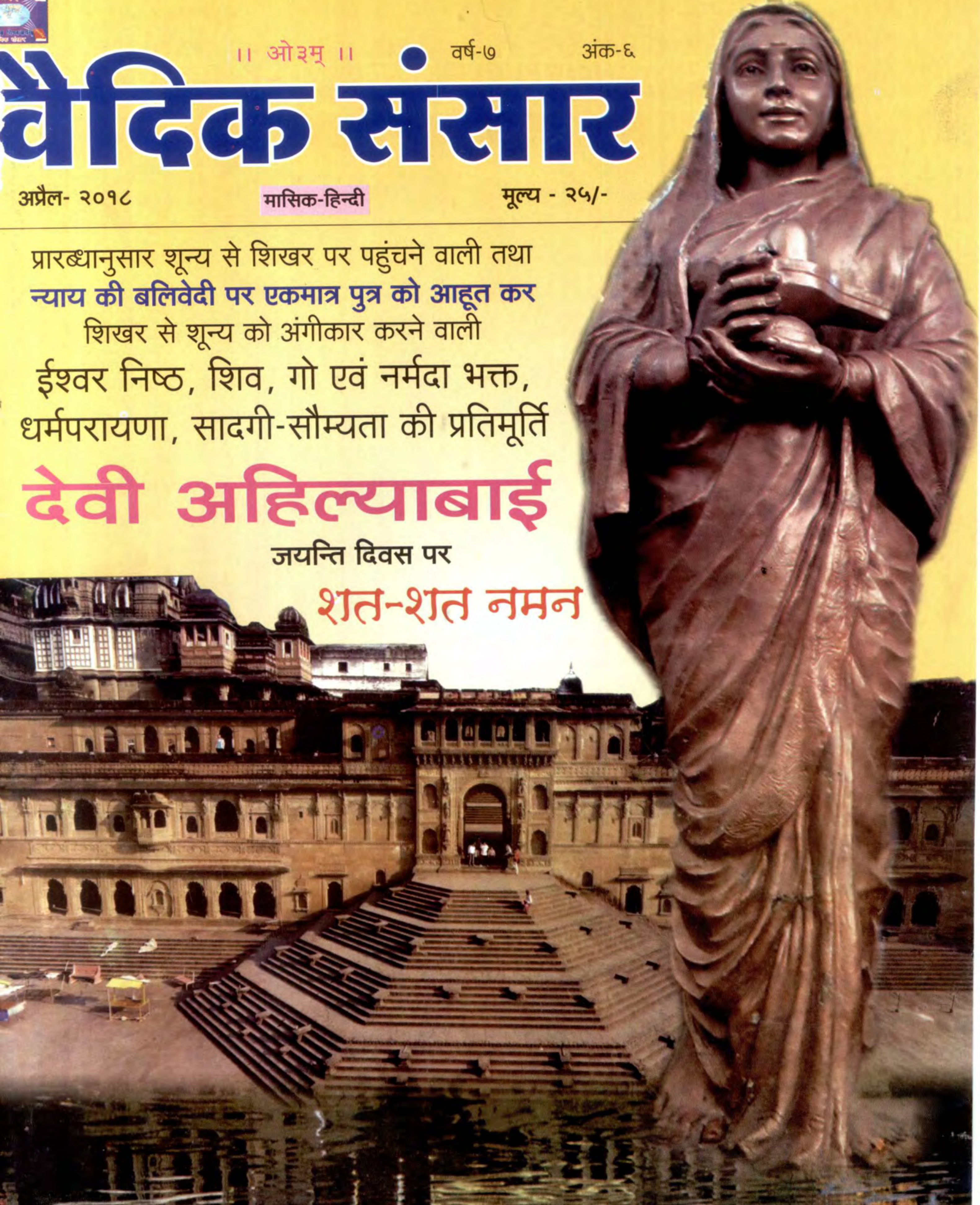

क्रियात्मक योगाभ्यास शिविर, अप्रैल-२०१८ की चित्रावली

शिविर समापन पर मंचस्थ स्वामी विवेकानन्द जी तथा अन्य विद्वान्

आचार्य सत्यजीत जी तथा स्वामी मुक्तानन्द जी एवं अन्य विद्वान् महानुभाव

आर्य जगत् के उद्‌भट्ट विद्वान आचार्य सोमदेव जी प्रेरक प्रवचन देते हुए तथा शिविरार्थीगण तन्मयता से ज्ञानामृत पान करते हुए...

१०२ वर्षीय वैदिक विद्वान पं. गंगाराम जी जांगिड, जयपुर के साथ क्रियात्मक योगाभ्यास शिविर के लाभार्थी जांगिड परिवार के शिविरार्थीगण।

गुरुकुल आबू पर्वत का २८वां वार्षिकोत्सव

दिनांक - २६ से २८ मई २०१८

आर्य जगत् के सुविख्यात, मूर्धन्य वैदिक विद्वान, त्यागी-तपस्वी स्वामी धर्मानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित तथा संचालित आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय आबू पर्वत का २८वां वार्षिकोत्सव दिनांक २६ से २८ मई २०१० तक हर्षोल्लासपूर्वक गुरुकुल परिसर में आयोजित किया जा रहा है। समस्त धर्मनिष्ठजन अधिक से अधिक संख्या में पधारकर धर्म लाभ प्राप्त करें।

अपने आगमन की सूचना एवं विस्तृत जानकारी हेतु सम्पर्क
९४१४५८९५१०, ८००५९४०९४३, ८७६४२१८८८१

आर्यवीर दल मध्यप्रदेश एवं विदर्भ का प्रांतीय प्रशिक्षण शिविर

दिनांक ५ से १३ मई २०१८, पंजीयन शुल्क २५०/- रुपए

स्थान- श्री रामलीला प्रांगण, विदिशा (म.प्र.), ९४२५१६२८५०, ७०००१८३०६१

सार्वदेशिक आर्यवीर दल के तत्वावधान में **शक्ति संचय, संस्कृति रक्षा, समाज सेवा, व्यक्तित्व विकास एवं चरित्र निर्माण** अर्थात् युवा वर्ग के सर्वांगीण विकास हेतु ९ दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन ऊपर वर्णित तिथियों एवं स्थान पर **आर्यवीर वर्ग १४ से १७ वर्ष** आयु वर्ग के बालकों के लिए तथा **शाखानायक वर्ग १८ से २५ वर्ष** आयु वर्ग के युवाओं हेतु आयोजित किया जा रहा है। शिविरार्थियों के लिए आवश्यक नियम तथा निर्देशों हेतु सम्पर्क करें।

रामकिशोर कासदे, शिविराध्यक्ष, चलभाष - ९४२५०१४७४९, **दिनेश वाजपेयी, प्रान्तीय संचालक,** चलभाष - ९४२५१६२८५०

प्राणी मात्र के हितकारी वैदिक धर्म का सजग प्रहरी

वैदिक संसार

आरएनआई-एमपीएचआईएन २०१२/४५०६९
डाक पंजीयन-एमपी/आईसीडी/१४०५/२०१५-१७
वर्ष-७, अंक-६
अवधि-मासिक, भाषा-हिन्दी
प्रकाशन आंग्ल दिनांक : २५ अप्रैल, २०१८
आर्ष तिथि-वैशाख मास, शुक्ल पक्ष, दशमी
सृष्टि संवत्-१,९७,२९,४९, ११९
शक संवत्- १९३९
विक्रम संवत्- २०७४, दयानन्दाब्द-१९४

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक
सुखदेव शर्मा, इन्दौर- ०९४२५०६९४९१
(सायं ६ बजे से प्रातः ८ बजे तक मौन काल)

सम्पादक
गजेश शास्त्री, इंदौर (म.प्र.)

आवरण एवं शब्द संयोजन
लक्ष्य ग्राफिक्स - ९३०१४३३२११

प्रकाशन स्थल एवं पत्र व्यवहार का पता
१२/३, संविद नगर, इंदौर-१८, मध्यप्रदेश

वैदिक संसार का आर्थिक आधार

संरक्षक (१५ वर्ष)	२५०००/-
आजीवन सहयोग (१५ वर्ष)	२१००/-
त्रैवार्षिक सहयोग	६००/-
वार्षिक सहयोग	२५०/-
एक प्रति	२५/-

अन्य सहयोग-स्वैच्छानुसार
बैंक खाता धारक - वैदिक संसार
भारतीय स्टेट बैंक, शाखा-ओल्ड पलासिया, इन्दौर
करंट खाता क्र. ३२८५९५९२४७९
आईएफएस कोड-एसबीआईएन-०००३४३२

अध्यात्म के विषय में व्याप्त अन्धकार को दूर करने एवं वेदोक्त ज्ञान के प्रकाश को प्रकाशमान करने में सहायक ज्योति पुंज-वैदिक संसार

अनुक्रमणिका

विषय	शब्द संग्रहकर्ता	पृष्ठ.क्र.
वेद मन्त्र-भावार्थ	वैदिक संसार	०४
महत्वपूर्ण पर्व, दिवस एवं जयन्ति-पुण्यतिथि	श्री मोहन कृति आर्ष पत्रकम्	०४
भारत का सरकारी संवत्/केलेण्डर कौन सा?	इन्द्रदेव गुलाटी	०४
वैदिक संसार के उद्देश्य	वैदिक संसार	०५
मेरे अविस्मरणीय पांच दिवस एवं क्रियात्मक..	सम्पादकीय	०५
हमारी महान् विभूतियां- सन्त कबीर	शिवनारायण उपाध्याय	११
- ... देवी अहिल्याबाई	डोंगरलाल पुरुषार्थी	१३
...वैदिक मन्त्र की व्याख्या-विविध विज्ञान	बाबूलाल जोशी	१५
दैनिक जीवन में अग्निहोत्र	डॉ. धर्मेन्द्र कुमार शास्त्री	१५
मुस्लिम समस्या का निदान- कुछ सूत्र	रमेशचन्द्र चौहान	१६
यज्ञैश्वर्यम्	देवनारायण भारद्वाज	१७
हे शिव! मम जीवन शिव कर दे	स्वामी विवेकानन्द सरस्वती	१७
...और ये अगरबत्तियां	ओमप्रकाश आर्य	१९
आदि मानव का उत्पत्ति स्थान और महर्षि...	जगदीशप्रसाद आर्य	२०
सत्यार्थ प्रकाश में मनुष्यों की उत्पत्ति और...	खुशहालचन्द्र आर्य	२३
वसु बनो	नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'	२४
कलि स्यानो भवति-कलयुग का प्रभाव	मंगलसिंह अनाकर	२५
हम अन्धविश्वासी लोगों के विज्ञापन नहीं...	आचार्य रामगोपाल सैनी	२७
अध्यात्मिक जिज्ञासा-समाधान	आचार्य सोमदेव आर्य	२९
देश का आठवां राज्य महाराष्ट्र	इन्द्रदेव गुलाटी	३०
महर्षि दयानन्द जी द्वारा स्थापित आर्य समाज..	पं. उम्मेदसिंह विशारद	३१
उपकरण	ओमप्रकाश बजाज	३१
हमारी चार माताएं है	प्रो. रामसिंह 'रमदा'	३२
प्रेरक पत्र सन्देश	आर्य मोहनलाल दशौरा	३३
पाखण्डी बाबाओं से सावधान!	नरसिंह सोलंकी	३४
वैदिक धर्म संस्कृति प्रचार-प्रसार के इच्छुक..	वैदिक संसार	३५
प्री-वेडिंग अर्थात् भारतीय संस्कृति पर प्रहार..	विजयसिंह सिसौदिया	३५
व्यसन मुक्ति	शिवकुमार	३६
प्रस्तावित एवं सम्पन्न गतिविधियां	संकलित	३७
...आप महानुभावों का आर्थिक सहयोग	वैदिक संसार	३९
शोक-सूचना	अग्निमित्र शास्त्री	४२

वेद मन्त्र एवं भावार्थ

ओ३म् इन्द्रं वो विश्वतस्परि हवामहे जनेभ्यः। अस्माकमस्तु केवलः।। ऋ. १.७.१०

भावार्थ- ईश्वर इस मन्त्र में सब मनुष्यों के हित के लिए उपदेश करता है- हे मनुष्यो! तुम को अत्यन्त उचित है कि मुझे छोड़कर उपासना करने योग्य किसी दूसरे देव को कभी मत मानों, क्योंकि एक मुझको छोड़कर कोई दूसरा ईश्वर नहीं है। जब वेद में ऐसा उपदेश है जो मनुष्य अनेक ईश्वर वा उसके अवतार मानता है, वह सबसे बड़ा मूढ़ है।

श्री मोहन कृति आर्ष पत्रकम् अनुसार आर्यावर्त्त के माह मई २०१८ के महत्वपूर्ण पर्व एवं दिवस

भारत के एकमात्र वैदिक पंचांग से

११ गते	शुक्र मास	१९४० शक स.	वैशाख कृष्ण प्रतिपदा २०७५	१ मई	विश्व श्रमिक दिवस
१३ गते	शुक्र मास	१९४० शक स.	वैशाख कृष्ण तृतीया २०७५	३ मई	कृष्णा मेनन जयन्ति एवं पुण्यतिथि
१५ गते	शुक्र मास	१९४० शक स.	वैशाख कृष्ण पंचमी २०७५	५ मई	उत्तराषाढ़-१५:०१, गुरु अमरदास जयन्ति
१७ गते	शुक्र मास	१९४० शक स.	वैशाख कृष्ण सप्तमी २०७५	७ मई	रवीन्द्रनाथ टैगोर जयन्ति
१८ गते	शुक्र मास	१९४० शक स.	वैशाख कृष्ण अष्टमी २०७५	८ मई	पंचक प्रारम्भ- ०५:५७, विश्व रेडक्रॉस दिवस
१९ गते	शुक्र मास	१९४० शक स.	वैशाख कृष्ण नवमी २०७५	९ मई	गोपालकृष्ण गोखले जयन्ति, महाराणा प्रतापसिंह सिसौदिया ज.
२१ गते	शुक्र मास	१९४० शक स.	वैशाख कृष्ण एकादशी २०७५	११ मई	राष्ट्रीय तकनीकी दिवस
२२ गते	शुक्र मास	१९४० शक स.	वैशाख कृष्ण द्वादशी २०७५	१२ मई	श्रीदेव सुमन जयन्ति, भोगराज पट्टाभि सीतारमैया पुण्यतिथि
२३ गते	शुक्र मास	१९४० शक स.	वैशाख कृष्ण त्रयोदशी २०७५	१३ मई	मदर्स डे (भारतीय सन्दर्भ की मातृ नवमी, श्राद्ध पक्ष की नवमी के रूप में पूर्व से निर्धारित है- ध्यान दें)
२४ गते	शुक्र मास	१९४० शक स.	वैशाख कृष्ण चतुर्दशी २०७५	१४ मई	पंचक समाप्त- ०७:०३
२५ गते	शुक्र मास	१९४० शक स.	वैशाख कृष्ण अमावस्या २०७५	१५ मई	भरणी- २६:४०, सुखदेव जयन्ति
२७ गते	शुक्र मास	१९४० शक स.	ज्येष्ठ शुक्ल द्वितीया २०७५	१७ मई	मृगशिरा-२०:०४
२८ गते	शुक्र मास	१९४० शक स.	ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया २०७५	१८ मई	क्षयतिथि चतुर्थी-२९:२९, बटुकेश्वर दुत्त एवं मैथिली शरण गुप्त पुण्यतिथि
३० गते	शुक्र मास	१९४० शक स.	ज्येष्ठ शुक्ल षष्ठी २०७५	२० मई	पुष्य- २८:०३, सुमित्रानन्द पन्त जयन्ति, विपिन चन्द्रपाल, डॉ. राममनोहर लोहिया पुण्यतिथि
३१ गते	शुक्र मास	१९४० शक स.	ज्येष्ठ शुक्ल सप्तमी २०७५	२१ मई	मिथुन संक्रान्ति- ०७:४५, राजीव गान्धी पुण्यतिथि (सदभावना दिवस)
०१ गते	शुचि मास	१९४० शक स.	ज्येष्ठ शुक्ल अष्टमी २०७५	२२ मई	मघा- २७:४३
०५ गते	शुचि मास	१९४० शक स.	ज्येष्ठ शुक्ल द्वादशी २०७५	२६ मई	चित्रा-०८:५९, कवयित्री महादेवी वर्मा जयन्ति
०७ गते	शुचि मास	१९४० शक स.	ज्येष्ठ शुक्ल चतुर्दशी २०७५	२८ मई	वीर सावरकर जयन्ति
०८ गते	शुचि मास	१९४० शक स.	ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा २०७५	२९ मई	अनुराधा-२३:२८, दास कबीर जयन्ति
०९ गते	शुचि मास	१९४० शक स.	ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा २०७५	३० मई	गुरु अर्जुनदेव शहीदी दिवस
१० गते	शुचि मास	१९४० शक स.	ज्येष्ठ शुक्ल द्वितीया २०७५	३१ मई	अन्तर्राष्ट्रीय तम्बाखू निषेध दिवस, देवी अहिल्याबाई जयन्ति।

नया पंचांग छप चुका है कृपया सम्पर्क करें

किसी भी शंका समाधान एवं पंचांग प्राप्ति हेतु आ. दार्शनेय लोकेश, ग्रेटर नोएडा (उ.प्र.) से मो. ०९४१२३५४०३६ पर सम्पर्क करें।

अन्य दैनन्दिनियों से प्राप्त कुछ विशेष दिवस

०१ मई	गुजरात एवं महाराष्ट्र स्थापना दिवस
०३ मई	समाचार पत्र स्वतन्त्रता दिवस
१४ मई	डॉ. रघुवीर दिवस
१५ मई	रामभक्त केवट जयन्ति
१७ मई	विश्व दूरसंचार दिवस
२२ मई	राजा राममोहन राय जयन्ति
२५ मई	आल्हा जयन्ति
२७ मई	जवाहरलाल नेहरू पुण्यतिथि
२८ मई	महाराणा छत्रसाल जयन्ति

भारत का सरकारी सम्वत्/कैलेण्डर कौन सा है?

देश में नौ तरह के सम्वत् प्रचलित है। शक सम्वत् ७८ ईस्वी में, कुषाण शासक कनिष्क द्वारा स्थापित किया गया। दीर्घकाल तक शकों द्वारा प्रयोग में लाए जाने के कारण शक सम्वत् कहलाया।

भारत सरकार ने सरकारी उद्देश्यों के लिए २२ मार्च १९५७ को राष्ट्रीय पंचाग/सम्वत् /कैलेण्डर को अपनाया। भारती राष्ट्रीय पंचाग/ कैलेण्डर शक सम्वत् पर आधारित है। ७८ईस्वी में शुरु हुए शक सम्वत् का पहला महीना चैत्र का है। ग्रिगेरियन कैलेण्डर और शक सम्वत् की तिथियों में स्थायी रूप से समानता है। शक सम्वत् (सरकारी कैलेण्डर) के अनुसार वर्ष का प्रारम्भ चैत्र प्रथम तिथि को होता है, जो ग्रिगेरियन कैलेण्डर के अनुसार सामान्य वर्षों में २२ मार्च को तथा लीप वर्ष में २१ मार्च को पड़ता है। मुख्य रूप से राष्ट्रीय पंचाग (कैलेण्डर) जिन सरकारी उद्देश्यों के लिए अपनाया गया है, वे निम्न हैं-(१) आकाशवाणी के समाचार प्रसारण, (२) भारत का राज पत्र, (३) भारत सरकार द्वारा कैलेण्डर, (४) भारत सरकार द्वारा जारी सार्वजनिक विज्ञप्तियां आदि। इस कैलेण्डर का १२वां महीना फाल्गुन का होता है। इसके महीनों को कृष्ण पक्ष और शुक्ल पक्ष में नहीं बांटा जाता है। जनता को इस कैलेण्डर को अपनाकर इसे लोकप्रिय बनाना चाहिए। २२ मार्च २०१८ को ०१.०१.१९४० प्रारम्भ हुआ है। दोनों कैलेण्डरों में ७८ वर्ष का अन्तर रहा है।

इन्द्रदेव गुलाटी, संस्थापक

मेरे अविस्मरणीय पांच दिवस एवं क्रियात्मक योगाभ्यास

सम्पादकीय

मार्च माह की पत्रिका की प्रकाशन सामग्री का चयन कर मुद्रण हेतु देने उपरान्त कोई विशेष कार्य तथा आयोजन न होने से भ्रमण आदि का मानस बना दिनांक ६ मार्च को प्रातः ६ बजे रणथम्बोर द्रुतगति लोह पथ गामिनी से भरतपुर होते हुए दिल्ली की ओर प्रस्थान किया। इंदौर से जोधपुर जाने वाली उपरोक्त लोह पथ गामिनी से सवाई माधोपुर तक की यात्री तथा **हिण्डौन स्थित वैदिक साहित्य के ख्यातनाम प्रकाशक श्री घुड़मल प्रहलाद कुमार आर्य धर्मार्थ न्यास** के संचालक श्री प्रभाकर जी से भेंट का मानस बना कर कोटा-पटना लोह पथ गामिनी से यात्रा क्रम को आगे बढ़ाया। श्री प्रभाकर जी से २-३ बार चलभाष पर सम्पर्क न हो पाने से हिण्डौन का विचार त्याग भरतपुर रात्रि के लगभग ८ बजे पहुंचा। भरतपुर निवासी श्री लेखराज जी शर्मा से पूर्व वार्तानुसार आप विवाह समारोहों में बयाना तथा भुसावर गए हुए थे, अतः आपका ज्येष्ठ पुत्र राहुल लेने के लिए आ पहुंचा। आपके निवास पर पहुंच कर संध्या की तथा भोजन पश्चात् विश्राम किया।

दिनांक ७ मार्च को ब्रह्म मुहूर्त में निद्रा त्याग प्रातःकालीन मन्त्रों का पाठ किया। नित्य कर्म से निवृत्त हो लगभग सवा घण्टे तक ध्यान-उपासना के पश्चात् प्रातःराश उपरान्त आध्यात्मिक प्रवृत्ति के धनि,यज्ञ के प्रति गहन निष्ठा रखने वाले (जिन्होंने भरतपुर वार्षिकोत्सव अवसर पर स्टील की मेखला तथा ताम्रकुण्ड, सुर्वा आदि लिया था।) श्री लेखराज जी शर्मा की वयोवृद्ध माताश्री, आपकी धर्म पत्नी श्रीमती आभारानी और तीनों सुपुत्रों के यजमानत्व में वृहद देवयज्ञ किया। शीतलाष्टमी (बासोरा) का दिवस होने से आपकी धर्मपत्नी की यज्ञ न करने की शंका का निवारण किया तथा आप लोगों को आर्य विद्वानों को समय-समय पर आमंत्रित कर यज्ञ करवाने तथा प्रशिक्षण लेकर नियमित यज्ञ करने की प्रेरणा प्रदान की। यज्ञ के मध्य आपके साले साहब भी सपरिवार उपस्थित हो गए थे। यज्ञोपरान्त भोजन आदि से निवृत्त हो वैदिक सिद्धान्तों पर प्रकाश डालते हुए वेदानुकूल जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा आप लोगों को दी। श्री लेखराज जी से वैदिक संसार की संरक्षक सदस्यता ग्रहण कर सहयोग का अनुरोध किया, जिसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार किया आप पूर्व से आजीवन सदस्य थे। सायंकाल को आर्य व्यक्तित्व के धनी, महर्षि दयानन्द के जुझारू-कर्मठ सैनिक, वैदिक संसार के प्रतिनिधि श्री जगदीश जी आर्य से उनके निवास पर जाकर भेंट की तथा आपकी धर्मपत्नी श्रीमती बबली आर्या ने अत्यन्त स्नेहाभाव से आत्मिक अभिनंदन किया। भोजन का आग्रह किया। मना करने पर जलपान कराया। आपके यहां से लौटकर लगभग सवा घण्टे ध्यान- उपासना किया। पश्चात् भोजन उपरान्त शयन कालीन मन्त्रों का पाठ कर शयन किया।

दिनांक ८ मार्च को ब्रह्ममुहुर्त में निद्रा त्याग प्रातःकालीन मन्त्रों का ध्यान किया, नित्य कर्म से निवृत्त हो लगभग सवा घण्टे ध्यान- उपासना की, प्रातः राश ग्रहण कर लगभग आठ बजे आगरा हेतु प्रस्थान किया। श्री लेखराज जी स्वयं अपने निजी वाहन से बस स्टैण्ड लेकर आए तथा बस में बैठने के पश्चात् लौटे। पूर्व वार्तानुसार भारतीय थल सेना से सेवानिवृत्त मेजर श्री ओमप्रकाश जी शर्मा ग्राम हनुमान (फतेहाबाद) वालों के सुपुत्र श्री प्रदीप कुमार शर्मा आगरा में शमशाबाद मार्ग पर भोला डेयरी के समीप विभुव विहार में निवास करते हैं के निवास पर पहुंचा। मुख्य मार्ग पर लेने के लिए शर्माजी स्वयं आए आत्मीय अभिनंदन किया और हठपूर्वक रिक्शा वाले को स्वयं ने भुगतान किया। आपके निवास पर सर्वप्रथम शर्मा जी के साथ दैनिक देवयज्ञ किया।

यज्ञ पश्चात् भोजन ग्रहण किया। आपका, आपके सुपुत्र एवं उनके परिवारजनों का व्यवहार अत्यन्त मृदु, शिष्ट, संस्कारों से युक्त शालीन था। श्री शर्माजी की वैदिक धर्म के प्रति गहन निष्ठा है। वैदिक सिद्धान्त आपको विरासत में प्राप्त हुए हैं। आपकी धर्मपत्नी का देहान्त हो चुका है। आपके सुपुत्रों ने अपनी माताजी की स्मृति में पांच लाख की स्थिर निधि से वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार हेतु एक न्यास की परिकल्पना अपने पिता श्री की प्रेरणा से बनाई हुई है। गत वर्ष २०१७ के सितम्बर माह में आपके परिवार द्वारा अपने पैतृक ग्राम हनुमान जहां आपकी कृषि भूमि भी है पर **त्रिदिवसीय वैदिक यज्ञ सत्संग का भव्य आयोजन**

वैदिक संसार के उद्देश्य

- महान् योगी, संन्यासी, महर्षि, अखण्ड ब्रह्मचारी, वेद प्रतिष्ठापक, तत्वज्ञानी, युगदृष्टा, स्व राष्ट्रप्रेमी, स्वराज्य के प्रथम उद्घोषक, नवजागरण के सूत्रधार, शोषित-पीड़ित वर्ग एवं महिला उद्धारक, समाज सुधारक, खण्डन-मण्डन के प्रणेता, अन्धविश्वास नाशक, पाखण्ड खण्डनी ध्वजा वाहक, आर्य समाज संस्थापक, अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश एवं वेदानुकूल सद्साहित्य के रचयिता, दयालु, दिव्य, अमर बलिदानी दयानन्द के समस्त मानव जाति पर किए गए उपकारार्थ कार्यों को गतिमान बनाए रखने हेतु प्रयत्न करना।
- वेदों की महत्ता को पुनर्स्थापित करने हेतु वैदिक सिद्धान्तों, ऋषि -मुनियों एवं ऋषि दयानन्द प्रणीत सन्देशों को प्रकाशित करना।
- आमजन में व्याप्त अज्ञानता, धर्मान्धता, अन्धविश्वास, पाखण्ड, कुरीतियों के विरुद्ध जन जागरण कर उन्मूलन हेतु प्रयास करना।
- आर्य (श्रेष्ठ) विद्वान् महानुभावों के मन्तव्यों, सन्देशों का प्रचार-प्रसार कर प्रतिजन को उपलब्ध करवाना।
- आवश्यक सूचनाओं, गतिविधियों, समाचारों को प्रतिजन तक पहुंचाने का प्रयास करना। ●

आर्य जगत् के अनेक उद्‌भट विद्वानों की गरिमामयी उपस्थिति में किया गया था। श्री शर्माजी की स्वाध्याय की प्रति गहन रुचि है। **प्रेरक वाक्यों और प्रसंगों का आपका अनूठा संकलन है।** आपसे वैदिक सिद्धान्तों पर विस्तृत वार्ता हुई। वार्ता के मध्य **आर्य समाज कमलानगर (आगरा) के पुरोहित, आर्य जगत् के युवा विद्वान-साहित्यकार, वैदिक ज्ञान-विज्ञान संस्थान आगरा के संस्थापक एवं संचालक आदरणीय विश्वेन्द्रार्य जी** भी पूर्व सूचानुसार आ पहुंचे। आपसे भी संक्षिप्त वार्ता हुई। आपने नवीन प्रकाशित **'पंच महायज्ञ'** पुस्तक भेंट की। पश्चात् हाथरस का मानस बना, श्री ओमप्रकाश जी से विदा ली। आपने अपनी पुत्रवधू के हाथों हम दोनों महानुभावों को आतिथ्य भेंट प्रदान कर अतिथि यज्ञ सम्पूर्ण किया। श्री विश्वेन्द्रार्य आर्य जी ने अपनी सहृदयता का परिचय देते हुए आगरा के दक्षिण छोर से उत्तर के छोर पर हाथरस जाने हेतु निर्धारित बस स्थानक वाटर वर्क्स लगभग २० किलोमीटर की दूरी पर अपनी मोटर साईकिल से पहुंचाया। जबकि आपको उसी क्षेत्र में जहां से हम लोग चले एक कार्यक्रम को सम्पन्न करवाना था किन्तु आप मना करने के उपरान्त भी छोड़ने आए और सिद्ध किया कि **आर्य नाम से नहीं कर्म और व्यवहार से विशिष्ट पहचान रखते हैं।** आगरा से यात्री वाहन द्वारा हाथरस पहुंचा। हाथरस में किसी भी आर्य महानुभाव से तो परिचय नहीं था। विशेष रूप से अपनी छोटी बहन की सुपुत्री श्रीमती पीनल शर्मा जो हाथरस निवासी श्री अमित कुमार शर्मा को ब्याही गई है से भेंट करने उसके कुशल क्षेम जानने की इच्छा से प्रथम बार उसके ससुराल पहुंचा। भानजी पीनल तथा उसकी सासू माँ से परस्पर पारिवारिक कुशलक्षेम आदि वार्ताएं हुई। वार्ता से ज्ञात हुआ कि अलीगढ़ निवासी जयनारायण जी शर्मा गत कई दिनों से अस्वस्थ हैं। **उल्लेखनीय है कि जयनारायण जी शर्मा वैदिक सिद्धांतों के निष्ठावान सिपाही तथा वैदिक आश्रम सिविल लाईन्स के सक्रिय पुरोधा होने के साथ-साथ अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा के भी समर्पित महानुभाव रहे हैं। अलीगढ़ में आर्य समाज की स्थापना में आपके पिता श्री शिवचरण जी शर्मा का अहम योगदान रहा है आपको वैदिक धर्म सिद्धान्त विरासत में प्राप्त हुए हैं**, आपने अपने पिता के कन्धे से कन्धा मिलाकर आर्य समाज तथा जांगिड ब्राह्मण समाज को जीवन पर्यन्त अपनी सेवाएं दी हैं। जयनारायण जी से भेंट हुई वर्षों बीत चुके, अत: श्री जयनारायण जी से भेंट का मानस बना हाथरस से प्रस्थान को उद्यत हुआ तो भानजी और उनकी सासू माँ ने भोजन पश्चात् प्रस्थान का आग्रह किया। सायंकाल का समय शेष होने से समय का सदुपयोग करते हुए मनुष्य जीवन और ईश्वर स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए उनका ध्यान आकृष्ट किया। सायंकाल लगभग सवा घण्टा ध्यान-उपासना पश्चात् भोजन ग्रहण कर अलीगढ़ हेतु प्रस्थान किया। अलीगढ़ में सासनी गेट पर बस से उतरा वहां श्री जयनारायण जी के सुपुत्र श्री शैलेन्द्र जी शर्मा लेने के लिए आए।

आपके निवास पहुंच कर सामान्य कुशल क्षेम आदिवार्ता उपरान्त शयनकाल हो जाने से शयन मन्त्रों का पाठ कर शयन किया। दिनांक ९ मार्च को ब्रह्म मुहूर्त में निद्रा त्याग प्रात:कालीन मन्त्रों का स्मरण किया। नित्यकर्म से निवृत्त हो लगभग सवा घण्टे ध्यान-उपासना की। देवयज्ञ करने हेतु जयनारायण जी से आग्रह किया, स्वास्थ्य समस्या के कारण उन्होंने असमर्थता प्रकट की तथा कहा कि मेरी धर्म पत्नी प्रति सप्ताह सोमवार के दिवस यज्ञ करती हैं, वे और मेरा सुपुत्र तथा आप मिलकर यज्ञ कर लेवें। आपके सुपुत्र बच्चों को विद्यालय छोड़ने की व्यवस्था में व्यस्त होने से रिक्त समय था, अत: अलीगढ़ निवासी आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान- साहित्यकार श्री देवनारायण जी भारद्वाज को दूरभाष पर सम्पर्क किया। आपसे ज्ञात हुआ कि वैदिक आश्रम सिविल लाईन्स अलीगढ़ वार्षिकोत्सव आज से प्रारम्भ हो रहा है। आपने आयोजन में पधारने का आग्रह किया। श्री जयनारायण जी शर्मा की धर्मपत्नी तथा आपके सुपुत्र के साथ देवयज्ञ किया। पश्चात् प्रात:राश लेकर जयनारायण जी के साथ वैदिक आश्रम प्रस्थान किया। वैदिक आश्रम में देवयज्ञ पश्चात् पं. उधमसिंह जी संगीताचार्य के भजन हो रहे थे। आपके पश्चात् आचार्य उमेशचन्द्र जी वैदिक आगरा का व्याख्यान हुआ। सत्र समापन पर श्रद्धेय देवनारायण जी भारद्वाज की ओर से पुरुष आर्य समाज की प्रधाना श्रीमती इन्द्ररानी भारद्वाज तथा भारद्वाज जी की धर्म पत्नी तथा स्त्री आर्य समाज की प्रधाना श्रीमती दर्शन भारद्वाज के करकमलों द्वारा वैदिक साहित्य, शाल तथा ११०० रुपए की धनराशि अर्पित कर मेरा आत्मिय अभिनन्दन किया गया। शान्तिपाठ पश्चात् आर्य जगत् के समर्पित, सेवाभावी महानुभाव डॉ. पुष्पेन्द्र जी आर्य के निवास पर भोजन हेतु पहुंचे। मुझे देखते ही डॉक्टर साहब प्रसन्नता से भर उठे लगभग तीन-चार वर्ष पूर्व वैदिक आश्रम के वार्षिकोत्सव पर गया था। उसके बाद अब भेंट हुई थी। भोजन पश्चात् वैदिक आश्रम के मन्त्री जी आग्रहपूर्वक बस स्थानक तक साथ लेकर आए तथा आगरा जाने वाली बस में बैठाया। अलीगढ़ से प्रस्थान कर श्री दयानन्द जी शर्मा (दक्षिण अफ्रीका वाले) मूल-निवासी मोदी नगर (उ.प्र.) के समधी श्री सूरजप्रकाश जी शर्मा आगरा वालों के यहां पहुंचा। पूर्व वार्तानुसार श्री दयानन्द जी सपत्नीक यहां आए हुए थे। आपके यहां पहुंचने पर आपके यहां श्री निरंजन प्रसाद जी शर्मा निवासी मथुरा जांगिड ब्राह्मण समाजसेवी से भी भेंट हुई। सामान्य चर्चाओं उपरान्त संध्याकाल होने से सामूहिक ब्रह्मयज्ञ मन्त्रों का पाठ किया गया, भोजन आदि उपरान्त दयाननन्दजी से गहन वार्ता हुई। पश्चात् शयनकालीन मन्त्रों का पाठ कर शयन किया। दिनांक १० मार्च को श्री सूरजप्रकाश जी शर्मा व आपकी धर्म पत्नी के मुख्य यजमानत्व, आपकी पुत्रवधु व आपके सुपौत्र जिसका अभी नामकरण नहीं हुआ है तथा श्री दयाननन्द जी शर्मा सपत्नीक व श्री विश्वदेव जी रावत (आगरा) के यजमानत्व में वृहद देवयज्ञ किया गया। सम्बन्धित परिवारजनों को यज्ञ की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए यज्ञ करने की प्रेरणा दी तथा विशेष रूप से नवजात शिशु की माता को ऋग्वेद के ईश्वर विषयक चयनित ३६५ मन्त्रों की पुस्तक **'ऋग्वेद से प्रेरणा'** भेंट कर स्वाध्याय की प्रेरणा दी। प्रात:राश पश्चात् ग्वालियर के

लिए प्रस्थान किया।

मेरे परिवारिक घनिष्ठ मित्र श्री मुनिदेव जी शर्मा जी की माताजी का विगत दिनों निधन हो गया था। उस समय उड़ीसा-टंकारा आदि आयोजनों की व्यस्तता के कारण मैं शोक संवेदना व्यक्त करने नहीं जा पाया था। इस कारण ग्वालियर जाने का मुख्य प्रयोजन मुनिदेव जी के निवास पर परिजनों के मध्य जाना था। रेलवे स्टेशन के समीप ही तानसेन नगर में मेरे घनिष्ठ मित्र श्री सोहनलाल जी शर्मा जो आर्य समाजी तो नहीं हैं, किन्तु उनका व्यक्तित्व (गुण-कर्म-स्वभाव) पूर्णरूपेण आर्य है और सोहनलाल जी ही नहीं आपका पूरा परिवार आपकी धर्म पत्नी श्रीमती सूरजदेवी शर्मा, आपका बड़ा बेटा दीपक शर्मा जो कि भोपाल स्थित भारत हैवी इलेक्ट्रिकल लि. में पदस्थ है तथा छोटा बेटा राजेश जो ग्वालियर स्थित कैडबरी इकाई में पदस्थ है दोनों पुत्र वधुएं बच्चे आदि **सभी स्नेहायुक्त आत्मीय सम्मान देते हैं, आर्यत्व के धनी हैं।**

मैं जब भी ग्वालियर अथवा भोपाल जाता हूं, आपके यहीं मेरे भोजन-विश्राम की व्यवस्था होती है। ग्वालियर पहुंच कर आपके निवास पर पहुंचा भाभीजी के हाथ की गर्मा-गर्म रोटियां खाईं। परस्पर वार्ताएं की तथा **आप लोगों से अनुरोध किया कि आप लोग आगामी २५ मार्च से आर्यवन रोजड़ के क्रियात्मक योगाभ्यास शिविर में भाग लें। आप लोगों ने मेरे अनुरोध को सहर्ष स्वीकार कर पंजीयन का भार मुझे ही सौंपा।** इसके पश्चात् मुनिदेव जी भी पूर्व सूचनानुसार वहां पहुंच गए, उनके साथ उनके निवास पर गए, उनके बड़े भाई साहब तथा अन्य परिजनों से भेंट की। पश्चात् संध्या के मन्त्रों का पाठ किया और शिवपुरी के लिए प्रस्थान हेतु घर से श्री मुनिदेवजी के साथ चल दिये। रेलवे स्टेशन पर श्री सोहनलाल जी शर्मा, श्री बी. के. शर्मा तथा श्री गोविन्द जी शर्मा मिले आप सभी को जांगिड ब्राह्मण प्रदेश सभा मध्यप्रदेश की नवगठित कार्यकारिणी के शपथ ग्रहण आयोजन में देवास जाना था।

भिण्ड-इंदौर इण्टर सिटी लोह पथ गामिनी से हम सभी ने ग्वालियर से प्रस्थान किया। शिवपुरी आने तक हम लोगों के मध्य खूब पारिवारिक-सामाजिक वार्ता हुई। शिवपुरी रेलवे स्टेशन पर शिवपुरी के पुलिस अनुविभागीय अधिकारी श्री गुरुदत्त जी शर्मा अपनी धर्मपत्नी श्रीमती अरुणा शर्मा के साथ लेने के लिए आ पहुंचे थे। आप मूलतः ग्वालियर के श्री ब्रह्मदत्त जी शर्मा के सुपुत्र हैं, आपके ग्वालियर से सभी बन्धुओं से पारिवारिक सम्बन्ध हैं। आपके साथ आपके निवास पर आ गया। आपके पिताजी से भेंट-कुशलक्षेम पश्चात् भोजन तथा क्षणिक वार्ता उपरान्त शयनकालीन मन्त्रों का पाठ पश्चात् शयन किया।

दिनांक ११ मार्च को ब्रह्म मुहुर्त में जागरण पश्चात् प्रातःकालीन मन्त्रों का उच्चारण-मनन पश्चात् नित्यकर्म से निवृत्त हो लगभग सवा घण्टा ध्यान- उपासना की। आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संग में जाने के पूर्व निर्धारित कार्यक्रम से पूर्व शर्मा जी के निवास पर बरामदे में प्रातःकाल के उदित होते सूर्खलाल रंग की रश्मियों की ओर पूर्वाभिमुख होकर शर्मा दम्पत्ति के मुख्य यजमानत्व में प्रथम ब्रह्मयज्ञ के मन्त्रों का पाठ पश्चात् वृहद देवयज्ञ से हम सभी का मन प्रसन्नचित्त हो प्रफुल्लित हो गया। प्रातःराश ग्रहण कर शर्मा दम्पत्ति के साथ आर्य समाज शिवपुरी पहुंचे।

आर्य समाज शिवपुरी जाने का यह मेरा प्रथम अवसर था। आर्य समाज के विशाल भवन के मध्य सत्संग सभागार का दृश्य अत्यन्त मनोहारी था। ध्वनी विस्तारक यन्त्र तथा प्रकाश व्यवस्था से सुसज्जित यज्ञ ब्रह्म के मन्त्रनुमा आसन पर यज्ञ ब्रह्म के रूप में मध्यभारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री इन्द्रप्रकाश जी गान्धी के सुपुत्र श्री समीर गांधी जी विराजमान थे। यज्ञ ब्रह्म के आसन के ठीक सामने कतारबद्ध पांच यज्ञ वेदियों की सभी दिशाओं में यजमान विराजित थे। ईश्वर स्तुति प्रार्थना, उपासना, मत्रों का पाठ चल रहा था। **किसी गुरुकुल में पढ़े सुयोग्य आचार्य की भांति समीर जी ने देवयज्ञ सम्पन्न करवाया तथा मध्य में अनेक मन्त्रों की व्याख्या मर्मस्पर्शी शब्दों में की। मन्त्रों का वाचन अत्यन्त शान्त-सहज आल्हादित रूप से किया जाना अत्यन्त प्रभावशाली रहा।**

वाट्सएप के माध्यम से मेरी उपस्थिति विषयक पूर्व दिवस सदस्यों को मनोज जी अग्रवाल द्वारा सूचित किया गया था। देवयज्ञ पश्चात् मेरे उपस्थित होने से सदस्यों को अवगत करवाया गया। मेरे परिचय का दायित्व गुरुदत्त जी शर्मा को सौंपा गया। पश्चात् पदाधिकारियों द्वारा आत्मिय अभिनन्दन कर उद्बोधन का आग्रह किया गया। मेरे द्वारा मेरी स्थिति को स्पष्ट करते हुए कहा गया कि प्रथम तो मैं कोई आचार्य अथवा विद्वान नहीं हूं एक सामान्य व्यक्ति होकर मात्र सेवक के रूप में अपनी सेवाएं दे रहा हूं। अतः प्रवचन आदि की मेरी योग्यता नहीं है, मैं तो इतना भर निवेदन करता हूं कि **परमपिता परमात्मा कल्याणकारी है हमें मनुष्य योनि का विलक्षण अवसर दिया है तथा हमारा परमपिता होने से उसने हमारे कल्याण के लिए वेद ज्ञान का प्रबन्ध किया है, हम परमपिता परमात्मा की वाणी वेदज्ञान से जुड़ें हमारा जीवन वेदानुकूल बनाएं और अपनी तथा अपने परिवार की उन्नति का मार्ग प्रशस्त करें।** आर्य समाज की ओर से सम्मान निधि के रूप में २१०० रुपए की भेंट दी गई।

ग्वालियर निवासी श्री बालकृष्ण जी गुप्त (सेवानिवृत्त उप जिलाधीश) तथा श्री हरिनिवास जी गुप्त के भाई अशोक जी गुप्त एवं कु. सिद्धि सूद इन्दौर के पिता श्री लखवीर सिंह जी सूद व अन्य आर्यजनों से वार्ता हुई। सर्वश्री नमन वीरमानी, हनी हरियाणी, हरीश अग्रवाल, आर्य राणा जी, मनोज श्री अग्रवाल, दयाशंकर जी गोयल, रामकुमार जी राठौर, श्री संजय जी शिवहरे ने वैदिक संसार का सदस्यता शुल्क सहयोग किया। श्री मनोज जी अग्रवाल के आग्रह पर उनके निवास पर गया आपके पुत्र आदित्य एवं आपकी धर्मपत्नी से विस्तारपूर्वक वैदिक सिद्धान्तों पर वार्ता हुई। आपकी धर्मपत्नी को उनके पीहर मुरैना आर्य समाज का पता दिया तथा मुरैना वाले श्री श्रीवास्तव जी का चलभाष देकर उनके सम्पर्क

करवाया। श्री मनोज जी ने भोजन का आग्रह किया, किन्तु भोजन शर्मा के बंगले पर तैयार था। अत: मनोज जी ने वहां पर छोड़ दिया। दोपहर को पं. योगेश जी उपाध्याय उनके साथ जाकर कुछ आर्यजनों से भेंट की तथा उनके द्वारा संचालित वैदिक संस्थान का अवलोकन किया।

सायंकालीन संध्या- भोजन उपरान्त यात्री वाहन से इंदौर के लिए प्रस्थान किया। श्री गुरुदत्त जी शर्मा द्वारा भिण्ड के स्पेशल पेठे के साथ २१००/- सम्मान राशि देकर पूर्ण आत्मियता के साथ विदा किया। मेरा सम्पूर्ण जीवन यात्राओं से परिपूर्ण रहा है और ईश्वर की महती कृपा से यात्राएं ही नहीं सम्पूर्ण जीवन अविस्मरणीय, रोमांचकारी तथा अद्भुत अभिभूत करने वाला हुआ है तथा हो रहा है। उसी में ये पांच दिवस और जुड़ गए इसके लिए **परमपिता परमात्मा का तो धन्यवाद है ही उन सभी आर्यजनों का भी आभार, धन्यवाद है, जिन्होंने आत्मिक स्नेह दिया तथा वैदिक संसार के प्रकाशन यज्ञ निमित्त अपनी अर्थ आहुति प्रदान की, विशेष रूप से आभारी है, श्री लेखराज जी शर्मा के जिन्होंने वैदिक संसार की संरक्षक सदस्यता (२५०००) स्वीकार की।**

क्रियात्मक योगाभ्यास : काश! सम्पूर्ण संसार वानप्रस्थ साधक आश्रम परिसर सा हो जाए?

फरवरी २०१८ के गत अंक में क्रियात्मक योगाभ्यास शिविर २५ मार्च से १ अप्रैल २०१८ तक पृष्ठ संख्या ३७ पर प्रकाशित किया गया था तथा विश्व स्वास्थ्य दिवस ७ अप्रैल के उपलक्ष्य में मुखपृष्ठ पर महर्षि पतंजलि के अष्टांग सूत्रों को प्रदर्शित करते हुए क्रियात्मक योगाभ्यास पर पाठकों का ध्यान दिलावाया गया था।

क्रियात्मक योगाभ्यास का नाम पढ़ने अथवा सुनने पर जो सामान्यजन है जिनकी वैदिक शिक्षा-दीक्षा नहीं हुई है अथवा जिन्हें वैदिक धर्म सिद्धान्तों का ज्ञान नहीं है, जिन्होंने महर्षि पतंजलि प्रणित योग दर्शन को ठीक-ठीक नहीं जाना। उनका ध्यान ही नहीं जाता और न वे समझने का प्रयास करते हैं कि **आखिर ये क्रियात्मक योगाभ्यास है क्या? मनुष्य जीवन में इसका क्या महत्व है? क्रियात्मक योगाभ्यास अर्थात् मनुष्य निर्माण प्रक्रिया के माध्यम से सम्पूर्ण दु:खों की निवृत्ति और पूर्ण आनन्द की प्राप्ति का प्रयास।** प्रश्न उठता है कि हम प्रतिदिन अपने आवास, कार्य स्थलों पर झाड़ू लगाते हैं, साफ-सफाई करते हैं, प्रतिदिन प्रात: सर्वप्रथम शौच करते हैं, दातुन-कुल्ला कर मुंह साफ करते हैं, स्नान करते हैं! क्या कभी हमने बुद्धि, मन, शरीर, प्राण, आत्मा की शुद्धि या परिपुष्टता के लिए कोई प्रयास किया है? हम प्रत्येक क्षण पाँचों ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से किसी न किसी प्रकार का ज्ञान तथा विचार ग्रहण करते रहते हैं, **क्या ग्रहण किया गया सभी ज्ञान अथवा विचार हमारे लिए उपयोगी या हितकर होता है?** इस प्रश्न पर प्रत्येक व्यक्ति गहनता से विचार करें तो उत्तर होगा नहीं। और वर्तमान के सांस्कृतिक प्रदूषण के वातावरण में तो श्रेय मार्ग से विमुख हो प्रेय मार्ग जो कि हम जीवात्माओं को हमारे मुख्य लक्ष्य से विमुखकर पतन की ओर ले जाता है। हमारे मन, बुद्धि, प्रत्येक क्षण उपयोगी- अनुपयोगी प्रत्येक प्रकार के ज्ञान को ग्रहण कर विचारों का निर्माण कर रहे हैं, वहीं विचार कर्म का आधार बनते हैं। प्रश्न उठता है **क्या मन-बुद्धि की भी प्रतिदिन शुद्धि होना चाहिए या नहीं? मन की प्रतिदिन शुद्धि ध्यान-उपासना तथा आत्मनिरीक्षण से तथा बुद्धि की शुद्धि सत् साहित्य के स्वाध्याय से की जा सकती है। ध्यान-उपासना, आत्म निरीक्षण वा स्वाध्याय का वातावरण न तो भोगवादी स्कूली शिक्षा में है न आध्यात्म के क्षेत्र में, और न जन सामान्य में,** आज तो वातावरण इतना दूषित हो चुका है कि इनकी बातें करने वाला उपहास की दृष्टि से देखा जाता है। जबकि उसे आदर्श रूप में लिया जाना चाहिए। प्रश्न उठता है ऐसे वातावरण में क्या करें? **इसका समाधान है क्रियात्मक योगाभ्यास शिविर। क्रियात्मक योगाभ्यास शिविर के माध्यम से व्यक्ति ईश्वर, जीवात्मा और प्रकृति के वास्तविक स्वरूप को जान सकता है तथा ध्यान-उपासना, आसन-प्राणायाम, व्यायाम, सत् साहित्य के स्वाध्याय, मौन व्रत आदि के महत्व को समझ सकता है। इसका प्रशिक्षण ले सकता है तथा प्रत्येक छह मास में अथवा वर्ष में एक बार उपस्थित होकर दृढ़ता प्राप्त कर आध्यात्मिक उन्नति के मार्ग पर अग्रसर हो सकता है।**

शरीर को ब्राह्य स्तर पर शुद्ध करने का कौर्य प्रत्येक व्यक्ति करता है, किन्तु शरीर की परिपुष्टता हेतु व्यायाम की ओर उसका ध्यान जब जाता है जब वह रोगी हो जाता है। **जबकि शारीरिक उन्नति के बगैर ना तो मनुष्य की भौतिक उन्नति हो सकती है न आध्यात्मिक उन्नति।** इसी प्रकार प्रत्येक क्षण श्वास-प्रश्वास के माध्यम से हमारा जीवन संचालित हो रहा है, इसका नाम प्राण है, यह रूक जाए तो हमारा प्राणान्त है। यह हमारे जीवन का आधार है। यह एक बार रुका तो फिर समझो रुक ही गया, इसको पुन: चालू करने वाला एक ही मैकेनिक है जिसका नाम ईश्वर है। इनके व्यायाम की ओर सामान्यजन में प्राय: शिथिलता होती है और वायु प्रदूषण के इस घोर दूषित वातावरण में प्राणों का व्यायाम भी प्रतिदिन आवश्यक है। **शारीरिक व्यायाम, आसान-प्राणायाम के महत्व और प्रशिक्षण का वर्तमान शिक्षा प्रणाली में कोई स्थान नहीं है, ना सामान्यजनों में इसके प्रति कोई जागरुकता, जिसका लाभ उठाकर लूटखोर लोग अपनी दुकानें खोल लेते हैं और आधि-व्याधि से ग्रसित लोगों को लूटते रहते हैं। इसका समुचित समाधान अगर कोई है को तो वह है क्रियात्मक योगाभ्यास शिविर।**

क्रियात्मक योगाभ्यास शिविर के माध्यम से आठ दिवस में ईश्वर प्राप्ति अथवा आध्यात्मिक उन्नति हेतु जिज्ञासु शिविरार्थी को महर्षि पतंजलि की प्रणित-अष्टांग सूत्र यम-नियम-आसन-प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान-धारणा समाधि के माध्यम से शुद्ध ज्ञान, कर्म, उपासना का महत्व और कैसे प्राप्त हो। आसान-प्राणायाम का महत्व तथा विशुद्ध प्रक्रिया का प्रशिक्षण, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान का महत्व तथा उसे किस प्रकार क्रिया रूप में कैसे करें। तथा समाधि की मानव जीवन में महत्ता उसका

लाभ अन्यथा हानियां आदि का सूक्ष्मता से परिज्ञान प्रदान किया जाता है।

वैसे तो आत्मा पवित्र है और सदा पवित्र रहता है, किन्तु जीवात्मा की अल्पज्ञता, जन्म-जन्मातरों के कुसंस्कारों का प्रभाव, वैदिक शिक्षा के अभाव के कारण ईश्वर, जीवात्मा, प्रकृति के तत्व ज्ञान का अभाव आदि **प्रत्येक प्रकार के प्रदूषित वातावरण के कारण आत्मा पर अविद्या का अन्धकार छा जाता है जिस कारण वह पंच क्लेशों से ग्रसित हो जाता है। इन क्लेशों को नष्ट करने हेतु अविद्या का नाश करना होता है, अविद्या नष्ट होने से ज्ञान का प्रकाश स्वत: हो जाता है। अविद्या का नाश योग के अष्टांग सूत्रों के पालन से होता है। इन अष्टांग सूत्रों को ठीक से जानना, मानव जीवन में महत्व और उसे जीवन व्यवहार में क्रिया रूप में कैसे करें? का नाम है क्रियात्मक योगाभ्यास शिविर।**

गत वर्ष अप्रैल २०१७ के क्रियात्मक योगाभ्यास शिविर सम्पन्न समाचार में मैंने वानप्रस्थ साधक आश्रम को ' **आत्मिक आरोग्यता** केन्द्र' से परिभाषित किया था तथा यह भी लिखा था कि इन आठ दिनों **में मन की खूब धुलाई हुई, अर्थात् क्रियात्मक योगाभ्यास शिविर मन की सर्विसिंग का भी अवसर कहें तो न तो अतिश्योक्ति होगी न कुछ त्रुटि होगी।**

गत वर्ष दिनांक २ से ९ अप्रैल तक सम्पन्न क्रियात्मक योगाभस शिविर का मेरा प्रथम अनुभव था और **मैंने अनुभूत किया था कि मैंने अपने जीवन में १२ वर्ष पूर्व जानकारी हो जाने पर भी क्रियात्मक योगाभ्यास शिविर में न जाकर अपने जीवन के १२ वर्ष व्यर्थ में खो दिए। उपरोक्त शिविर जीवन में क्रान्तिकारी परिवर्तन लाने वाला सिद्ध हुआ।** इस शिविर में अपने व्यवहार में राग-द्वेष में परिवर्तन का निश्चय किया, व्यवहार काल में आंशिक सफलता की प्राप्ती की! पूर्व में गायत्री मन्त्र का अर्थ भी याद नहीं था, शिविर में निश्चय किया कि अर्थ सहित संध्या कर लगभग एक-एक घण्टा ध्यान-उपासना, प्रातः-सायंकाल दोनों समय करूंगा, व्यवहारकाल में संध्या अर्थ सहित करने में सफल हुआ। ध्यान-उपासना, एकाग्रता में प्रगति हुई, किन्तु कार्याधिकता तथा प्रवास आदि कारणों से नियमितता नहीं रही, कभी-कभी मन्त्र पाठ ही किया और कुछेक बार सन्ध्या छूटी भी। दैनिक अग्निहोत्र का संकल्प लिया। व्यवहारकाल में आंशिक रूप से आपत्तिकाल को छोड़कर सफल रहा। धर्म पत्नी की सहमति से शारीरिक सम्बन्ध समाप्त कर मित्रवत् व्यवहार का व्रत लिया, व्यवहार काल में पूर्णतः सफल रहा। **इस शिविर में स्मृति शेष आचार्य ज्ञानेश्वर जी का विशेष स्नेह, प्रेरणा, आशीर्वाद तथा आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ।**

इस शिविर में स्मृति शेष **आचार्य ज्ञानेश्वर** जी की कमी और उनके द्वारा उच्चारित किया जाने वाला मन्त्र '**ओम इन्द्रं वर्धन्तों अप्तुर** :' तथा इसका काव्यार्थ '**हे प्रभु हम तुमसे वर पावें। सकल विश्व को आर्य बनावें....**' की कमी खलती रही। आचार्य जी में सरलता, सहजता, सभी के प्रति अपनत्व के जो गुण थे, उनका अपना अलग ही स्थान है। परमपिता, परमात्मा की महती कृपा से आचार्य जी जैसी महान, आत्मा आर्य जगत् को प्राप्त हुई और आचार्य जी के जाने से जो रिक्तता उत्पन्न हुई है, वानप्रस्थ साधक आश्रम के भविष्य पर जो प्रश्न खड़ा हुआ है उसे परमपिता परमात्मा ही पूर्ण करेगा।

परमपिता परमात्मा की महती कृपा से आचार्यजी के समकक्ष अनेक प्रतिभाएं आर्य जगत् में विद्यमान है जिनमें स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक व आचार्य समयजीत जी का नाम प्रमुखता से लिया जा सकता है। आचार्य सत्यजीत जी ने वानप्रस्थ साधक आश्रम के संचालन का भार अपने बलशाली कंधों पर लिया है, आचार्य सत्यजीत जी के कार्य की प्रशंसा बहुत कुछ सुन रखी थी। प्रत्यक्ष कभी अवसर उपस्थित नहीं हुआ था। इस शिविर में आचार्य जी की सरलता, सहजता, विनम्रता, कार्यकुशलता, क्रियात्मक योगाभ्यास कक्षा के माध्यम से जो उनके द्वारा प्रशिक्षण देते समय उनके द्वारा जो बातें बताई गई वह एक अनुभूत योगी के अनुभव प्रत्यक्ष अनुभूत हुए। आचार्य जी द्वारा शिविर की व्यवस्था सम्बन्धी कार्यों पर पैनी दृष्टि बनाए रखना, प्रात:राश, भोजन शिविरार्थियों के संग भोजन शाला में ही ग्रहण करना, अपनी झूठी थाली को अपने हाथों सफाई स्थल तक पहुंचाना, देवयज्ञ के समय मंच पर स्थान ग्रहण न कर नीचे ब्रह्मचारियों के साथ आसन पर बैठ जाना आपकी अहंकार शून्यता तथा सादगी का परिचय देता है।

इस शिविर में स्वामी विवेकानन्द जी के प्रवचन, शंका समाधान, स्वामी मुक्तानन्द सरस्वती का उपासना प्रशिक्षण तथा योगदर्शन के गूढ़ रहस्यों पर प्रकाश, आचार्य सत्यजीत जी का क्रियात्मक योगाभ्यास प्रशिक्षण, आचार्य सन्दीप जी द्वारा आत्मनिरीक्षण सम्बन्धी मार्गदर्शन, आचार्य सोमदेव जी के प्रेरक प्रवचन, ब्र. अरुण जी आर्य वीर का आसन-प्राणायाम-व्यायाम प्रशिक्षण तथा सन्ध्या के मन्त्रों के अर्थ का गूढ़ विवेचन तथा श्री चन्द्रेश जी के द्वारा शुद्ध ज्ञान कर्म-उपासना पर मार्गदर्शन हृदय स्पर्शी उपलब्धियों भरा तथा अत्यन्त अद्भुत रहा होकर शिविर को सफलता की ऊंचाइयों पर पहुंचाने वाला रहा। इस शिविर की विशेष उपलब्धी मेरे लिए यह रही कि मेरा जीवन जिस जांगिड परिवार के लिए समर्पित रहा और **मेरे वैदिक सिद्धान्तों से जुड़ने का अहम योगदान का श्रेय जांगिड ब्रह्मण महासभा दिल्ली के सेवा कार्यो जाता है।**

इस परिवार के श्री मोहनलाल जी शर्मा, धरमपुरी (इंदौर) तथा श्री सोहनलाल जी शर्मा, ग्वालियर सपत्निक मेरी प्रेरणा से शिविर में उपस्थित हुए तथा **इस शिविर के समय १०२ वर्षीय वैदिक विद्वान पं. गंगाराम जी जांगिड जयपुर के दर्शन लाभ का सुअवसर भी प्राप्त हुआ।** आपके साथ आपकी सुपुत्री **श्रीमती सुमित्रा ओमप्रकाश शर्मा अहमदाबाद वैदिक संसार की संरक्षक सदस्य** भी शिविरार्थी के रूप में शिविर में उपस्थित हुई। जांगिड परिवार के ही श्री चंद्रप्रकाश जी शर्मा, गान्धीधाम (सपत्निक), श्री शंकरलालजी शर्मा जोधपुर (सपत्निक), श्री हीरालाल जी शर्मा उदयपुर (सपत्निक) तथा श्री घेवरराम जी जांगिड अहमदाबाद को उपस्थित देखकर मन हर्षातिरेक से प्रसन्न हो गया। प्रसन्नता का कारण भी है जिस परिवार की तन-मन-

धन से दीर्घकाल तक सेवा की उस परिवार के कुछ सदस्य जीवन को सफल बनाने वाले इस शिविर में उपस्थित हो तो स्वाभाविक है कि इस शिविर में प्राप्त ज्ञान प्रकाश कुछ तो परिवार में फैलेगा और हमारी की गई समाजसेवा, तपस्या, प्रयास का अधिक ना सही आंशिक ही सही परिणाम तो प्राप्त हुआ। **हो सकता है भविष्य में परमपिता परमात्मा की कृपा से इसके व्यापक परिणाम प्राप्त हो, क्योंकि पुरुषार्थ तो अनवरत् जारी है।**

कुछ पाठकों को मेरा यह दृष्टिकोण संर्किण जातिवादी प्रतीत होता है, किन्तु मेरा उनसे विनम्र निवेदन है कि जरा विचार करें कि क्या अपने परिवार को आर्य बनाए बगैर **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** का लक्ष्य पूर्ण हो पाएगा? और जिस परिवार से संस्कार, सभ्यता पाकर पल्लवित हुए क्या उसके प्रति कोई उत्तरदायित्व नहीं है? और उस संस्था अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा जिसकी स्थापना का मूल उद्देश्य शोषित-पीड़ित शिल्पी वर्ग को महर्षि दयानन्द प्रणित वैदिक सिद्धान्तों अनुसार वैदिक धर्मी बनाने, उसे वास्तविक ज्ञान-विज्ञान का अधिकारी ब्राह्मण बनाने का था। **क्या उन पूर्वजों के सपनों को धूल-धूसरित हो जाने दे? जिस संस्था में पदार्पण के पश्चात् वहां सेवारत वैदिक धर्म को समर्पित महापुरुषों के सम्पर्क में आने से मेरे जीवन में वेद ज्ञान का प्रकाश प्रकाशित हुआ। क्या मैं उस संस्था तथा उन महापुरुषों का ऋणी नहीं हूं? क्या उन महापुरुषों के खून-पसीने से किए गए पुरुषार्थ को व्यर्थ मिट्टी में मिल जाने दें? कृण्वन्तो विश्वमार्यम् से पूर्व स्वमार्यम् उसके पश्चात् परिवार मार्यम् क्या बुरी बात है?** हमारे साथ नागदा जंक्शन, जिला-उज्जैन निवासी श्री भंवरलालजी पांचाल की सुपुत्री कु. गायत्री ने भी इस शिविर में भाग लिया था।

श्री सुमित्रा जी अहमदाबाद और श्री चन्द्रप्रकाश जी गान्धीधाम का जीवन्त सम्पर्क आर्यवन रोजड़ से है। इन दोनों परिवारों का प्रायः रोजड़ आवागमन बना रहता है। इन दोनों परिवारों में वैदिक विद्वानों का पदार्पण होता रहता है। सन्ध्या-अग्निहोत्र दोनों परिवारों के अभिन्न अंग हैं। श्री चन्द्रप्रकाश जी की माताजी श्रीमती गुलाबदेवी आर्या ने अपने जीवन के १८ वसन्त वानप्रस्थी के रूप में वानप्रस्थ साधक आश्रम में व्यतीत किए। आपके पतिदेव श्री भगवानदत्त जी की वेद प्रचार में गहन निष्ठा थी। आप महेन्द्रा कम्पनी की छोटी बस को वेद रथ के रूप में उपयोग कर वेद प्रचार करते थे। जिसे मैंने जांगिड ब्राह्मण महासभा के नासिक अधिवेशन में अप्रैल १९९९ में देखा था।

इस शिविर में पूर्ण मौन का पालन करना अपेक्षित था। मौन का नियम तो पूर्व शिविर में भी था किन्तु इसके महत्व और गम्भीरता से अनभिज्ञता के कारण उतना पालन नहीं किया। इस शिविर में अधिक संख्या में साथी और परिचित होने के उपरान्त भी कक्षाओं और देवयज्ञ को छोड़कर पूर्ण मौन का पालन किया। **देवयज्ञ का सामान साथ लेकर गए थे, परमपिता परमात्मा की कृपा से व्यवस्था ऐसी बनी की दिनांक २५ को आश्रम की यज्ञशाला में यज्ञ किया। शेष दिनों हम सभी ने मिलकर प्रतिदिन प्रातःकाल के सत्र की समाप्ति तथा भोजन से पूर्व देवयज्ञ किया।** दिनांक २८ को आश्रम की यज्ञशाला में बहन सुमित्रा जी ने यजुर्वेद के ३८वें तथा ३९ वें अध्याय के मन्त्रों का वाचन कर आहूतियां प्रदान करवाई। मैंने सपत्निक मुख्य यजमान के रूप में तथा चन्द्रप्रकाश जी की धर्मपत्नी तथा शंकरलालजी जोधपुर की धर्मपत्नी ने सह यजमान के रूप में आहूतियां प्रदान की। **दिनांक ३० को पं. गंगाराम जी जांगिड के ब्रह्मत्व में यजुर्वेद के ४०वें अध्याय तथा अथर्ववेद के प्राण सूक्त के कुछ मन्त्रों का पाठ बहन सुमित्रा जी ने किया।** मैं मेरी धर्म पत्नी ने मुख्य यजमान के रूप में तथा सह यजमान के रूप में श्री सोहनलाल जी शर्मा-ग्वालियर ने अपनी धर्म पत्नी सहित तथा चन्द्रप्रकाश जी ने आहूतियां प्रदान की।

दिनांक २५ को प्रातः ९ बजे से ४ बजे तक पंजीयन प्रक्रिया तथा आवास आवंटन का कार्य सम्पन्न हुआ। सायंकाल भोजन पश्चात् ध्यान कक्ष में आचार्य सन्दीप जी द्वारा शिविर दिनचर्या तथा आवश्यक नियमों से अवगत करवाया गया। दिनांक २६ से प्रतिदिन प्रातः ४ बजे जागरण तथा प्रातःकालीन मन्त्रों का पाठ के साथ शिविर की दिनचर्या प्रारम्भ हुई। प्रातः ५ बजे से ५.४५ तक स्वामी मुक्तानन्द जी द्वारा प्रतिदिन उपासना प्रशिक्षण दिया गया। प्रातःकाल ५.५० से ६.२५ तक व्यायाम, आसन का प्रशिक्षण पुरुष वर्ग को ब्र. अरुण आर्यवीर द्वारा वा महिला वर्ग को वानप्रस्थी जया बहन जी द्वारा प्रतिदिन दिया गया। ६.३० से ७.१५ तक आचार्य सत्यजीत जी द्वारा क्रियात्मक योगभ्यास के सूक्ष्म तथ्यों को गहराई से प्रतिदिन अवगत करवाया गया। ७.२० से ८.१५ तक देवयज्ञ ब्र. विद्याव्रत आर्य के ब्रह्मत्व में प्रतिदिन करवाया गया। पृथक-पृथक दो यज्ञ-वेदियों पर महिला-पुरुष वर्ग से ८-८ शिविरार्थियों को यजमान के रूप में आहूतियां प्रदान करने का अवसर प्राप्त हुआ। देवयज्ञ पश्चात् ब्रह्मचारी जी द्वारा वेदपाठ पुस्तक से कुछ वेद मन्त्रों का पाठ तथा यजुर्वेद के ४०वें अध्याय का प्रतिदिन एक मन्त्र का क्रमशः भावार्थ सहित वेद स्वाध्याय किया व करवाया गया।

यज्ञ पश्चात् वेद प्रवचन दिनांक २६ से २८ तक स्वामी विवेकानन्द जी द्वारा यजुर्वेद के ४०वें अध्याय के स्वाध्याय किए गए मन्त्र को केन्द्र में रखकर दिया गया। शेष दिनों **स्वामी सत्यपति जी द्वारा ईश्वर जीवात्मा प्रकृति सम्बन्ध तथा ईश्वर उपासना विषयक मार्मिक प्रेरक प्रवचन दिया गया। आपने कहा कि मनुष्य जीवन कब सफल होता है? इसी जन्म में ईश्वर की प्राप्ति कर लेते हैं तो मानव जीवन सफल होता है। आपने ईश्वर व जीवात्मा के छह सम्बन्ध बताए तथा ईश्वर के गुण-कर्म-स्वभाव जानने पर बल दिया, अन्यथा ईश्वर की प्राप्ति नहीं हो सकती। ईश्वर ने बार-बार उपदेश दिया है कि तुम मेरी उपासना करो, अन्य किसी की नहीं। ऐसा ईश्वर ने क्यों कहा, जानना चाहिए। ईश्वर उपासना सब व्यवहारों में करना चाहिए। प्रकृति व अन्य की प्रतीती, उपासना नहीं करनी चाहिए।** ८.१५ से ८.४५ तक प्रातः राश (अल्पाहार) दूध आदि प्रतिदिन भिन्न-भिन्न प्रकार से उपलब्ध करवाया गया। ९.३० से १०.१५ तक शुद्ध ज्ञान-कर्म- उपासना कैसे हो? पर केन्द्रित श्री चन्द्रेश जी का व्याख्यान तथा

तमिल भाषियों के लिए पृथक से आचार्य श्रीधर जी द्वारा तमिल भाषा में विषय को प्रतिदिन स्पष्ट किया गया। पूर्व में दो शिविर अथवा उससे अधिक शिविर कर चुके शिविरार्थियों के लिए इसी समय में पृथक कक्षा में '**विवेक-वैराग्य अभ्यास**' विषय पर आचार्य सोमदेव जी अजमेर द्वारा गहन प्रकाश प्रतिदिन विस्तार से डाला गया। १०.३० से ११.३० तक '**योग दर्शन**' का विशद् विवेचन स्वामी मुक्तानन्द जी द्वारा तथा तमिल भाषियों के लिए आचार्य श्रीधर जी द्वारा प्रस्तुत किया गया। इसी समय में '**न्याय दर्शन परिचय**' पृथक कक्षा में वरिष्ठ शिविरार्थियों के लिए प्रतिदिन आचार्य सत्यजीत जी द्वारा करवाया गया।

दोपहर २ से २.४५ तक विवेक वैराग्य श्लोक एवं सन्ध्या के मन्त्रों का अर्थ सहित चिन्तन ब्र. अरुण आर्यवीर जी द्वारा प्रतिदिन प्रस्तुत किया गया। पृथक कथा में वरिष्ठ शिविरार्थियों को कठोपनिषद् का अध्यायन आचार्य सन्दीप जी द्वारा प्रतिदिन करवाया गया। दिनांक २६ को ३ से ४ बजे तक आचार्य सत्यजीत जी द्वारा शंका समाधान सत्र में जिज्ञासुओं की शंका व प्रश्नों का समाधान किया गया। शेष दिनों में प्रतिदिन स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक द्वारा पूर्ण दक्षता एवं विनम्रता से सहजतापूर्वक शंकाओं का समाधान किया गया। सायं ४ बजे से ४.३० तक श्रमदान के अन्तर्गत साफ-सफाई की गई, पेड़-पौधों में पानी दिया गया। शिविरार्थियों को सुगन्धित, स्वादिष्ट, मधुर पेय पदार्थ दिया गया। सायं ४.३० से ५.३५ तक अवकाश, निजी कार्यों, भ्रमण-स्नान, विश्राम हेतु दिया गया। सायं ५.३५ से ६.२० तक उपासना प्रशिक्षण ब्र. अरुण जी आर्यवीर द्वारा तथा तमिल भाषियों के लिए आचार्य श्रीधरजी द्वारा पृथक कक्षा में प्रतिदिन दिया गया।

सायंकाल का भोजन प्रतिदिन निर्धारित समय ६.३० से ७ बजे तक सम्पन्न हुआ। रात्रि को प्रतिदिन ७.३० से ७.४५ तक ब्र. अरुण जी आर्य वीर एवं ब्रह्मचारियों के सानिध्य में सामूहिक भ्रमण श्लोक गायन सम्पन्न हुआ। ७.५० से ८.१० तक शिविरार्थियों की उपस्थिति श्री राजेश जी पारेख द्वारा ली गई तथा आवश्यक सूचनाएं प्रतिदिन दी गई।

प्रतिदिन रात्रि को ८.१५ से ८.४५ तक आचार्य सन्दीपजी द्वारा '**आत्मनिरीक्षण**' विषय पर इसकी महत्ता और मनुष्य जीवन की उन्नति के लिए आवश्यक क्यों? पर प्रभावशाली व्यक्तव्य प्रदान किया गया तथा शिविरार्थियों को आत्मनिरीक्षण द्वारा आत्म सुधार की प्रेरणा प्रदान की।

प्रतिदिन रात्रि ८.४५ से ९.१० तक '**प्रेरक प्रवचन**' के अन्तर्गत ममस्पर्शी प्रवचन आचार्य सोमदेव जी द्वारा दिया गया। आचार्य ज्ञानेश्वर जी के प्रेरक प्रवचनों में राष्ट्र की दशा-दिशा की जो पीड़ा प्रत्यक्ष अनुभव होती थी, उसी पीड़ा का कुछ-कुछ बोध आचार्य सोमदेव जी के द्वारा यक्ष-युधिष्ठिर के संवाद के अंश '**किं राष्ट्र मृतं भवेत**' अर्थात् कौन-सा राष्ट्र मर जाता है को केन्द्र में रखकर दिये गये प्रवचनों से हुआ। वैसे आचार्य सोमदेव जी जैसे मूर्धन्य विद्वान के लिए मात्र २५ मिनिट का समय कम रहा। खून को उबाल देने वाले विषय पर बोलने का समय आता तब तक समय समाप्त हो जाता। न्यून से न्यून एक घण्टा होना चाहिए था। प्रतिदिन रात्रि ९.१० से ९.१५ तक ब्रह्मचारी वैशुद्ध आर्य द्वारा शयनकालीन मन्त्रों का पाठ कर दिनचर्या को विराम दिया गया। ९.१५ से ९.३० के मध्य भोजनशाला में शिविरार्थियों द्वारा दुग्धपान पर अपने-अपने निर्धारित आवास स्थानों पर शयन किया गया।

महिला-पुरुषों की पृथक-पृथक आवास, शौचालय, स्नानागार की पर्याप्त व्यवस्थाएं थी। मोबाईल, टेलीविजन, समाचार पत्र, आपसी वार्तालाप, मिर्च-मसाले युक्त, तले-गले तामसिक आहार से परे परिवारजनों, मित्रों आदि से पूर्णतः सम्पर्क विच्छेद से इस प्रकार प्रतीत होता था। **जैसे शिविरार्थियों के लिए उनका अपना संसार, केवल और केवल वानप्रस्थ साधक आश्रम था, कोलाहल से परे सर्वत्र सुख-शान्ति, किसी को भी किसी भी प्रकार अर्थात् सामान चोरी हो जाने, छेड़छाड़ आदि का कोई भय नहीं, जैसे राम राज्य की परिकल्पना साकार हो रही थी। इन आठ दिनों में जो ज्ञान और आनन्द की अनुभूति की गई, उन्हें शब्दों में बता पाना सम्भव ही नहीं है। मात्र थोड़ा-सा परिचय देने का प्रयास किया गया है जिससे अन्यों को भी प्रेरणा प्राप्त हो और वे भी क्रियात्मक योगाभ्यास शिविर से लाभ उठाकर मानव जीवन को सफल बना सकें।** धन्यवाद

– **सुखदेव शर्मा**, प्रकाशक वैदिक संसार

सन्त कबीर

- शिवनारायण उपाध्याय -
७३, शास्त्री नगर, दादावाड़ी, कोटा, (राज)
चलभाष-०७४४२५०१७८५

सन्त कबीर का स्थान भारत के सन्तों में अग्रणी है। वे सुल्तान सिकन्दर लोदी के समकालीन थे। उनकी जीवन अवधि (सन् १३९८ से १४९५ ई.) लगभग सौ वर्ष मानी जाती है। दन्तकथाओं के अनुसार वे एक कुंवारी ब्राह्मण युवती की सन्तान थे। लोकलाज के डर से उसने जन्म देते ही इन्हें लहर लाला में एक तालाब के पास छोड़ दिया था। सौभाग्य से उधर से कोई जुलाहा निकला और उसने वहां नवजात शिशु को पड़ा देखा तो उसे दया आई और वह बालक को उठाकर अपने घर ले आया। उसके स्वयं की कोई सन्तान भी नहीं थी। अतः पति-पत्नी दोनों ने उसे प्रेम से पाला और अपना घरेलू व्यवसाय कपड़ा बुनना सिखाया। कबीर ने स्वयं इस बात को स्वीकार किया है कि वे जाति से जुलाहा है तथा कपड़ा बुनना उनका पैतृक व्यवसाय है। उनके पद्यों में करघे के साथ ताना-बाना शब्द का प्रयोग भी कई स्थानों पर हुआ है। "**तू ब्राह्मण मैं कासी का जुलाहा चींहिन मोरा गियाना**' या **जाति जुलाहा नाम कबीर बनि बनि**

फिरौं उदासी या तनना बुनना तज्या कबीर, राम नाम लिख लिया शरीर। जुलाहा जाति हिन्दू और मुसलमान दोनों में होती है। इसलिए कबीर ने यह भी स्पष्ट कर दिया है कि वे मुसलमान जुलाहे हैं। **जाके ईद बकरीद दनित गउरे वघ करें मानिये सेष सहीद पीरों।** परन्तु ज्ञानी हो जाने के बाद वे अपने को न हिन्दू मानते हैं और मुसलमान न तो वे मूर्ति पूजा करते हैं और न नमाज पढ़ते हैं- **पूजा करूं न नमाज गुजारूं, एक निराकार हृदय नमस्कारूं। एक निरंजन अलह मेरा, हिन्दू तुरुक दुहूं नहि मेरा। न हज जाऊं न तीरथ-पूजा ए पिछानियां** तो क्या दूजा। वे मनुष्य मात्र में भेद नहीं करते हैं भेद तो समाज जन्म के बाद करता है।

एक बूंद एके मल मूतर, एक चाम एक गूदा।
एक जोति में सब उत्पन्न कौन ब्राह्मण को सूदा।।

कबीर का युग राजनीतिक और सामाजिक दृष्टि से अशान्ति और अस्थिरता का युग था। १४५५ विक्रम संवत में तैमूर ने भारत पर आक्रमण किया था। यह आक्रमण बर्बरता, नृशंसता, कठोरता का सजीव उदाहरण था। उसने लाखों निर्दोष हिन्दुओं को बर्बरता से कत्ल करा दिया। उसने जी खोलकर हिन्दुओं की हत्या की और लौटते समय हजारों स्त्री-पुरुषों और बालकों को गुलाम बनाकर ले गया। तैमूर के लौटते ही शासन लोदी वंश के हाथ में आया। बहलोल लोदी ने तो देश को संगठित करने का प्रयत्न किया। परन्तु दूसरा शासक सिकन्दर लोदी धर्मान्ध था। उसने हिन्दू जनता और विशेषकर ब्राह्मणों पर अत्याचार किए। कबीर इसके समकालीन थे और अपने को मुसलमान मानना अस्वीकार करते थे, इसलिए उसने कबीर को भी नहीं छोड़ा। उसने उन्हें पत्थर से बांधकर नदी में फिंकवा देने तथा हाथी के पैर से कुचलवा देने के आदेश तो दे भी दिए थे। कबीर हिन्दू- मुस्लिम एकता के समर्थक थे। दोनों के अन्ध विश्वासों का खण्डन करते थे और एक परमात्मा की सन्तान के समान दोनों के मानते थे।

हिन्दु तूरक का साहिब एक कहकरैमुल्ला कह करे सेवर। फिर जो तू बांमन बामनी जाया, तो आन राहे काहे न आया। जो तु तुरक तुरक नी जाया, तो भीतर खतना क्यों न कराया। वे जाति पाति में विश्वास नहीं करते थे। कबीर का कहना था- **जाति-पाति पूछे नहीं कोई। हरि को भजे सो हरि को होई।** कबीर दास जी मन को पवित्र बनाने पर बल देते हैं, उनका कहना है कि यदि आपका मन पवित्र है तो उपासना की भी आवश्यकता नहीं है।

कबीरा मन निर्मल भया, जैसे गंगा का नीर।
पीछे-पीछे हरि फिरे, कहत कबीर-कबीर।।

संसार में दु:ख के कारणों मे परिग्रह का बड़ा हाथ है। इसलिए कबीर परिग्रह का विरोध और अपरिग्रह का समर्थन करते हैं-

साधु गाठिन बांधई, पेर समता लेई।
साईं के सम्मुख रहे, जहं मांगे तहं देई।।

कबीर का कहना है कि जब तक कोई व्यक्ति अपने परिवार के विकास में लगा रहता है तब तक वह समाज के विकास में भाग लेने में असमर्थ रहता है। समाज को आगे बढ़ाना चाहते हो घर की चिन्ता छोड़ों और लग जाओ समाज की सेवा में।

हम घरा जाल्या आपणां लिया मुराड़ा हाथि।
अब घर जालौं तासका जे चले हमारे साथि।।

वे निर्गुण और सगुण दोनों से ऊपर उठने की बात कहते हैं-

सगुण की सेवा करो निर्गुण का करूं ध्यान।
निर्गुण सगुण के परे तहां हमारा ध्यान।।

कबीर का कहना है कि पर ब्रह्म परमात्मा में अनन्त गुणों का निवास है। उनका वर्णन कोई कैसे कर सकता है।

सात समुन्द की मसि करौ, लेखनि सब बनराई।
धरती सब कागद करौ, गुर गुण लिख्या न जाई।।

इस संसार को वे नितान्त क्षणिक मान कहते हैं-

यह ऐसा संसार है जैसे सेंवल फूल। संसार को क्षणिक मानते हुए भी वे दीन-दुखियों को सताने का विरोध करते हैं।

दुर्बल को न सताइये जाकी मोटी हाय।
बिना जीभ की स्वांस से लौहा भसम ह्वै जाय।

या

मांस अहारी मानवा, परतछ राछस अंग।
ताकि संगति मत करौ, परतछ राछसे अंग।
ताकि संगति मत करौ, परत भजन में भंग।।

इसी प्रकार उन्होंने कहा है कि बकरी पत्ते खाती है तो उसकी कुर्बानी दी जाती है तो उसका क्या होगा जो बकरी को खाते हैं? ब्रह्म को जान लेने के बाद मृत्यु का डर नहीं करता है। वे कहते हैं-

हम न मरै मरि हैं संसारा। हमको मिला जियावन हारा।

वह ब्रह्म कैसा है? इस विषय में उनका कथन है-

नाद बिन्दु तें अगम अगोचर, पांच तत्व तें न्यार।
तीन गुनन तें भिन्न है, पुरुष अलक्ख अपार।।

विषय को विस्तार देते हुए कबीर पुनः कहते हैं-

खालिक खलक खलक मंह खालिक सब घट रह्यो समाई।
अवगत की गति का कहूं जस का गांवन नांव।।

तथा

बिन मुख खाई चरन बिन चालै
बिन जिह्वा गुण गावै।।

इसी प्रकार- **नातिस सबदल स्वाद सौहा। ना तिहि माता-पिता नहिं मोहा ना तिहि सास-ससुर नाहि सारा। ना तिहि रोजान सेवन हारा।।**

अन्त में कबीर का कहना है कि प्रेम ही महत्वपूर्ण है प्राणी मात्र से प्रेम करने से अधिक मत्वपूर्ण कुछ भी नहीं है।

पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुआ पण्डित भयान कोय।
ढाई अक्षर प्रेम का पढ़े जो पण्डित होय।।

इसी भावना का विस्तार करते हुए कबीर कहते हैं-

भाव बिना नहिं पाइये, प्रेम-प्रीति को भक्त।
बिना प्रेम नाहिं भक्ति कछु भक्ति भरयो सब भक्त।।
प्रेम बिना जो भक्ति है, जो निजदम्भ विचार।
उदर भरन के कारने, जनम गवायो सार।।

वास्तव में कबीर जन-जन के प्रिय है कोई भी सन्त समागम कबीर के उल्लेख के अभाव में अधूरा ही रहता है।

इतिशम !●

न्याय की अनुपम देवी अहिल्याबाई

- डोंगरलाल पुरुषार्थी -
पूर्व प्रधानाध्यापक, प्रधान-आर्य समाज
कसरावद, जिला-खरगोन (म.प्र.)
चलभाष-८९५९०५९०९९

" ब्रह्मी स्वरूपा, जन्मदात्री, ज्ञान-गौरव-शालिनी।
प्रत्यक्ष लक्ष्मीरूपिणी, अन्नपूर्णा, प्रजापालिनी।
दुर्द्धर्ष रुद्राणी स्वरूपा, शत्रु-सृष्टि लयंकरी।
यह भूमि भारत वर्ष है सेवा-धर्म भावों से भरी।।

- मैथिली शरण गुप्त

एक बालक जंगल में नित्य अपनी भेड़ों को चराता था। एक दिन दोपहर को भेड़ों को वृक्षों की छाया में बैठाकर भोजन के इन्तजार में स्वयं वृक्ष की छाया में लेटते ही नींद लग गई। समय चक्र के साथ परछाइयां बदलते हुए सूर्य की धूप बालक के सिर पर पड़ने लगी। संसार में प्राय: आश्चर्यजनक घटनाएं होती रहती है। ऐसे ही कुदरत के करिश्मों के अन्तर्गत एक काला जहरीला नाग अपने बिल से निकल बालक के सिर पर अपना फन फैलाकर छाया करके बैठ गया। कुछ ही पलों के बाद बालक की माँ अपने बेटे के लिए रोटी लेकर आ गई और इस प्रकार का भयानक दृश्य देखकर कांप उठी। बेटे की जान खतरे में देख वह तुरन्त भागी-भागी गांव में आकर कुछ लोगों को साथ में लेकर उसी स्थान पर आकर आश्चर्यचकित होकर यह देखते हैं कि बालक सही सलामत सो रहा था।

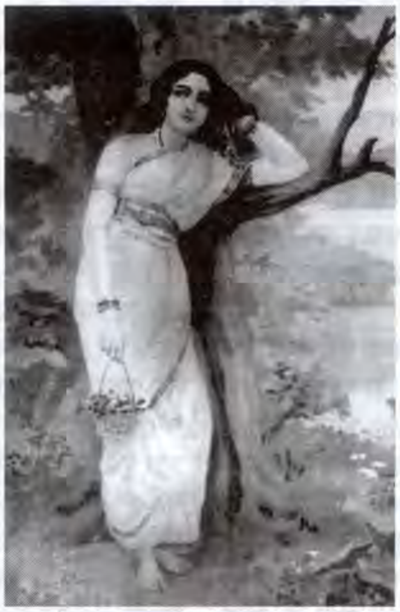

आगे चलकर यही गडरिया (चरवाहा) बालक अपने पराक्रम, साहस, अनुशासन आदि गुणों से धनी जिसका जन्म रामनवमी के दिन होने से बालक को लोग भाग्यवान समझते थे, महाराजा मल्हारराव होल्कर नाम से विख्यात हुआ। पूना के पास 'होल' नामक गांव में पैदा होने के कारण होल्कर पड़ा। पिता का नाम खण्डोजी तथा माता का नाम जिवाई था। बालक की तीन वर्ष में ही पिता का आश्रय उठ गया था। परिवार के लोगों ने छल कपट से घर और जमीन हड़प ली। तत्पश्चात् मामा भोजराज के आश्रय में बालक पला-बढ़ा, फिर अपने पराक्रम के बल से सन् १७३० ई. में मराठों का प्रधान सेनापति बनकर मल्हारराव ने ७४परगनों को जीतकर मराठों की झोली में डाल दिया। इस प्रकार शनैः शनैः अपनी कार्य कुशलता से महाराजा बने। मल्हारराव के तीन विवाह पश्चात् एक पुत्र रत्न (खण्डेराव) की प्राप्ति हुई। किन्तु वह पिता जैसा तेजस्वी, पराक्रमी न होकर राजकाज में कोई दिलचस्पी नहीं थी। इसलिए मल्हारराव को ऐसी पुत्रवधु की तलाश थी जो राजकाज संभालने में दक्ष हो। एक बार महाराजा अपनी यात्रा के दौरान एक चौड़ी नामक गांव के शिव मन्दिर में नौ वर्षीय बालिका को देखा और उसके गुणों से आकर्षित होकर महाराज ने बालिका के पिता को बुलाकर अपनी पुत्र वधु बनाने की इच्छा प्रगट की। बेचारे गरीब किसान की खुशी का ठिकाना न रहा कि मेरी बेटी राज घराने में ब्याही जाएगी।

यही कृषक पुत्री अहिल्याबाई जिसका जन्म दिनांक ३१-०५-१७२५ में हुआ था। पिता का नाम मनकोजी था। राजधानी इंदौर पहुंचकर महाराज ने अहिल्या का विवाह अपने पुत्र खण्डेराव के साथ किया। अहिल्याबाई युवरानी बन जाने पर भी उनके पास शील की शालीनता, विनम्रता, गंभीरता, अनुशासन तथा धैर्य आदि गुणों के खजाने से अलंकृत थी। युवरानी अहिल्या ने सादे वस्त्र, साधारण भोजन और सरल व्यवहार का परित्याग नहीं किया। अनपढ़ होने के कारण अहिल्या अपने पति से पढ़ती थी, किन्तु खण्डेराव पढ़ाई की पूर्ति नहीं कर पाते थे। पढ़ाई की जिज्ञासा की पूर्ति हेतु श्वसुर के समक्ष बात रखी। महाराज ने सहर्ष एक बुजुर्ग, अनुभवी शिक्षक की व्यवस्था कर दी। अहिल्या अपने गुरु का सम्मान एक छात्र की भाँति करती थी, वह अनुशासन का पालन कर अपने गुरु के सम्मुख युवरानी के रूप में नहीं वरन् सुशील छात्रा या शिष्या की भाँति पढ़ती थी। अहिल्या को शिक्षा के प्रकाश ने गुण-गौरव को और भी चमत्कृत तक दिया। अहिल्या की सेवा, उत्तरदायित्व, कर्त्तव्यनिष्ठ आदि से प्रसन्न होकर मल्हारराव ने बहू को राज-काज की शिक्षा देना शुरू कर दी। महाराज ने अपने पुत्र की अपेक्षा अपनी बहू के गुण-कार्यों पर अधिक विश्वास था, क्योंकि खण्डेराव का स्वभाव अक्कड़, क्रोधी, भोग-विलासी था। किन्तु अहिल्या के सान्निध्य से व्यवहार में बहुत परिवर्तन आ गया। सन १७४५ ई. में एक पुत्र भालेराव का जन्म होने के पश्चात् एक पुत्री का जन्म हुआ, जिसका नाम मुक्ताबाई था। खण्डेराव दो बच्चों के पिता हो जाने पर भी राज-काज में कोई रुचि नहीं लेने के कारण मल्हारराव ने अहिल्या को देश की स्थिति से अवगत कराया, राजनीति के व्यवहारिक और न्यायिक सूक्त बतलाये। युद्ध कला और युद्ध भूमि से संबंधित जानकारियां और युद्ध में उत्पन्न होने वाली समस्याओं के निदान बताये। अहिल्या ने और भी अनेक बारीकियों की जानकारी अपने श्वसुर से प्राप्त की। घुड़सवारी करते हुए युद्ध के कार्य भी किया करती थी। सन् १७५४ को मल्हारराव ने पुत्र खण्डेराव को अपने साथ लेकर भरतपुर पर चढ़ाई कर दी। जाटों के साथ घमासान युद्ध में एक तोप के गोले से खण्डेराव की मृत्यु हो गई। मृत्यु पश्चात् खण्डेराव का अंतिम संस्कार की तैयारी हो रही थी, वहीं दूसरी ओर अहिल्याबाई सती होने की अपनी तैयारी कर रही थी। जो कि उस समय सतीप्रथा

पूर्णतया लागू थी।

महाराजा मल्हारराव जो कि बहुत बड़े जीवट योद्धा, महावीर पराक्रमी, महान सेनापति, धैर्यवान और राजनीति के मर्मज्ञ थे जो आज असहाय होकर एक बच्चे की भाँति अपनी बहू के समक्ष रो रहे थे, वे बहू से अनुनय-विनय कर रहे थे। बहू! तुम सती न होना। तुम मेरे बेटे के समान हो। तुम्हें खोकर मैं जी नहीं सकूंगा, नहीं जी सकूंगा। तुम मेरे प्राण हो, तुम मेरा जीवन हो, बेटी! तुम मेरा सहारा बनो, धन-दौलत, राजपाट सब तुम्हारा ही है। इसे तुम्हें ही संभालना है। प्रजा की सेवा करना है। तुझे अपना उत्तरदायित्व निभाना है। बेटी अहिल्या! तुम रहोगी तो मैं यही समझूंगा कि मेरा बेटा खंडू मेरे सामने है, तुम्हें देखकर मैं अपना सारा दुःख भूल जाऊंगा। बेटी! तुम मेरी मान लो और सती होने का अपना विचार त्याग दो, त्याग दो, त्याग दो। अहिल्या ने अपने ससुर की दारूण व्यथा से द्रवित होकर सती का चोला त्याग दिया। कीमती वस्त्रों, आभूषणों को सदा के लिए छोड़ दिया। जीवन की सारी सुख-सुविधाओं को हमेशा-हमेशा के लिए भस्म कर दिया। अपने तन पर ध्वल वस्त्र को वरण करके अपने आपको जनता की सेवा में तत्पर होकर ईश्वर के कर कमलों में अपना जीवन अर्पित कर जो अहिल्या होल्कर वंश की बहूरानी थी जो अपने पुण्य कर्मों से देवी बन पूजनीय हो गई। अहिल्याबाई सती न होकर भी विश्व में महासतियों की श्रेणी में सम्मिलित हो गई। जनता ने अहिल्या को "माँ" का दर्जा प्रदान किया। अहिल्याबाई अपने जीवन को ऐसे साँचे में ढाल चुकी थी कि प्रजा उनकी "पूजा" साक्षात् देवी के रूप में करने लगी।

किन्तु अहिल्या की अग्नि परीक्षाएं यहीं पर खत्म नहीं हुई। सन् १७६१ ई. में पानीपत के युद्ध में मराठों की हार होने के बाद कुछ दिनों पश्चात् महाराजा मल्हारराव अपने साथियों के साथ उत्तर भारत की यात्रा पर निकले, साथ में पौत्र भालेराव भी था, किन्तु महाराज का स्वास्थ्य खराब होने के कारण आलमपुर नामक स्थान में रुकना पड़ा। उस समय मल्हारराव के कान में असहनीय दर्द हो रहा था। बहुत इलाज कराने के बाद अन्ततः अपने पौत्र से कहा- 'बेटा तुम्हें मेरी मृत्यु पश्चात् श्रीमंत पेशवा जी की चाकरी करनी है।' इतना कहकर भारत माता के योद्धा भारत माता की गोद में सो गया। अंतिम संस्कार पौत्र द्वारा आलमपुर में किया गया। खेद इस बात का कि दादाजी ने माँ के कार्यों को नजरअंदाज करते हुए भालेराव जो अवगुणों की ही खान था। माँ अहिल्या ने अपने पुत्र को सुधारने के सारे प्रयास किए। दिनांक २३.०८.१७६६ में भालेराव का राजतिलक किया गया। पेशवा ने भालेराव को सनद् प्रदान की। जबकि राज्य के वास्तविक अधिकार अहिल्याबाई को ही सौंपे गए। अफसोस! भालेराव को राजतिलक, सनद आदि अधिकार मिलने पर व्यवहार में कोई भी बदलाव नहीं हुआ। मदिरापान, भोग-विलास, व्याभिचार में दिन प्रतिदिन वृद्धि ही होती जा रही थी। जनता को सताने का हाहाकार मच गया, ब्राह्मणों की दक्षिणा के पात्रों में सांप, बिच्छू रख देना। ब्राह्मणों, संतों के ऊपर जहरीले जन्तुओं को फेंकने पर भालेराव को मजा आता था। इसके दुष्कृत्यों से जनता कराह उठी थी। माँ ने बेटे को खूब समझाया, किन्तु पुत्र पर असर नहीं हुआ। अन्ततः अहिल्याबाई ने प्रजा की सेवार्थ रक्षार्थ अपने २२ वर्षीय पुत्र को हाथी के पैरों तले कुचलवा दिया। यह था विश्व में अभूतपूर्व न्यायिक कदम। जो अहिल्याई ने संसार में सिद्ध किया कि संतान से भी बढ़कर प्रजा से भी स्नेह, प्रेम, वात्सल्य, अपनी प्रजा के सामने वह धर्म और न्याय की भावना से पेश आती थी।

अहिल्याबाई का पति, श्वसुर तथा पुत्र की मृत्यु के बाद स्वार्थी अवसरवादी लोग राज्य के वैभव को हड़पना चाहते थे। अहिल्याबाई ने इनको जवाब में कहा-अगर तुमने मुझे अबला समझा है तो तुम्हें युद्ध भूमि में मालूम हो जाएगा कि मैं अबला हूं या शेरनी। अगर तुम मर्द हो तो तुम्हारी मर्दानगी का सामना मेरे जांबाज सैनिक नहीं वरन् मेरी वीरांगना सेना ही तुम्हारे लिये पर्याप्त है, अगर हार गए तो कहीं मुंह दिखाने के लायक नहीं रहोगे, हर कोई तुम पर थू-थू करेंगे, तुम्हारे माथे पर ऐसा कलंक लगेगा जिसे मिटा न पाओगे, चुल्लू भर पानी में डूब मरोगे। ऐसी हुंकार से पड़ोसी राज्यों की ताकत पस्त हो गई। किन्तु राज्य के चारों ओर चोर-डाकुओं का आतंक बढ़ता ही जा रहा था। उत्तर में मोधियों और सोंधियों का आतंक, दक्षिण में निमाड़, खानदेश के भीलों का आतंक, महेश्वर के करीब जामघाट पर गणपतराव मराठा डाकू का आतंक बहुत जोर पर था। ऐसी विकट स्थिति से निपटने हेतु महेश्वर में एक दरबार का आयोजन किया, जिसके अन्तर्गत अहिल्याबाई ने घोषणा की कि कोई जांबाज नवयुवक राज्य को चोर-डाकुओं के आतंक से मुक्त कर देगा मैं अपनी पुत्री का विवाह उसके साथ कर दूंगी। तभी एक युवक ने कहा- मैं राज्य से आतंक को मुक्त कर दूंगा। और यह वीर यशवंतराव फणसे था। जो अपने साथ सैनिकों को लेकर आतंकियों पर कहर ढाकर कुछ महिनों में राज्य से आतंक को नौ दो ग्यारह कर दिया। तत्पश्चात् महारानी ने अपनी बेटी मुक्ताबाई का विवाह यशवंतराव फणसे से करके दहेज में धन, आभूषण और कई परगने भी फणसे को भेंट किये। मुक्ताबाई ने एक पुत्र को जन्म दिया, अहिल्याबाई अपने नाती को प्यार से 'नथ्या बा' कहकर बुलाती थी और राज्य का उत्तराधिकारी बनाना चाहती थी, किन्तु विधि के विधान के आगे सभी मजबूर है। नथ्या क्षय रोग के कारण कम उम्र में संसार से चला गया। तत्पश्चात् दामाद ने भी अपने पुत्र के गम में दिनांक ०३.१२.१७९१ को दम तोड़ दिया। मुक्ताबाई भी अपने पति की चिता के साथ सती हो गई। अन्त में अहिल्याबाई ने अपना राजकाज की व्यवस्था और सेवा तन,मन और धन से करते हुए सामाजिक क्षेत्र में धर्म और न्याय के क्षेत्र में प्रजा की खूब सेवा की। चींटी, मछलियों से लेकर मानव मात्र का उपकार करते हुए अहिल्याबाई अपने महेश्वर निवास में बीमार पड़ने के बाद माह अगस्त सन् १७९५ ई. कृष्ण पक्षभादों की चतुर्दशी को बड़ी शान्ति से अपने प्राण दिये। उसी समय उनकी एक प्रिय गाय श्यामा ने भी दम तोड़ दिया। इसी गाय को अहिल्या माँ प्रतिदिन प्रणाम किया करती थी। बहुत बड़े जन समुदाय के मध्य नर्मदा किनारे जय जयकार के साथ अंतिम संस्कार किया गया। महारानी हमारे बीच नहीं है उनकी यादें हमारे दिलो-दिमाग में बसी हैं। सेवा, धर्म, न्याय की देवी को शत-शत नमन अभिनंदन।

"आर्या नारियों का चारण, गाथायें, उनकी पढ़ता रहता हूँ।
भूत की स्वर्णिम सेवाएं, भविष्य के लिए आज उकेरता हूँ।" ●

वैज्ञानिक दृष्टि से वैदिक मन्त्रों की व्याख्याएं - विविध विज्ञान

- बाबूलाल जोशी -
बी-६२ रविशंकर नगर,
एमआईजी कॉलोनी, इंदौर (म.प्र.)
दूरभाष - ०७३१-२४३२२८५

आधुनिक शिक्षा पद्धति से शिक्षित लोगों को प्रायः यह जिज्ञासा होती है कि क्या वेदों में विज्ञान है? यदि है तो वह किस स्वरूप में हैं। वेद मन्त्रों की व्याख्याएं प्रायः आधिभौतिक, आधिदैविक और आध्यात्मिक स्वरूप में होती है। इसका सहज, सरल उत्तर होगा कि इन भाष्यों से कुछ व्याख्याओं में विज्ञान की एक झलक दृष्टिगोचर होती है।

अब ऐसा मन्त्र जिसमें एकाधिक विज्ञान की शाखाएं सूत्र रूप में विद्यमान हैं।

अग्निर्भूम्यामोषधीष्वग्निमापो विभ्रत्यग्निरश्मसु।
अग्निरन्तः पुरुषेषु गोष्वश्वेष्वग्नयः।। अथर्व. १२.१.१९

भूमि में अग्नि (भूगर्भ विज्ञान) तथा भूमि से विद्युत प्राप्ति, औषधियां भी गरम होती है (आयुर्विज्ञान) जल से विद्युत प्राप्त होती है (जल विद्युत या Hydro Electricity) चकमक के पत्थरों की घर्षण विद्युत से अग्नि उत्पन्न की जा सकती है। जो (Frictional Electricity) है। पुरुषों में जठराग्नि, शारीरिक अग्नि, शरीर का तापमान (Body Temperature), गौ अश्व में विद्यमान शक्ति, अश्व शक्ति। शक्ति माप की इकाई, इसका प्रारम्भिक स्वरूप गति और आज भी विभिन्न प्रकार के यन्त्रों की शक्तियों का मापन अश्व शक्ति से ही किया जाता है। प्रारम्भिक स्वरूप में एक अश्व शक्ति ३३००० फुट पाउंड प्रति सेकण्ड थी।

विद्युत मापन में Amp x Volt= Watt. तथा 746 Watt=1 H.P. गौ दुग्ध की शक्ति, दूध, दही, छाछ, पनीर, मक्खन और घृत से सर्वज्ञात है ही। भारतीय गायों के दूध में अन्तर और उनकी नई-नई इकाइयों में मापन के अध्ययन से यह ज्ञात हुआ है कि भारतीय गो दुग्ध में अनेक विशेषताएं हैं। यहां तक प्राचीन वैद्य तो कुछ व्याधियों के लिए काली गाय का दूध उत्कृष्ट बताते हैं, तो अन्य अलग-अलग व्याधियों में अलग-अलग रंग की गायों के दूध, दधि आदि का प्रयोग रोग विशेष के लिए बताते हैं, इस गहराई तक अभी भौतिक विज्ञान की उपलब्धि सुनने में नहीं आती है। अलग-अलग प्रकार की गायों के अलग-अलग दूध में अनेक विशेषताएं हैं। भारतीय प्राचीन विज्ञान ऋषि-मुनियों द्वारा प्रदत्त ज्ञान से भरा पड़ा है।

काव्यानुवाद

भूमि में आग होती, औषधियां भी गरम ही।
विद्युत है विद्यमाना, जल रूप मध्य में ही।।
चकमक के पत्थरों में घर्षण से प्रकट होती।
पुरुषों में रूप इसका, जठराग्नि है कहाता।।
जीवन के रूप में है, यह अग्निशक्ति रूपा।
गौ, अश्व में भी शक्ति, अग्नि का अंश होता।।

शेष आगामी अंक में...

दैनिक जीवन में अग्निहोत्र

- डॉ. धर्मेन्द्र कुमार शास्त्री -
ए.प्रोफेसर खालसा कॉलेज
देवनगर, नई दिल्ली-०५
चलभाष- ९९९९४२६४७४

सनातन प्राचीन आर्य वैदिक संस्कृति के अनुसार नित्यकर्म बतलाये गए हैं, जिन्हें सभी गृहस्थ, प्रतिदिन किया करें, धनी हो या निर्धन, बड़ा हो या छोटा, प्रत्येक के लिए आवश्यक होने से उन नित्य यज्ञों का क्षेत्र बड़ा विस्तृत है। वे मनुष्य मात्र के समान कर्म है, इसलिए उन्हें महायज्ञ कहते हैं। भगवान मनु ने इन पांच यज्ञों का अनुष्ठान नित्य एवं आवश्यक बतलाया है-

ऋषियज्ञं देवयज्ञं भूतयज्ञं च सर्वदा।
नृयज्ञं पितृयज्ञं च यथाशक्तिर्न हापयेत् ।। मनु. ४/२२

जहां तक हो सके (**ऋषियज्ञ**) ब्रह्मयज्ञ (**देवयज्ञ**) देवयज्ञ (**भूतयज्ञ**) बलिवैश्वदेवयज्ञ (**नृयज्ञं**) अतिथि यज्ञ और (**पितृयज्ञ**) पितृयज्ञ को (**न**) नहीं (**हापयेत्**) छोड़े।

महाभारतकार वेदव्यासजी के उपदेश अनुसार-

अहन्यहनि ये त्वेतानकृत्वा भुञ्जते स्वयम् ।
केवलं मलमश्नन्ति ते नरा न च संशयः।
महाभारत अश्व १०४/१६

(**अहन्यहनि**) प्रतिदिन ये जो (**एतान्**) इन महायज्ञों को (**अकृत्वा**) किये बिना स्वयं (**भुञ्जते**) खाते-पीते हैं, (**ते**) वे (नराः) नर (**केवलं**) केवल (**मलं**) मल खाते हैं (**च**) वस्तुतः इसमें (**संशयः**) संशय नहीं है।

आईये! पञ्चमहायज्ञ पर क्रमशः विचार करते हैं सबसे प्रथम है **ब्रह्मयज्ञ-** प्रतिदिन प्रातः तथा सायंकाल प्रभु के चरणों में उपस्थित होकर, अपने विनय तथा प्रेम का प्रकाश करना और परमपिता के गुणों की आराधना करना ब्रह्मयज्ञ का एक भाग है।

स्वाध्याय अर्थात् मोक्षशास्त्रों का अध्ययन करना दूसरा भाग है।

शास्त्रों को पढ़ने तथा उनकी बातों पर आचरण करने से उनकी सच्चाई का अनुभव होता है और धर्म में श्रद्धा बढ़ती है। मनुस्मृतिकार कहते हैं-

यथा यथा हि पुरुषः शास्त्रं समधिगच्छति।

तथा तथा विजानाति विज्ञानं चास्य रोचते।। मनु. ४/२०

(**यथा यथा**) ज्यों-ज्यों पुरुष शास्त्र को (**समधिगच्छति**) समझता जाता है (**तथा तथा**) त्यों त्यों (**विजानति**) विशेष जाना जाता है और उसकों रुचिकर होता है। स्वाध्याय करने वाला आत्मा के स्वरूप से भलीभांति परिचित होकर ठीक-ठीक चिन्तन करना सीख जाता है। सन्ध्योपासना-योग द्वारा आत्मिक मर्मो के मनन का अभ्यास हो जाता है। जब स्वाध्याय तथा भक्तियोग दोनों में सम्पन्न हो जाता है, तो प्रभु के प्रकाश का पात्र बनता है।

देवयज्ञ- इस प्रकार ब्रह्म अर्थात् ईश्वर और बेद के सत्संग से पवित्र होकर मनुष्य को चाहिए कि देवताओं का सत्संग करें। देव का अर्थ परमात्मा है। प्राकृतिक ज्योतियों, शक्तियों और विभूतियों को भी देव कहते हैं। विद्वानजनों को भी देव कहते हैं। साधक को उचित है कि ब्रह्मयज्ञ में विशेष रूप से प्रभु के आन्तरिक प्रकाश को देखने के लिए उत्सुक होकर अन्तर्मुख होने का अभ्यास करें। देवयज्ञ में उसकी बाह्य विभूतियों और चमत्कारों का ध्यान करता हुआ, उसके विराट स्वरूप का चिन्तन करें।

पितृयज्ञ- प्रतिदिन अपने माता-पिता, आचार्य, गुरुजन तथा अन्य आश्रित सम्बन्धियों की सेवा तथा तृप्ति का ठीक-ठीक प्रबन्ध करना ही इस यज्ञ का तात्पर्य है। माता-पिता अपने सन्तान के लिए जो-जो कष्ट उठाते और अपना आराम छोड़कर अपने बच्चों के लिए जो कुछ करते हैं, उसका ऋण चुका सकना असम्भव है। अतः अपने वृद्ध माता-पिता सबके प्रति सन्तान अपने कर्त्तव्य का पालन करें।

अतिथियज्ञ- यह चौथा महायज्ञ वहीं हो सकता है जहां पितृयज्ञ की प्रतिष्ठा हो। जब कोई विद्वान सदाचारी, संन्यासी, महात्मा, अनुभवी सज्जन हमारे घर आ पहुंचे, तो हमारा द्वार उसके स्वागत करने के लिए सदा खुला रहना चाहिए।

बलिवैश्वदेवयज्ञ- पांचों महायज्ञ द्वारा प्राणिमात्र से सहानुभूति प्रकट करने का उपदेश है। ब्रह्मयज्ञ में महान् प्रभु का ध्यान कर, साधक महान् बनना चाहता है। क्योंकि जिस प्रकार के संकल्पमय आदर्श हमारे सम्मुख होते हैं, हम वैसे ही ढलते जाते हैं। देवयज्ञ में वह भौतिक देवताओं में प्रभु की ज्योति को अनुभव करता हुआ उनके समान उपकारी बनने का यत्न करता है। पितृयज्ञ पारिवारिक एकता को बढ़ाने वाला है। अतिथियज्ञ जातीय प्रेम तथा संगठन का अभ्यास क्षेत्र है और अन्त में सब संकोच का त्याग सिखाने के लिए भूतयज्ञ आता है जैसे ब्रह्म सबके हृदय में निवास करता है ऐसे ही साधक भी प्राणि मात्र के हृदय में प्रविष्ट होकर उस ब्रह्म का अनुभव प्राप्त करें। किसी के हृदय में निवास करना हो तो उसके साथ सच्चा प्रेम और उसकी सदा सहायता करना चाहिए।

'अग्निहोत्र' (एक अध्ययन) ५० प्रतिशत छूट में प्राप्त करें

अग्निहोत्र एक अध्ययन पुस्तक डॉ. धर्मेन्द्र कुमार शास्त्री द्वारा लिखित महत्वपूर्ण पुस्तक है। लेखक ने अग्निहोत्र एक अध्ययन में यज्ञ के महत्व की वैज्ञानिक व्याख्या की है, जो विद्वानों, शोधकर्ताओं, समाज सुधारकों, पुस्तकालयों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी। पुस्तक के प्रत्येक अध्याय में लेखक की वैज्ञानिक प्रतिबद्धता, सूक्ष्म विवेचन शैली, तार्किकता साफ झलकती है। पुस्तक में प्राचीन मान्यताओं के साथ-साथ वैज्ञानिक कसौटी पर अग्निहोत्र की उपयोगिता को कसकर अपने लेखन में हस्तासिद्ध हुए हैं। यह ग्रन्थ सबके लिए उपयोगी है। इसकी महत्ता को देखते हुए जनसामान्य तक पहुंचाने के लिए लेखक ने पुस्तक पर ५० प्रतिशत का मूल्य निर्धारित किया है। पुस्तक का मूल्य- ५०० और पृष्ठ संख्या ३७७ है। सं.-९९९९४२६४७४

मुस्लिम समस्या का निदान-कुछ सूत्र

१. देश में बाहरी मतों (धर्म) के कारण देशवासियों की राष्ट्र निष्ठा का विभाजन होता है.

२. उक्त स्थिति के लिए राजा कालस्यकारणम् होता है। धर्म राज्याश्रय में पले बढ़े हैं, इसलिए शासन प्रयत्न कर सकता है-

(क) शासन धर्म परिवर्तन और इसके कारण उत्पन्न परिणाम को राष्ट्रीय समस्या घोषित करे।

(ख) शासन मूल धर्म में लौटने वालों को प्रोत्साहन/सहयोग करे।

(ग) शासन वर्तमान मुस्लिमों के हिन्दू गौत्र प्रकाशित कर उन्हें प्रयोग करने वालों को विशेष भत्ता दे।

३. मतभेद- कारण और निवारण-

कोई कहे या न कहे, हिन्दुओं का मुस्लिमों से मतभेद दो मुख्य कारणों से है-

(क) मांसाहार एवं क्रूरता, (ख) कामुकता एवं निकट रिश्तों में विवाह, इन समस्याओं के निवारण के लिए, शासन मांसाहार तथा निकट रिश्तों में विवाह के दोष स्थापित करके उन्हें सात्विक बनाए। शासन सात्विक लोगों के हिन्दू विवाह को प्रोत्साहन दे। शासन मुस्लिमों को अपने वर्तमान विवादित स्वरूप की अपने महान पूर्वजों से तुलना करके यह बताए कि विध्वंस से रचनात्मकता तथा तामसिकता से सात्विकता बड़ी चीज है।

४. इससे उनके मनों में अच्छाई का सूर्योदय होगा और हिन्दू भी प्रेम करने लगेंगे। यही हिन्दुत्व का रचनात्मक स्वरूप है। हिन्दू धर्म टूटा है और प्रेम सहयोग से पुनः जुड़ेगा।

५. शासन उक्त अल्प अर्थभार वहन करके देश में कौमी एकता रूपी अद्भुत अतुल्य एवं अमूल्य ईश्वरीय वरदान प्राप्त करेगा। ●

- रमेशचन्द्र चौहान -

२६२, पार्श्वनाथ नगर,

इन्दौर (म.प्र.)

चलभाष - ९८२६०-३१३४९

"यज्ञैश्वर्यम्"

- देवनारायण भारद्वाज -

'वरेण्यम्' अवन्तिका (प्रथम)
रामघाट मार्ग, अलीगढ़ (उ.प्र.
चलभाष -०५७१-२७४२०६१

लाठी के सहारे वे तीन कौन आ रहे हैं ? तीन बूढ़े हैं। एक परिवार के द्वार पर आकर खड़े हो गए। "**भज ओंकारं, भज ओंकारं, भज ओंकारं भज मोदमते**" बोलकर उन्होंने ध्वनि को गुञ्जांयमान कर दिया। सुनकर स्फूर्तिवती नव पुत्र वधु बाहर आकर खड़ी हो गई। पुत्र वधू अंग्रेजी पढ़ी लिखी है, उसकी ही क्या आजकल तो फेरी लगाने वाले भी टी.वी. मोबाइल की शिक्षा से बात-बात में हिन्दी के साथ अंग्रेजी की टांग अवश्य तोड़ते हैं। इसी प्रवृत्ति के अनुसार नववधू ने परिचय की दृष्टि से उन तीनों से क्रमशः पूछ लिया- Whats your name sir (व्हाट्सयोर नेम सर) श्रीमान आपका शुभ नाम क्या है। उन्होंने भी आधुनिकता का परिचय देते हुए उत्तर दिया तथा नाम बताने आरम्भ कर दिए। प्रथम ने कहा मेरा नाम P.P. (पी.पी.) है। दूसरे ने कहा मेरा नाम भी P.P. (पी. पी.) है, और तीसरे ने बताया-बेटी मेरा नाम भी P.P. (पी.पी.) है। इतनी वार्ता सुनकर नववधू की सासु माँ भी बाहर निकल आई। उन्होंने तीनों बूढ़ों को प्रणाम किया। नववधू की वार्ता भंग हो गई। तीनों बूढ़ों ने वार्ता की नई लय इस प्रकार प्रकट की।

माँजी हम तीनों भूखे हैं, भोजन करना चाहते हैं। गृहणी ने कहा- "महाशय! आप तीनों भीतर पधारें। हमें आप लोगों को अपने आंगन में बैठाकर भोजन कराने में बड़ी प्रसन्नता होगी।" तीनों ने मना करते हुए कहा- "हम तीनों के मध्य एक समझौता है, तीनों में से कोई एक ही किसी के घर में जा सकता है।" ऐसा क्यों श्रीमान! अचंभित गृहणी ने व्यग्रता के साथ पूछा। उन्होंने उत्तर दिया- आपकी पुत्रवधू ने अंग्रेजी में परिचय पूछा था- सो हमने अंग्रेजी में उत्तर दे दिया था, क्योंकि हम तीनों का नाम पी.पी., पी.पी., पी.पी. है। अब आपको हिन्दी में स्पष्ट करते हैं- हम तीनों के नाम क्रमशः प्रगति प्रकाश, प्रफुल्ल प्रकाश और प्रेम प्रकाश है। आप तीनों में से किसी एक को अपने घर में बुला सकती हो। यह सुनकर गृह स्वामिनी असमंजस में पड़ गई। उसने तीनों वृद्धों से क्षणभर प्रतिक्षा करने को कहा और इस बीच उसने अपने पति से परामर्श कर लिया और बड़ी मनुहार के साथ प्रेम प्रकाश को घर के भीतर आने का बुलावा दिया। सोचा यह गया कि और कुछ नहीं, सम्पूर्ण घर प्रेम के प्रकाश से परिपूर्ण हो जाए। गृहणी ने देखा कि प्रेम प्रकाश के आगे बढ़ते ही दूसरे बूढ़े भी उसके साथ ही घर में प्रवेश करने लगे। गृहणी ने उन्हें टोका- हमने तो प्रेम प्रकाश के बुलाया, आप दोनों क्यों आ रहे हैं। दोनों ने एक साथ उत्तर दिया- तुम और तुम्हारा पति, दोनों बड़े समझदार हो। तुमने प्रगति प्रकाश या प्रफुल्ल प्रकाश को न्यौता होता तो शेष दोनों बाहर ही खड़े रहते, लेकिन प्रेम प्रकाश का साथ हम कभी नहीं छोड़ते वह जहां भी जाता है हम दोनों उनके पीछे-पीछे चल पड़ते हैं। अस्तु हम दोनों को भी अन्दर आना ही होगा। गृहणी ने कहा- ठीक है आप अवश्य ही पधारें- हमारी तो पहले से यही अभिलाषा थी आप तीनों का स्वागत है।

इधर तीनों बूढ़ों ने अन्दर प्रवेश किया, उधर गृहपति ने यज्ञवेदी से उठकर सामगान पूर्वक अतिथियों का स्वागत किया।

श्रेष्ठं वो अतिथि स्तुषे मित्रमिवं प्रियम्।
अग्ने रथं न वेद्यम।। साम ५।।
इस वेदी पर धन्य पधारे।

हे शिव! मम जीवन शिव कर दे

हे शिव! मम जीवन शिव कर दे
हे शिव! मम जीवन शिव कर दे

नूतम वर्ष हर्ष से पूरित मंगलमय कर दे
जग के हर मानव के उर में वेद ज्ञान भर दे
मिटे अंधेरा होय सवेरा निर्मल मन कर दे
घोर तमिस्रा आर्य राष्ट्र की छिन्न-भिन्न कर दे

भारत को भा-रत कर दे तू मोह निशा हर ले
नवप्रभात से जीवन कलिका तू विकसित कर दे
नव उल्लास विश्व में व्यापे, तन,मन,सब पुलकित कर दे
क्लैव्यभाव दुःख दैन्य मिटाकर शौर्य ओज भर दे

भय विह्वल हर मानव उर में निर्भयता भर दे
संसृति का संत्रास मिटाकर लोक पूर्ण आलोकित कर दे
जीवन में नव ज्योति जगाकर अंधकार हर ले
वेदमंत्र की पावन ध्वनि से शोक मुक्त कर दे

विकृति से हम मुक्त सदा हों संस्कृति से संयुक्त सदा हो
ऐसा दिव्य भाव प्रलयंकर तन मन में भर दे
गरल पान कर मानवता का सुधा सिक्त वसुधा कर दे
शांति, सरलता, शुचिता, मुदिता जन-जन में भर दे

शतपथ का सन्मार्ग दिखाकर सकल विघ्न हर ले
संस्कृति का उत्थान करें हम तू ऐस वर दे।

स्वामी विवेकानन्द सरस्वती,
कुलाधिपति-गुरुकुल प्रभात आश्रम
टीकरी, भोला-झाल, मेरठ (उ.प्र.)

प्यारे-प्यारे अतिथि हमारे।।
थी हमें तुम्हारी अभिलाषा। थी शक्ति, न थी ऐसा आशा।
परमश्रेष्ठ है प्रिय यथेष्ठ है, हुए सुगन्धित सदन हमारे।।
प्यारे-प्यारे अतिथि हमारे।।१।।
उन पर अपना हृदय लुटायें और वन्दना क्या हम गायें।
स्नेह सखा सा लेकर आए, नारायण इस नर के द्वारे।।
प्यारे-प्यारे अतिथि हमारे।।२।।
हो उठी सुगन्धित वेदी है, दे रही ज्ञान बहु भेदी है।
चमक गए सब देव उपस्थित, पाकर प्रिय आदर्श तुम्हारे।।
प्यारे प्यारे अतिथि हमारे।।३।।

(सामश्रद्धा-देवातिथि)

गृहस्वामी द्वारा स्वागत में गाये गये गायत्री गीत को सुनकर तीनों बूढ़ों ने क्रमशः अपनी प्रतिक्रिया प्रस्तुत की। प्रगति प्रकाश जी बोल पड़े- इस सामगान गायत्री के प्रथम पद **श्रेष्ठं वो अतिथि स्तुषे** को आपने मेरे लिए बोला है- इसी को देव पूजा या देव स्तुति कहते हैं। इसकी धारणा से गृह समाज व राष्ट्र में सर्वप्रगति के द्वार खुलते हैं। स्तुति के द्वारा ही लक्ष्यों का निर्धारण होता है। ठीक है तो दूसरा मध्यवर्ती पद '**मित्रमिव प्रियम्** ' आपने मेरे लिए बोला है-प्रेम प्रकाश जी बोल पड़े। स्वाभाविक स्नेह स्वार्थ भावना से ऊपर उठकर किये जाने के कारण व्यक्ति सबका प्रिय बनता है। ठीक है। तत्काल प्रफुल्ल प्रकाश जी बोल पड़े- मन्त्र का अन्तिम पद बचा है और तीनों बूढ़ों में मैं बचा हूं। इसका तथ्य भी मेरे ही कथ्य को प्रकट करता है। '**अग्ने रथं न वेद्यम**' जीव मात्र को वे प्रभु ही आगे ले चलने वाले हैं। 'रथं न वेद्यम' रथ की भाँति जानने योग्य हैं। जिस प्रकार रथ से यात्रा की पूर्ति में सहायता मिलती है, इसी प्रकार मानव जीवन की यात्रा भी प्रभु रूप महारथ पर आश्रित होने पर ही पूर्ण होती है। प्रभु जो समृद्धि प्रदान करते हैं उसे आप पात्र जनों को दान करके प्रफुल्ल प्रकाश बन जाते हैं। हमें अपने नाम पर गर्व है।

जैसे कोई भी व्यक्ति अपने हिमाद्रि (शीतल शान्त सिर) से पहचाना जाता है, किन्तु उसके व्यक्तित्व व चरित्र को पहिचान उसके दोनों हाथ व उनके मध्य में स्थित हृदय रेखा से होती है वैसे ही व्यक्ति के हृदय में प्रेम प्रकाश और उसके पार्श्ववर्ती दोनों हाथों में प्रगति प्रकाश एवं प्रफुल्ल प्रकाश हो तो वह व्यक्ति सम्पूर्ण तथा यज्ञपुरुष अथवा राष्ट्र पुरुष बन जाता है। वेद व्याख्या ग्रन्थ शतपथ ब्राह्मण इस कथन का समर्थन करता प्रतीत होता है। वह कहता है- '**यज्ञों वै विष्णु**'- यज्ञ साक्षात् विष्णु है। '**विष्णुः वै राष्ट्रः**'- इस विष्णु का प्रत्यक्ष व्यवहार स्वरूप राष्ट्र है। किसी चित्रकार ने विष्णु की अथवा राष्ट्र की चार भुजायें बना दीं और चारों में शंख, चक्र, गदा एवं पद्म (कमल) पकड़ा दिये। जो स्वयंमेव अपनी भूमिका का प्रदर्शन करने लगे। ज्ञान से ही भूमि में व्योम तक शंख (शान्ति), कर्म के चक्रमण द्वारा समृद्धि, गदा स्वरूप शास्त्राभ्यास से राष्ट्र रक्षण और नितान्त श्रमशीलता के श्वेद- सरोवर में कमल खिलते हैं। इसी स्वाभाविक एवं शैक्षणिक अभ्यास के सूत्रधार ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र उपाधि धारी राष्ट्र की प्रतिष्ठित भुजायें है। पूर्वकाल की भाँति आज भी योग्यता-क्षमता-दक्षता अर्जित कर कोई भी व्यक्ति किसी भी पद-प्रतिष्ठा को प्राप्त कर लेता है। इसी पारस्परिक सहयोग, समन्वय की पृष्ठभूमि को स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती ने अपने ग्रन्थ अग्निहोत्र सर्वस्वं में यों व्यक्त किया है-

''**अनन्त योनियों में मनुष्य ही वह योनि है जिसे दस अंगुलियां वाले दो कर मिले हैं। इन करों की सार्थकता दया, दान और दक्षिणा से ही है। यदि इन करों ने अपनी थाली के ग्रास को किसी भूखे प्राणी के मुख तक नहीं पहुंचाया, यदि इन करों ने किसी दुखिया के जख्मों पर मरहम नहीं लगाया, यदि इन करों ने किसी दीन दरिद्र के सिर को नहीं सहलाया और इन करों ने समाज और राष्ट्र के हित कुछ दान नहीं किया तो, इनका होना व्यर्थ है। इसी अभ्यास के लिए ही तो हाथ को सीधा रखवाकर यज्ञाग्नि में आहुति दिलाई जाती है। उस समय हाथ को कोहनी से घुमाकर मुख की ओर नहीं लाया जाता।**'' आचार्यों के महा आचार्य स्वामी समर्पणानंद ने स्वार्थ से ऊपर ईर्ष्या विजय पर बल दिया है। वे अपने ग्रन्थ '**पञ्चयज्ञ प्रकाश**' में व्यक्त करते हैं। यज्ञ भावना का सबसे बड़ा शत्रु ईर्ष्या है। ईर्ष्या भी वास्तव में स्वार्थ का ही रूपान्तर है। यह उद्देश्य प्रणिधान ईर्ष्या पर विजय में किस प्रकार सहायक होता है, यह दृष्टान्त से समझाया जा सकता है।

कहते हैं कि एक समय एक राजा के दरबार में दो स्त्रियां एक बच्चे के विषय में झगड़ा करती हुई उपस्थित हुई। दोनों उस बच्चे को अपना कहती थी। महाराज कई दिन तक यत्न करने पर भी निर्णय न कर सके। राजा को चिन्तित देखकर रानी ने इसका कारण पूछा। महाराज ने सब वृतान्त कह सुनाया। रानी ने मुस्कराकर कहा- देव! यह अभियोग स्त्री जाति का है इसका निर्णय मैं करूंगी। अगले दिन रानी स्वयं सिंहासन पर विराजीं। दोनों स्त्रियां सामने लायी गईं। रानी ने निर्णय सुनाया- आराकश को बुलाकर इस बच्चे के मध्य से चीरकर आधा-आधा बांट दिया जाए। निर्णय सुनकर एक स्त्री बड़ी प्रसन्न हुई। बोल उठी क्या अच्छा निर्णय हुआ। झगड़ा ही न रहा। दूसरी सहम गई बोली- मुझे बच्चा नहीं चाहिए, मैंने अपना दावा छोड़ा, पर इसे चीरो मत। रानी ने कहा- ''सैनिकों जाओ, बच्चा उसे दे दो जो कहती है मेरा नहीं, वही सच्ची माँ है जिसे बच्चे की जान अपने अधिकार से अधिक प्यारी है।

वही सच्चा नागरिक व सिपाही है जिसे राष्ट्र अथवा अपने संगठन का उद्देश्य अपनी जान, अपने यश, अपने अधिकार से भी प्यारा है। इसी का नाम उद्देश्य-प्रणिधान, जो यज्ञ व संगठन का मूल मन्त्र है। लेखारम्भ के तीन बूढ़े कोई साधारण नहीं, प्रत्युत सकल शाश्वत वृद्धियों से परिपूर्ण यज्ञ, प्रभु के दिशा-दर्शक '**सदावृधः सखाः**' (सामः) समझना चाहिए।●

और ये अगरबत्तियाँ

- ओमप्रकाश आर्य -
मन्त्री-आर्य समाज रावतभाटा
व्हाया कोटा (राजस्थान)
चलभाष- ९४६२३१३७९७

यजुर्वेद के ७४ मन्त्रों के देवता यज्ञ हैं। १/२ ७,१५,२१,२७ से ३१,२/१,२,५, ३/४८,४९, ४/६,१०,२६,३७, ५/३,१३,५/२२ से २८, ५/४३, ६/३४, ७/२६, ८/६२, ६३, ९/२१, १७/५७, ६२, १८/४२, ६३ से ६५ १९/१६,१७, २२, २६ से २८, ३०,३१, २२/३४, २५/१४, २५/२६ से ४१, २७/१३, १७, ३७/४ से ६,८,३८/११ से २८- इन मन्त्रों के देवता यज्ञ हैं।

यज्ञ का शाब्दिक अर्थ है- देवपूजा, संगतिकरण और दान। देवपूजा अर्थात् अग्निहोत्र के माध्यम से प्रज्वलित अग्नि में घी और सामग्री से आहुति प्रदान करना। इस वैज्ञानिक प्रक्रिया के माध्यम से वातावरण की शुद्धि होती है, जिसके लिए वेद में बार-बार यज्ञ करने पर बल दिया गया है। इस आधुनिक सभ्य मानव के पास इतना समय नहीं कि वह यज्ञ कर सके। इसलिए उसने सस्ता और शार्टकट रास्ता ढूंढ लिया कि अगरबत्तियां जलाकर भगवान को प्रसन्न कर लिया जाए और वातावरण की शुद्धि भी हो जाए। क्या यह विधि उचित है? आइए, इस पर विचार करें-

राजस्थान पत्रिका ५-२-२०१८ में एक समाचार प्रकाशित हुआ- "**अगरबत्ती के धुएं से कैंसर का खतरा**" उस समाचार को ज्यों का त्यों उद्धृत कर रहा हूं- "**चीन के एक शोध में दावा किया गया है कि अगरबत्ती से निकलने वाला धुआँ सिगरेट से भी खतरनाक साबित हो सकता है। अगरबत्ती के धुएं के साथ बारीककण निकलते हैं जो हवा में घुलमिल जाते हैं। अध्ययन के अनुसार सुंगधित अगरबत्ती के धुएं में म्युटाजेनिक, जीनोटाक्सिक, साइटोटाक्सिक जैसे विषैले तत्व होते हैं, जिनसे कैंसर होने का खतरा रहता है। अगरबत्ती के हानिकारक धुएं से शरीर में मौजूद जीन का रूप परिवर्तित हो जाता है, जो कैंसर और फेफड़ों से जुड़ी बीमारियां होने की पहली स्टेज है और जेनेटिक म्यूटेशन से डीएनए में भी परिवर्तन हो सकता है।**'

उक्त समाचार दिल दहलाने वाला है। आज हर मन्दिर में, दुकान में, घर में पूजापाठ में, धार्मिक अनुष्ठान में किसी चीज के उद्घाटन के अवसर पर बिना किसी झिझक के अगरबत्तियां सुलगाई जाती हैं। घरों में तो भगवान को प्रसन्न करने के लिए आमजन इसका प्रयोग करते ही हैं। यदि उस समाचार पर विचार किया जाए तो पता चलेगा कि लोग कैंसर जैसी घातक बीमारी को अगरबत्ती जलाकर स्वयं निमंत्रण दे रहे हैं। इतना सस्ता नुस्खा जानलेवा साबित हो सकता है। इसलिए इसका परित्याग करके इसके स्थान पर गौघृत का दीपक जला लें तो ज्यादा अच्छा रहेगा। क्योंकि १० ग्राम गोघृत को दीपक में जलाने से अथवा यज्ञ में आहुति डालने से लगभग १ टन प्राणवायु उत्पन्न होती है तथा उससे वायुमंडल में एटोमिक रेडिएशन का प्रभाव कम हो जाता है।(आर्यावर्त केसरी १०-१६ मार्च २०१५) "गाय के घी में वैक्सीन एसिड, ब्यूटिक एसिड, वीटा कैरोटीन जैसे तत्व पाए जाते हैं जो शरीर में पैदा होने वाले कैंसरीय तत्वों से लड़ने की क्षमता रखते हैं। (उक्त ले. कीर्तिवर्धन)।

इससे सिद्ध हो रहा है कि यज्ञ एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है और ये अगरबत्तियां जलाना अवैज्ञानिक हानिकारक तरीका है। सिगरेट के धुएं से भी खतरनाक इसका परित्याग करना सर्वथा उचित है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने यज्ञ करने पर बल दिया है न कि अगरबत्ती सुलगाने पर। वे सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास में लिखते हैं- "**प्रत्येक मनुष्य को सोलह-सोलह आहुति और छः-छः माशे घृतादि एक-एक आहुति का परिणाम न्यून से न्यून चाहिए और जो इससे अधिक करे तो बहुत अच्छा है।**" वे लिखते हैं- "**होम का करना अत्यावश्यक है।**" घी में ही वह सामर्थ्य है जो दुर्गन्धित वायु को बाहर निकाल सकती है। अगरबत्तियों में वह गुण नहीं है, क्योंकि सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास में ऋषि प्रश्न करते हैं- "**केशर, कस्तूरी, सुगन्धित पुष्प और अतर आदि के घर में रखने से सुगन्धित वायु होकर सुखकारक होगा।**" वे इसका उत्तर देते हैं, "**उस सुगन्ध का वह सामर्थ्य नहीं है कि गृहस्थ वायु को बाहर निकालकर शुद्ध वायु को प्रवेश करा सके, क्योंकि उसमें भेदक शक्ति नहीं है।**" उक्त उदाहरण से स्पष्ट हो गया कि अगरबत्ती में भेदक शक्ति नहीं है जो वायु को बाहर निकाल सके। इसलिए जहां ये अगरबत्तियां जलाई जाती है वहां की वायु वैसे का वैसे ही रहती है और वह विषाक्त तत्वों से मिली होने के कारण रोगोत्पन्न करने का कारण बन जाती है। अग्नि का प्रज्वलित होना आवश्यक है, यह वैज्ञानिक विधि है।

कैंसरकारक सस्ते नुस्खे न अपनाकर यज्ञ की और लौटने से कल्याण होगा। यह ऋषियों का दिया हुआ बहुत बड़ा विज्ञान है। यज्ञ पर अनेक शोध हुए हैं और सबने यह सिद्ध किया है कि यह लाभकारी है। अगरबत्तियों पर अनेक बार लेख प्रकाशित हुए हैं। आवश्यकता इस बात की है कि इस पर और शोध होने चाहिए और उनके हानिकारक प्रभाव लोगों को पता चलना चाहिए। यदि इस पर और विस्तृत लेख प्रकाशित किए जाए तो आमजन का बहुत भला होगा।

आदि मानव का उत्पत्ति स्थान और महर्षि दयानन्द

- जगदीश प्रसाद आर्य -
गिरदौड़ा (नीमच) म.प्र.
चलभाष- ८९८९६९५३४२

यह लेख वैदिक संसार जनवरी १८ में छपे आर्यों के मूल स्थान पर विमर्श की अगली कड़ी है। उक्त लेख से हम इस नतीजे पर पहुंचे थे कि हिमालय की तलहटी और उसके समानान्तर फैला सिन्धु-गंगा का मैदान आर्यों का मूल निवास स्थान था। न तो वे अन्य किसी देश से यहां आए और न इस विशाल मैदान के किसी एक भाग में सिमट कर रहे, अपितु इस सम्पूर्ण मैदान में बुद्धकाल- महाभारतकाल- रामायण काल और उसके सुदूर अतीत तक आर्य राज्यों की उपस्थिति के प्रमाण प्रस्तुत किए थे। यह भी सुनिश्चित किया था कि हिमालय की उपत्यकाओं से उतर कर वे मैदानी भाग में अभिजनित होते रहे और दक्षिण की ओर बढ़ते भी रहे, तथापि हिमालय के प्रति उनका लगाव कम नहीं हुआ, वहां आना-जाना पर्याप्त बना रहा, उनके कुलों के कुछ राज्य वहां स्थित भी रहे।

अब प्रश्न उठ सकता है कि हिमालय में आर्य कब और कहां से आए? उनके पूर्व? उसके भी पूर्व? ऐसे प्रश्न वास्तव में अन्तहीन होते हैं और मानव की आदि सृष्टि पर जा के समाप्त होते हैं। यह तो निर्विवाद सत्य है कि सब धर्म और जातियां अपने आदि पुरुष/ पुरुखों को देवता मानते हैं और उनकी उत्पत्ति स्वर्ग में स्वीकार करते हैं। यहूदी ईसाई और मुसलमान हजरत आदम को अपना आदि पुरुष मानते हैं और स्वीकारते हैं कि खुदा ने उनका सृजन स्वर्ग में अदन की बाड़ी में किया था। हिन्दू स्वर्ग स्थित ब्रह्मा के मानस पुत्रों, दक्ष आदि सात प्रजापतियों से सृष्टि का प्रारम्भ मानते हैं, परन्तु स्वर्ग को लेकर मतमतान्तरों की अपनी-अपनी अवधारणाएं हैं और उसका स्थान भी सुनिश्चित नहीं हो सकता। उस आकाशीय और कल्पित स्वर्ग से प्रथम मानवोत्पत्ति के प्रश्न सुलझाने में कोई सहायता नहीं मिल सकती। फिर भी आदि मानव सृष्टि का स्वर्ग में स्वीकार का भी निश्चित महत्वपूर्ण है।

यदि पूर्वाग्रहों को ढीला कर विचार करें तो स्वर्ग के पृथ्वी पर होने के प्रमाण मिल जाते हैं। पिछले लेख में महाभारत से एक सन्दर्भ उपस्थित किया गया था, जिसमें महर्षि धौम्य युधिष्ठिर का हाथ पकड़ कर संकेत से भिन्न-भिन्न देवताओं के स्थान दिखाते हुए कह रहे थे-

ततो युधिष्ठिर धौम्यो गृहीत्वा दक्षिणे करे।
प्राची दिशामाभि प्रेक्ष्य महर्षि रिदमब्रवीत् ।।

वनपर्व १६३/३

इस पूरे अध्याय में वे अनेक देवताओं के स्थान दिखाते पाये जाते हैं, विशेष कर श्लोक ६ से २३ तक इन्द्र, कुबेर, यम, वरुण, दक्ष, प्रजापति, ब्रह्मा और विष्णु के स्थान दिखाये। देवों का स्थान स्वर्ग में होना तो सर्वमान्य है। हाथ के संकेत से दिखाना साक्षात् पृथ्वी पर होने को पुष्ट करता है। यह बात कोष ग्रन्थों से भी प्रमाणित होती है। अमर कोष में स्वर्ग के निम्नलिखित दस नाम (पर्यायवाची) दिये हैं-

स्वख्ययं स्वर्ग नाक त्रिदिव त्रिदशालयाः।
सुरलोकोद्यौर्दिवोद्वेजर्स्त्रयां क्लीबे त्रिविष्टषम् ।।

अमरकोष स्वर्ग वर्ग ६

हलायुध कोष में स्वर्ग के ग्यारह पर्यावाची इस प्रकार लिखे हैं-

स्वः स्वर्गः सुरलोकः त्रिदशावासः त्रिविष्टपम् ।
द्यौर्गोरम त्यंभुवनं नाकः स्यादूर्ध्व लोकश्च।।

हलायुद्ध कोष स्वर्गकाण्ड-३

उपर्युक्त दोनों कोषों में त्रिविष्टप शब्द स्वर्ग के पर्यायों में पठित है जो कि तिब्बत का वाचक है। इस पर भी जो सज्जन स्वर्ग के पृथ्वी से बाहर होने की मानसिकता रखते हैं उन्हें चाहिए कि म.भा. के इस प्रसिद्ध सन्दर्भ पर विचार करें- जब पाण्डव, वनवास काटते हुए हिमालय में भटक रहे थे, द्रौपदी के आग्रह पर भीमसेन सौगन्धिक कमल पुष्प लाने हेतु अपने मार्ग पर बढ़ता चला जा रहा था कि अकस्मात् उसकी भेंट हनुमान से हो गई। भीम हनुमान को पहले से पहचानता न था। अपना मार्ग रोककर लेटा वह अतिकाय वानर भीम को ऐसा लगा जैसे स्वर्ग का मार्ग रोककर हिमालय खड़ा हो

तं वानखरं धीमानति कायं महाबलम् ।
स्वर्ग पन्थानमावृत्य हिमवन्त मिनाचलम् ।।

वनपर्व १४६/६

स्पष्ट है, हिमालय स्वर्ग के मार्ग का अवरोध है। भीम की तुलना असुर जाति से तो इसके साथ का अगला प्रमाण देखिये, जिसमें कहा है कि हनुमान ने भीम के ही कारण स्वर्ग का मार्ग इस हेतु से रोका जिससे भीम मार्ग पर आगे न जा सके।

दिवं गमं रुरोधाय मार्गं भीमस्य कारणात् ।
अनेन हि पथा मावै गच्छेदिति विचार्य सः।।

वनपर्व १४६/६६

और भी- महाभारत के शान्ति पर्व जिसके वक्ता शरशय्यागत भीष्म पितामह हैं क्या कहते हैं?

उत्तरे हिमवत् पार्श्वे पुण्ये सर्वगुणान्विते।
पुण्यः क्षेमश्च कामश्च स परलोक उच्यते ।।

शान्ति पर्व १९२/७

यहां हिमालय के उत्तर बाजू में परलोक को स्थित कहा है तो हिमालय के बगल वाला स्थान पृथ्वी के बाहर कैसे हो सकता है। वास्तव में वह उत्तर बाजू में होने से ही हो सकता है और नहीं/अस्तु/

हिमालय को देवतात्मा तो कहा ही है। अब इसकी अतिकाय देव के रूप में कल्पना कर देखिये जो पश्चिम में सिर रख कर लेटा हुआ है। इस स्थिति में अरुणांचल में उसके पैर होंगे। बायीं बाजू में तिब्बत तथा दाहिनी बाजू में सिन्धु गंगा का मैदान होगा। इस प्रकार हिमालय के उत्तर में स्वर्ग/त्रिविष्टप/ परलोक होने की गुत्थी सुलझ जाती है।

म.भा. के स्वर्गारोहण पर्व और महाप्रस्थानिक पर्व के कथा प्रवाह से यह बात और अधिक स्पष्ट हो जाती है जिसे यहां संकेत मात्र दे रहे

हैं- युद्ध में पाण्डवों की विजय उपरान्त युधिष्ठिर का राज्याभिषेक हुआ, कृष्ण द्वारका लौट गए, वहां मौसल काण्ड होकर यादवों का महाविनाश हो गया, कृष्ण बलराम का भी दुःखद अन्त हुआ। इत्यादि घटनाओं से युधिष्ठिर को राज्य से विरक्ति हो गई। अर्जुन के पौत्र परीक्षित को राजपाट सौंपकर उन्होंने द्रौपदी और भाइयों सहित राज्य से अन्तिम विदा ली। महाप्रस्थान में विभिन्न स्थानों से गमन करते हुए उत्तर में पहुंचे तो महान् हिमालय को देखा-

ततस्ते नियतात्मानः उदीची दिशमास्थिताः।
ददर्शुर्योगयुक्ताश्च हिमवन्तं महागिरिम् ।।

महाप्रस्थानिक २/१

हिमालय में चलते-चलते क्रमशः द्रौपदी, सहदेव, नकुल और अर्जुन गिरकर पञ्चत्व को प्राप्त होते गए। भीष्म प्रश्न पूछते और युधिष्ठिर आगे बढ़ते हुए उत्तर देते जाते। अब भीम स्वयं गिरे, गिरते-गिरते प्रश्न किया, युधिष्ठिर ने बिना पीछे देखे उत्तर देकर आगे बढ़ गए। साथ में एक कुत्ता भी था जो यात्रा के आरम्भ से उनके साथ था-

इत्युक्तवा तं महाबाहुर्जगामानवलोकयन् ।
श्वाप्ये कोऽनुययौ यस्ते बहुशः कीर्तितो मया।

महाप्रस्थानिक २/२६

जैसे ही उन्होंने हिमालय पार किया, वहां देवराज इन्द्र रथ लेकर तैयार कड़े थे, बोले सवार हो जाइये।

ततः सन्नादयञ्शक्रो दिवं भूमिं च सर्वशः।
रथेनोपययौ पार्थमारोहेत्यब्रवीच्च तम् ।। वही ३/१

इसके पश्चात् कुत्ते को साथ ले जाने के प्रश्न पर इन्द्र युधिष्ठिर का सम्वाद, युधिष्ठिर द्वारा स्वर्ग जाने से इन्कार, कुत्ते के स्थान पर स्वयं इन्द्र का प्रकट होकर युधिष्ठिर की परीक्षा के लम्बे सन्दर्भों को प्रकृत विषय से असम्बद्ध होने से छोड़ कर इन्द्र के युधिष्ठिर को स्वर्ग ले जाने पर आते हैं। सब देव और देवर्षि आग्रह के साथ युधिष्ठिर को रथ पर बैठाकर स्वर्ग को चल पड़े-

ततो धर्मश्च शक्रश्च मरुतश्चश्विनावपि।
देवाः देवर्षयश्चैव रथ मारोप्य पाण्डवम् ।।
प्रययुः स्वैर्विमानैस्ते सिद्धाः कामविहारिणः।।

वही ३/२३,२४

युधिष्ठिर स्वर्ग पहुंचे। वहां दुर्योधन को वैभवयुक्त सिंहासन पर बैठे पाया-

स्वर्गं त्रिविष्टपं प्राप्य धर्मराजो युधिष्ठिरः।
दुर्योधनं श्रियाजुष्टं ददर्शासीनमासने।।

स्वर्गारोहण पर्व १/४

यहां स्पष्ट रूप से त्रिविष्टप को स्वर्ग कहा है। इस प्रकार एक नहीं म.भा. में पचासों बार स्वर्ग और त्रिविष्टप समानार्थ में प्रयुक्त हुए हैं। पर इस सन्दर्भ का प्रस्तुत करने का मूल उद्देश्य यह प्रश्न उठाना है कि युधिष्ठिर को आदर के साथ ले जाना ही था तो इन्द्र ने उन्हें इतना थकाया, पचाया क्यों? क्या तनिक आगे जाकर नहीं ला सकते थे। वनवास काल में पहले जब अर्जुन शस्त्रास्त्र लेने स्वर्ग गए थे तब भी उनको लाने के लिए इन्द्र ने रथ भेजा था। वहां भी ऐसा ही प्रश्न उपस्थित होता है। इन्द्र का सारथी मातली अर्जुन से कहता है-

अस्माल्लोद्देवलोकं पाक शासन शासनात् ।
आरोहत्वं मया सार्धं लब्धास्त्र पुनरैरेष्यसि।। वनपर्व ४२/२१

अर्थात् -इन्द्र के आदेश से इस लोक से देवलोक चलने के लिए तुम मेरे साथ रथ पर सवार हो जाओ फिर शस्त्रास्त्र प्राप्त करके वापस आओ। निम्नलिखित श्लोकों और उनके अर्थ पर ध्यान केन्द्रित कीजिए-

ततः पितृन यथान्याय तर्पयित्वा यथा विधिः।
मन्दरं शैल राजं तंमाप्रष्टुमुपचक्रमे।। वनपर्व ४२/१४
एवमुक्त्वार्जुनः शैलमामन्त्र्य परवीरहा।
आसरोह रथं दिव्यं द्योतयान्निव भास्करः वही ४२/२९

प्रथम श्लोक में कहा है- अर्जुन ने पितरोंका तर्पण करके पर्वतराज हिमालय से विदाई की आज्ञा मांगी। दूसरे श्लोक में- प्रतिपक्षी वीरों का विनाशक अर्जुन इस प्रकार कह कर हिमालय पर्वत से आज्ञा लेकर उस दिव्य रथ पर सूर्य के समान प्रकाशित करते हुए आरूढ़ हो गया। अलंकारिक बातों को छोड़ दें तो बात इतनी सी कही है कि अर्जुन ने हिमालय से विदाई की आज्ञा ली और उससे पूछ कर रथ पर चढ़े। पूछना, आज्ञा लेना तो औपचारिकता भर है, तात्पर्य यही है कि अर्जुन अब हिमालय को छोड़ तिब्बत के पठार में प्रवेश कर रहे थे। अब इसी से उस प्रश्न का समाधान भी प्राप्त हो जाता है जो ऊपर उठाया था। हिमालय

निर्वाचन

गुजरात प्रान्त की प्रमुख संस्था आर्य समाज, महर्षि दयानन्द मार्ग, रायपुर दरवाजा बाहर, अहमदाबाद में दिनांक ३१ मार्च २०१८ को सम्पन्न हुए निर्वाचन में सर्वसम्मती से सुप्रसिद्ध आर्य विद्वान श्री कमलेश कुमार शास्त्री जी को प्रधान पद पर मन्त्री के रूप में श्रीमती शशी बहन कंसारा, कोषाध्यक्ष के रूप में श्री शशिकान्तभाई आर्य तथा श्री लाभेन्द्र जी शास्त्री को पुस्तकाध्यक्ष का उत्तरदायित्व सौंपा गया है। - पूनमचन्द नागर, वरिष्ठ उपप्रधान

आचार्य बृहस्पति जी वैदिक विद्वान सम्मान से सम्मानित

आर्य समाज (काकड़वाड़ी), मुंबई द्वारा आयोजित १४४वें आर्य समाज स्थापना दिवस समारोह पर (दिनांक१८.०३.२०१८) वर्णाढ्य परिवेश में मुंबई नगर तथा उपनगरों के सभी पदाधिकारी एवं सदस्यों की महनीय उपस्थिति में आचार्य बृहस्पति शास्त्री, गुरुकुल नवप्रभात वैदिक विद्यापीठ (उड़ीशा) को आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई द्वारा **'आर्य वैदिक विद्वान सम्मान'** से सम्मानित किया गया। सम्मानस्वरूप अभिनन्दनपत्रम् , उप ढौकन, माल्य, श्रीफल एवं पच्चीस हजार रुपए का चैक प्रदान किया गया। अतः गुरुकुल नवप्रभात वैदिक विद्यापीठ (उड़ीशा) मुंबई के सभी समाजों को अपनी हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापन करता है।

की सीमा में दुर्गम शिखरों, घाटियों और हिमनदों में रथ नहीं जा सकता था। यह भौगोलिक विवशता थी, अतः हिमालय को पैदल पार करने के अतिरिक्त अन्य गति नहीं थी। इसी कारण नेपाल में लम्बी दूरी की यात्रा में आज हवाई यात्रा अधिक उपयुक्त है। स्थल परिवहन अनुकूल नहीं है, रेल तो है ही नहीं। इस भौगोलिक परिस्थितिवश अर्जुन फिर युधिष्ठिर को पैदल ही हिमालय पार जाना पड़ा और तिब्बत की सीमा पर पहुंचते ही रथ प्राप्त हो सका। युधिष्ठिर के संदेह स्वर्ग जाने का यही रहस्य है कि वे त्रिविष्टप/ तिब्बत गए, कल्पित स्वर्ग नहीं।

इस प्रकार स्वर्गारोहण की इस कथा को कल्पित कहकर उड़ाया नहीं जा सकता। वास्तव में यह मानव के आद्य उत्पत्ति स्थल के प्रति आर्यों के अविच्छित मोह को रेखांकित करता इतिहास का धूमिल पृष्ठ है। इसी कथानक पर एकभिन्न दृष्टि से भी विचार किया जाता है। पाण्डवों के जीवन में दोबार हिमालय प्रवास का प्रसंग आता है । प्रथम बार जुए में हार कर, शर्त अनुसार बारह वर्ष का वनवास भोगना, जिसकी कथा वन पर्व में सविस्तार वर्णित है। बारह वर्ष का समय थोड़ा नहीं था। इस लम्बे समय में हिमालय का भरपूर अवलोकन वे कर चुके थे। अतः दूसरी बार जब विरक्त होकर राज्य त्याग कर निष्क्रमण किया तो किसी अन्य स्थान की ओर उन्मुख होते यह स्वाभाविक लगता है। पर नहीं! उन्होंने फिर हिमालय की राह पकड़ी। आखिर क्यों? वे जानते थे कि हिमालय के उस पार स्वर्ग जो हमारे आद्य पूर्वजों का उत्पत्ति स्थल है, इसी धरती पर है, भाई अर्जुन एक बार पहले भी वहां जाकर अस्त्र-शस्त्र ले आया है, मार्ग ज्ञात है साथ ही अपना यह अन्य समय है... यही वे डोर थीं जो युधिष्ठिर को पूर परिवार सहित हिमालय की ओर खींच रही थी।

ययाति और नहुष की पौराणिक कथायें जिनमें उनके स्वर्ग प्राप्त करने, कुछ काल तक स्वर्गीय ऐश्वर्य भोगने और भ्रष्ट होकर पुनः पृथ्वी पर पतित होने की वर्णनों में इतनी सच्चाई तो अवश्य है कि स्वर्ग पृथ्वी पर ही अवस्थित था। वहां की व्यवस्था के अनुकूल आर्यों का वहां आना-जाना बना रहता था।

पुनः आचार भ्रष्टों को वहां के विधानानुसार बलात् निष्कासित भी कर दिया जाता था मेघदूत में कुबेर द्वारा यक्ष का निर्वासन इस धारणा की पुष्टी करता है। नारद के स्वर्ग से पृथ्वी और पृथ्वी से स्वर्ग जाने आने के सन्दर्भ पुराणों में पदे-पदे प्राप्त होते हैं। कोष ग्रन्थों , महाभारत, महाकाव्यों और पुराणाख्यानों के प्रकाश में स्वर्ग हिमालय के उत्तर पार्श्व में सिद्ध होता है और वह तिब्बत ही हो सकता है।

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश अष्टम समुल्लास में लिखा- ''**प्रश्न- मनुष्यों की आदि सृष्टि किस स्थल में हुई?**

उत्तर- त्रिविष्टप अर्थात् जिसको तिब्बत कहते हैं।

प्रश्न- आदि सृष्टि में एक जाति थी वा अनेक?

उत्तर- एक मनुष्य जाति थी। पश्चात् '**विजानि ह्यार्यानि ये च दस्यवः**' यह ऋग्वेद का वचन है श्रेष्ठों का नाम विद्वान देव और दस्यु दो नाम हुए।

प्रश्न- यहां कैसे आए?

उत्तर- जब आर्य और दस्युओं में अर्थात् विद्वान जो देव, अविद्वान जो असुर उनमें सदा लड़ाई, बखेड़ा हुआ किया। जब बहुत उपद्रव होने लगा तब आर्य लोग सब भूगोल में उत्तम इस भूमि के खण्ड को जानकर यहीं आकर बसे। इसी से इस देश का नाम आर्यावर्त हुआ।' इत्यादि जो लिखा है वह निराधार कल्पना नहीं, अपितु सुपरीक्षित सत्य तथ्य है। मानव जाति के पूर्वज सबके एक ही हैं। आर्य दस्यु का भेद गुणवाचक है। भिन्न कुल/ जाति वाचक नहीं। सजातियों में भी परस्पर संघर्ष होते ही है और संघर्ष से विभाजन भी होता है। ऐसे विभाजन आर्यों में भी होते रहे। तभी तो अमरकोष में देव योनियों के दस नाम दिये हैं जो हिमालय और तिब्बत में बसती थी।

विद्याधरोऽप्सरो यक्ष रक्षो गन्धर्व किन्नराः।
पिशाचों गुह्यकः सिद्धो भूतोऽमी देव योनयः।।

अमर कोष स्वर्ग वर्ग ११

आर्य द्रविड़ों के संघर्ष की कल्पना करने वाले क्या इन देव योनियों को आर्यों से बाहर सिद्ध करेंगे। विशेषकर तब जब पुराणों में देवों के ही परस्पर युद्ध के विस्तृत वर्णन उपलब्ध हैं। उदाहरणार्थ शिव द्वारा दक्ष प्रजापति के यज्ञ का विध्वंस, देवासुर संग्राम को आर्य द्रविड़ युद्ध के रूप में घटाने वालों को पहले यह भी सिद्ध करना होगा कि आर्यों से पहले द्रविड़ इस देश में कब और कहां से आकर बसे थे? उन्होंने इस देश को किस नाम से पुकारा? आर्यों के भारत आगमन पर पोथे रचने वालों को द्रविड़ों के आगमन का इतिहास भी देना ही चाहिए।

अस्तु! तिब्बत में मानव की आदि सृष्टि होकर हिमालय के रास्ते उनकी शाखाओं का भारत में प्रवेश हो उसी से सटे सिन्धु गंगा के मैदान में आर्यों का बसना इस सहज अवधारणा को ठुकराकर मध्य एसिया से दूर की कौड़ी लाना किसी कसौटी पर नहीं ठहर सकता।

इस प्रकार हमने देखा कि सुदूर अतीत से लेकर म.भा. काल तक त्रिविष्टप/ स्वर्ग में आर्यों का निरन्तर जाना-आना रहा। परन्तु महाभारत से वर्तमान तक इस तथ्य को पौराणिक मिथक के रूप में अतिरंजित कर परोसे जाने से इतिहास पर धुन्ध की परतें चढ़ती गई। स्वर्ग कल्पित और आकाशीय हो गया। तीर्थों का स्वरूप और यात्रा के उद्देश्य बदल गए। आदि मानव की सृजन स्थली के रूप में उसकी पहचान समाप्त हो गई। देश और राष्ट्र की नवीन अवधारणाएँ विकसित होकर पासपोर्ट और वीजा के अवरोध खड़े हो गए। ऐसे में स्वर्ग की यात्रा कहां गुम हो गई? यह प्रश्न है।

हिन्दुओं की मानसरोवर यात्रा बराबर होती रही है। मानसरोवर तिब्बत में स्थित है जो सम्प्रति चीन के प्रभुत्व में है। कोष मानसरोवर को स्वर्ग का सरोवर कहता है- '**मानसं त्रेदशं सरः।** (अनेकार्थ ध्वनि मंजरी कोष अर्ध श्लोकाधिकार श्लोक ६१) अतः निश्चित ही वह विष्णु का क्षीरसागर सिद्ध होता है। विष्णु के बैकुण्ठ में राज्य करने और क्षीर सागर में शयन की पुष्टी में समस्त पुराण साहित्य खड़ा है। लेख में प्रदत्त उदाहरणों और सन्दर्भों को पदचिन्हों के रूप में चित्त में रखेंगे तो मानसरोवर यात्रा ही तिब्बत की, त्रिविष्टप स्वर्ग की और अन्त में मानव के आदि सृष्टि स्थल की यात्रा में परिणित होती मिलेगी। ●

सत्यार्थ प्रकाश में मनुष्यों की उत्पत्ति तथा आर्यो सम्बन्धी विचार

- खुशहालचन्द्र आर्य -
१८० महात्मा गान्धी रोड (दो तल्ला)
कोलकत्ता (पश्चिम बंगाल)
चलभाष - ०९८३०१६५७९४

महर्षि दयानन्द ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के अष्टम समुल्लास में मनुष्यों की उत्पत्ति तथा आर्य भारत के आदि निवासी हैं, इनके सम्बन्ध में अपने विचार प्रश्नोत्तर शैली में नीचे लिखे अनुसार प्रस्तुत किए हैं-

प्रश्न- मनुष्य की सृष्टि प्रथम हुई, वा पृथ्वी आदि की?

उत्तर- पृथिवी आदि की/ क्योंकि पृथिव्यादि के बिना मनुष्य की स्थिति और पालन नहीं हो सकता।

प्रश्न- सृष्टि के आदि में एक वा अनेक मनुष्य उत्पन्न किये थे, वा क्या?

उत्तर-अनेक! क्योंकि जिन जीवों के कर्म ऐश्वरी सृष्टि में उत्पन्न होने के थे, उनका जन्म सृष्टि के आदि में ईश्वर देता है, क्योंकि **'मनुष्य ऋषयश्चये ततो मनष्या अजायन्त'** यह यजुर्वेद में लिखा है। इस प्रमाण से यही निश्चय है कि आदि में अनेक अर्थात् सैकड़ों, सहस्त्रों मनुष्य उत्पन्न हुए और सृष्टि में देखने से भी निश्चिय होता है कि मनुष्य अनेक माँ-बाप की सन्तान हैं।

प्रश्न- आदि सृष्टि में मनुष्य आदि की बाल्य, युवा व वृद्धावस्था में सृष्टि हुई थी, अथवा तीनों में।

उत्तर- युवावस्था में। क्योंकि जो बालक उत्पन्न करता तो उनके पालन के लिए दूसरे मनुष्य आवश्यक होते। जो वृद्धावस्था में बनाता तो मैथुनी सृष्टि न होती, इसलिए युवावस्था में सृष्टि की है।

प्रश्न- कभी सृष्टि का आरम्भ है या नहीं।

उत्तर- नहीं, जैसे दिन के पूर्व रात और रात के पूर्व दिन तथा दिन के पीछे रात और रात के पीछे दिन बराबर चला आता है इसी प्रकार सृष्टि के पूर्व प्रलय और प्रलय के पूर्व सृष्टि तथा सृष्टि के पीछे प्रलय और प्रलय के आगे सृष्टि, अनादि काल से चक्र चला आता है। इसकी आदि वा अन्त नहीं, किन्तु जैसे दिन व रात का आरम्भ व अन्त देखने में आता है, उसी प्रकार सृष्टि और प्रलय का आदि अन्त होता रहता है, क्योंकि जैसे परमात्मा, जीव, जगत् का कारण तीन स्वरूप अनादि है, वैसे जगत् की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय प्रवाह से अनादि है। जैसे परमेश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव अनादि है वैसे ही उसके जगत् की उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय करना भी अनादि है। जैसे कभी ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव का आरम्भ और अन्त नहीं, इसी प्रकार उसके कर्त्तव्य-कर्मों का भी आरम्भ और अन्त नहीं।

प्रश्न- ईश्वर ने किन्हीं जीवों को मनुष्य जन्म किन्हीं को सिंहादी क्रूर जन्म, किन्हीं को हिरण, गाय आदि पशु, किन्ही को वृक्षादि, कृमि, कीट, पतंगा जन्म दिये हैं, इससे परमात्मा में पक्षपात आता है।

उत्तर- पक्षपात नहीं आता, क्योंकि उन जीवों के पूर्व सृष्टि में किये हुए कर्मानुसार व्यवस्था करने से जो कर्म के बिना जन्म देता तो पक्षपात आता।

प्रश्न- मनुष्यों की आदि सृष्टि किस स्थल में हुई।

उत्तर- **'त्रिविष्टप्'** अर्थात् जिसको तिब्बत कहते हैं।

प्रश्न. आदि सृष्टि में एक जाति थी वा अनेक?

उत्तर- एक मनुष्य जाती थी, पश्चात् **विजानी ह्याय्यानि य च दस्वयंवः।** यह ऋग्वेद का वचन है।।

श्रेष्ठों का नाम आर्य, विद्वान, देव और दुष्टों के दस्यु अर्थात् डाकू मूर्ख और अनाड़ी नाम होने के **'आर्य'** और **'दस्यु'** दो नाम हुए।

''उत भूद्रे उतार्ये''- ऋग्वेद।।

आर्यों में पूर्वोत्तर प्रकार से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र चार भेद हुए। द्विज विद्वानों का नाम आर्य और (जो पढ़ाने से भी न पढ़े) ऐसे लोगों का नाम **'शूद्र'** है।

(नोट- शूद्रों को व्यवहारिक कामों को करने का अधिकार है, परन्तु जो पढ़ाने से भी न पढ़े, ऐसे मन्दबुद्धि वालों को शूद्र कहा गया है, उनका काम अन्य तीन वर्ण ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्यों की सेवा करने का दिया गया है, जो उचित है।)

प्रश्न- फिर वे कहां से आए?

उत्तर- जब आर्य और दस्युओं अर्थात् विद्वानों और अविद्वानों में सदा लड़ाई बखेड़ा होना आरम्भ हो गया और जब बहुत उपद्रव होने लगा तब आर्य लोग सब भूगोल में उत्तम इस भूमि के खण्ड को जानकर यहीं आकर बस गए। इसी से इस देश का नाम आर्यावर्त्त हुआ।

प्रश्न- प्रथम इस देश का नाम क्या था और इसमें कौन बसते थे?

उत्तर- इसके पूर्व इस देश का नाम कोई भी न्हीं था और न कोई आर्यों के पूर्व इस देश में बसते थे। क्योंकि आर्य लोग ही सृष्टि की आदि में कुछ काल के पश्चात् तिब्बत से सीधे इसी देश में आकर बसे थे।

प्रश्न- कोई कहते हैं कि वे लोग ईरान से आये, इसी से इन लोगों का नाम आर्य हुआ है। इनके पहले यहां जंगली लोग बसते थे, जिनको असुर और राक्षस कहते थे। आर्य लोग अपने को देवता बतलाते थे और उनका जब संग्राम हुआ, उसका नाम देवासुर संग्राम कथाओं में ठहराया।

उत्तर- यह बात सर्वथा झूठ है।●

वसु बनो

- नरेंद्र आहूजा 'विवेक' -
६०२ जी.एच. ५३, सेक्टर-२०
पंचकूला, हरियाणा
चलभाष- ९४६७६०८६८६

संसार का उपकार करने के मुख्य उद्देश्य की प्राप्ति के लिए वसुओं की श्रेणी में आने वाले विद्वानों को समस्त मानव समाज को उन्नति के पथ पर लेकर चलने का गुरुत्तर कार्य करना चाहिए। संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य देव दयानन्द ने बताया है। साथ ही सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझने का संदेश दिया है। समाज को निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर रखने का दायित्व वसुओं की श्रेणी में आने वाले विद्वानों से अपेक्षित है।

अब पहला प्रश्न उठता है कि वसु कौन होते हैं? साधारण शब्दों में वसु अर्थात् निवास स्थान. धरती माता हम सभी प्राणियों के लिए वसु है जिसके आश्रय में हम रहते हैं। अब इस यौगिक अर्थ को समझें तो जिन विद्वानों के आश्रय में अर्थात् दिखाए सही श्रेय मार्ग पर लोग चलते हैं वह मनुष्यों के लिए वसु की श्रेणी में आते हैं, परन्तु क्या मनुष्य समाज का नेतृत्व करना उन सभी को एक साथ एक उन्नति के मार्ग पर ले चलना क्या इतना सरल कार्य है। इसके लिए विद्वानों को किन बातों का विशेष ध्यान रखना पड़ेगा यह जानना अत्यंत महत्वपूर्ण है, इसके लिए ऋग्वेद का मंत्र स्पष्ट संदेश देता है।

पाकत्रा स्थन देवा हृत्सु जानीय मर्त्यम् ।
उपद्वयुं चाद्वयु च वसवः।।

अर्थात् हे वसु विद्वानों! आपके लिए अपेक्षित है कि आप पाकत्रा अर्थात् परिपक्व व ज्ञान वाले बनो और मरणधर्मा मनुष्यों की प्रकृति को अपने अन्तःकरण में सही-सही पहचानों और नीर क्षीर विवेकी बनकर सही और गलत, सत्य और असत्य को यथावत पहचान कर सबको एक साथ प्रगति के पथ पर लेकर चलों।

समाज का नेतृत्व करने वाले व्यक्ति के लिए परिपक्व ज्ञान वाला होना आवश्यक है। यानि यदि विद्वान समाज को नेतृत्व करना चाहता है तो उसे सभी अलग-अलग वृत्तियों वाले मनुष्यों उनकी समस्याओं और समस्याओं के समाधान का सम्यक ज्ञान होना अत्यंत आवश्यक है। क्रान्तदर्शी देव दयानन्द महान् समाज सुधारक बनकर सम्पूर्ण विश्व के उत्थान के लिए ईश्वरीय वेदज्ञान का मार्ग प्रशस्त करने से पूर्व सम्पूर्ण समाज उसकी समस्याओं, विषमताओं, कुरीतियों, पाखण्डों का पूरा यथावत सम्यक परिपक्व ज्ञान प्राप्त किया तभी उनका समाधान वेद ज्ञान के आधार पर दिया। इसी प्रकार स्वामी श्रद्धानन्द ने दलितोद्धार का बीड़ा उठाने से पूर्व दलितों की सामाजिक स्थिति, उनकी समस्याओं और समाज में फैले जातिवाद के विष को समझा और फिर इस परिपक्व ज्ञान को पाकर ही समाधान प्रस्तुत करते हुए दलितोद्धार सभा की स्थापना करके उसका नेतृत्व किया। अर्थात् समाज का नेतृत्व करने वाले विद्वानों को समाज की स्थिति का सम्पूर्ण ज्ञान, समस्याओं का आंकलन और समाधानं लेकर ही प्रयास करना पड़ेगा। समाज को उन्नति के पथ पर ले जाने के लिए विद्वानों द्वारा नेतृत्व देने की स्थिति को घर के मुखिया द्वारा पूरे परिवार को एकजुट रखकर सबका कल्याण करने की कोशिशों से बड़ी आसानी से समझा जा सकता है। घर के मुखिया को घर के सभी सदस्यों की मनोभावनाओं, अन्तर्विरोधों को उनके आपसी संबंधों के आलोक में समझ कर एकजुट रखने का प्रयास करके निर्णय लेने होते हैं। सास-बहू, पति-पत्नी, पुत्र-पुत्री, पिता-पुत्र-पुत्री सभी संबंधों की गरिमा और उनके आपसी वैमनस्य का ध्यान हर फैसले का आधार बनता है। यदि इसका सम्यक परिपक्व ज्ञान मुखिया को नहीं होगा तो परिवार बिखर सकता है। ऐसे में समाज का नेतृत्व करने वाले विद्वान वसु नेता की स्थिति कपास उगाने वाले किसान सरीखे नहीं अपितु सूत कातने वाले व्यक्ति जैसी होती है, जो भिन्न-भिन्न स्थानों सभ्यताओं की मानव प्रवृत्ति रूपी रूईयों को मिलाकर एक ऐसा सूत कातने का यत्न करता है जिससे उन्नति, प्रगति के कल्याण रूपी वस्त्र का निर्माण हो सके। अर्थात् नेता विद्वान अलग-अलग प्रवृत्तियां योग्यताओं के लोगों को साथ लेकर कल्याण मार्ग के पथ पर राष्ट्र का निर्माण करने के लिए अग्रसर हो सके। यहां विद्वानों को कुटिल और सरल मनुष्यों, झूठ और सत्य का यथावत ज्ञान होना भी अत्यन्त आवश्यक है। विद्वानों को स्वयं और समाज को दोहरे चरित्र वाले कपटी, स्वार्थी चापलूस किस्म के लोगों से बचाना अत्यन्त आवश्यक है। ऐसे कपटी चापलूस अपने स्वार्थ के लिए समाज का पतन करवा देते हैं।●

एडवोकेट जोगेन्द्रसिंह चौहान को 'युवा कार्यकर्ता' पुरस्कार

प्रान्तीय सभा के अन्तर्जातीय विवाह विभाग प्रमुख तथा आर्य समाज सम्भाजी नगर (औ.बाद) के कोषाध्यक्ष एड. श्री जोगेन्द्रसिंह जी चौहान द्वारा किए गए उल्लेखनीय सामाजिक तथा धार्मिक कार्यों को ध्यान में रखते हुए उन्हें सकल मारवाड़ी युवा मंच महाराष्ट्र इस संगठन द्वारा दिनांक १३ जनवरी को **'युवा गौरव'** पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया।

श्री चौहान जी ने आर्य समाज के माध्यम से आज तक लगभग पचास से भी अधिक अन्तर्जातीय विवाह करवाए हैं। साथ ही सम्भाजी नगर में आर्य समाज की गतिविधियों को बढ़ाने में अग्रणी रहते हैं। प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के विविध उपक्रमों को यशस्वी करने में उनका सदैव सहयोग बना रहता है। एक उत्साही आर्य कार्यकर्ता होने के साथ ही वे प्रसिद्ध विधिज्ञ के रूप में भी वे जाने जाते हैं।

कलि स्यानो भवति- कलयुग का कुप्रभाव

- मंगलसिंह अनाकर -
१५ अमृत कोलाकनी सेन्दडा मार्ग
ब्यावरा अजमेर, राजस्थान

कलिश्शयानो भवति संजिहानस्तु द्वापरः।
उत्तिष्ठत् त्रेता भवति कृतं सम्पद्यते चरन् । चरैवेति चरैवेति।

यह एतरेय ब्राह्मण ग्रन्थ का वचन है। वस्तुतः एक चतुर्युगी में चार युग होते हैं यथा कलयुग ४३२००० वर्ष द्वापर ८६४००० वर्ष त्रैतायुग १२९६००० वर्ष व सतयुग १७२८००० वर्ष ये चार युग सृष्टि की आयु ४ अरब ३२ करोड़ वर्ष की काल गणना में समय विभाग के रूप में युग, संवत्सर (वर्ष), अयन, ऋतु, मास, पक्ष, तिथि, मुहूर्त, घड़ी आदि से जाने जाते हैं, जो सृष्टि समकाल से विद्वानों द्वारा प्रतिदिन संकल्प पाठ के रूप में एक-एक दिन गिना जाता आ रहा है। मानव मन में काल चक्र के साथ विचारों में न्यूनाधिक परिवर्तन होता आया है। प्रायः अच्छे बुरे व्यक्ति हर युग में हुए हैं। सतयुग के राजा मानधाता के निधन पर अल्पवय पुत्र भोज के कारण चाचा मुंज को राजा नियुक्त किया गया। मुंज नेलोभवशात् भोज को मारना चाहा। बुद्धिमान बालक भोज को आभास होने पर मुंज को एक संदेश भेजा कि- **''महाराज मानधाता मृत्युपरान्त कुछ भी सम्पत्ति अपने साथ नहीं ले जा सके। लगता है अब यह सारी सम्पत्ति मृत्यु समय आप अपने साथ ले जाओगे।''** संदेश से राजा मुंज लज्जित ही नहीं हुआ, अपितु भोज को अभय कर राज्य की सेवा में संलग्न हो गया। त्रेता के राजा श्रीरामचन्द्रजी ने पिताज्ञा से राज्य त्याग कर वन गमन किया। तथा वनवास काल में सीता अपहरण में पिताज्ञाभंग भय से अनुज राजा भरत को सहायतार्थ समाचार तक नहीं दिया। राक्षस राजा रावण ने माता सीता हरणोपरान्त उनके हृदय परिवर्तन की अभिलाषा में राज्य ही नहीं प्राण भी गंवा दिए। यह था उस काल में सत्य वेद विद्या का सुप्रभाव। द्वापर में संस्कारहीन दुर्योधन धर्म को जानता था। धर्म पर चलने की प्रवृत्ति से वंचित था। अधर्म को भी जानता था, परन्तु निवृत्ति का नितान्त अभाव था। कलयुग में तो स्थिति अत्यन्त भयंकर है।

संक्षिप्त में इन युगों के बारे में जानते हैं। सोते रहना अर्थात् आलस्य प्रमाद अकर्मण्यता अविद्या अन्धकार में डूबे रहना ही कलयुग है। बैठे होना अर्थात् इन दोषों को दूर करने का मन में विचार आना द्वापर है। तो खड़े रहना अर्थात् कर्म करने के लिए प्रयास करना त्रेता है। चलना अर्थात् आर्ष ग्रन्थ अध्ययन व सुकर्म प्रारम्भ करना सतयुग है। चलते रहो, चलते रहो। अर्थात् कर्म करते हुए आगे बढ़ते रहो। वस्तुतः कलयुग के प्रभाव ने मानव स्वभाव की दुर्बलता के अतिरेक एवं सामुदायिक भय भ्रान्तियों तथा स्वार्थजन्य राजनीति ने मानव समाज को अल्पसंख्यक बहुसंख्यक सम्प्रदायों की दृढ़ प्राचीर से विभाजित ही नहीं किया, अपितु परस्पर रिपु भी बना दिया है। विद्वान लोग इसको अनेकशः परिभाषित करते हैं। वर्तमान में विद्यार्थी बहुसंख्यक, अध्यापक अल्पसंख्यक। सांसद-विधायक अल्पसंख्यक, मतदाता बहुसंख्यक। नेता अल्पसंख्यक, जनता बहुसंख्यक। न्यायाधीश-अधिवक्ता अल्पसंख्यक, वादी-प्रतिवादी बहुसंख्यक। अधिकारी अल्पसंख्यक, कर्मचारी बहुसंख्यक। व्यापारी अल्पसंख्यक, ग्राहक बहुसंख्यक। चिकित्सक अल्पसंख्यक, रोगी बहुसंख्यक। विभिन्न सम्प्रदाय के धर्माचार्य अल्पसंख्यक, अनुयायी बहुसंख्यक। आतंकवादी अल्पसंख्यक, पीड़ित जनता बहुसंख्यक आदि। जैसे एक मृत मछली तालाब या कुएं के सारे पानी को दूषित कर देती है। ठीक वैसे ही कुछ अल्पसंख्यक शेष सबको बदनाम कर रहे हैं। प्रताड़ित कर रहे हैं। प्रायः खुरापात कौन कर रहा है? अल्पसंख्यक! जैसे विद्यार्थी को कक्षा में ठीक से न पढ़ा कर ट्यूशन आदि से शोषण, लोकसभा व विधानसभा में समय, श्रम व धन नष्ट कर जनता को भ्रमित कर रिश्वत व भ्रष्टाचार से, न्याय में देरी से, खाद्य पदार्थों में मिलावट से, खाद्य पदार्थों का कृत्रिम अभाव कर, महंगी जांच व दवा लिख कर अन्धविश्वास, अविद्या, पाखण्ड के मण्डन,•से, निर्दोषों की हत्या से। आमजन को कष्ट कौन दे रहा है? अल्पसंख्यक। परेशान कौन कर रहा है? अल्पसंख्यक। बहुसंख्यक की सुनने वाला भी अल्पसंख्यक ही है। देश पर सबके हक की अपेक्षा कुछ का हक बताना क्या अन्याय नहीं है। एक का ही हक छीन कर दूसरे की सहायता करना क्या न्यायोचित है? बिचारा बहुसंख्यक तो आह तक नहीं कर सकता। पिसता ही रहता है। आवश्यकता है जागने की। संगठित होने की। बेचारा मतदाता विकल्प ढूंढ कर नई सरकार देता है। सरकार बन जाने पर दल के नेता वेता एवं कार्यकर्ता फटाके फोड़-फोड़ कर प्रसन्नता व्यक्त करते देखे जाते हैं। अत्यन्त अल्प समय बाद ही मतदाता की आशा निराशा में फोड़े गए फटाकों की राख में परिवर्तित हो जाती है। विकास के नाम पर एक विधायक (आधुनिक राजा) ने तो घूस लेने की भीष्म प्रतिज्ञा भी कर डाली है। वस्तुतः वेद ज्ञान व वैदिक धर्म मानव मात्र के लिए है। इसमें किसी व्यक्ति जाति सम्प्रदाय का कोई वर्णन नहीं है। परमात्मा ने सबके शरीर एक से रचे हैं। यह इसका प्रमाण है। कद, काठी, रूप, रंग में देश काल जलवायु जन्य परिस्थिति भोगौलिक स्थिति आदि से अन्तर हो सकता है। अंग प्रत्यंग क्रिया कलापों में लेश मात्र भी अन्तर नहीं किया। आहार, निद्रा, प्रजनन, मल-मूत्र विसर्जन, वाणी, श्रुति, दृष्टि आदि क्रियाओं में कोई भेद नहीं किया। परन्तु मानव ने स्वार्थवश अपने को बांट दिया है। स्त्री -पुरुष को एक दूसरे का पूरक बनाया है। **'माता निर्माता भवति'** वेद तो माता को निर्माता घोषित कर रहा है तो पिता को भी रक्षक बता रहा है। अतः पुरुषों को भी संकीर्ण मानसिकता से ऊपर उठ, ज्येष्ठ कनिष्ठ भाव त्याग, महिलाओं के हितों की ससम्मान अनिवार्यतः रक्षा करनी चाहिए। वर्तमान

में कलि (कल युग) के कुप्रभाव से जिस माँ ने पुरुष को उत्पन्न किया। निर्माण किया वह उसकी बराबरी करने की मांग कर रही है। निर्माता तो सदैव बड़ा ही होता है। मां भी बड़ी ही है। क्या प्रभु प्रदत्त स्त्री-पुरुष के इस अंग भेद को बराबरी के नाम पर मिटाया, हटाया, घटाया, बढ़ाया जा सकता है? नहीं न। फिर बराबरी और ऊपरी कैसी? वेद की घोषणा- **माता-पितरमृत आ बभाज।** ऋग्वेद १/१६४/८ पदार्थ- स्त्री- माता- पिता- पुरुष को बराबर बाँटा हुआ है। परमात्मा ने दोनों को साथ-साथ बनाया है। किसी को आगे-पीछे नहीं बनाया है। **अहं तद्विद्वला पतिमभ्यसाक्षि विषासहिः।** ऋग्वेद १०/१५९/१ पदार्थः मैं अ बला नहीं हूं। बलवाली हूं। मैंने पति को जीता है। **अहं केतुरहं मूर्धाहमुग्रा विवाचनी।।** ऋग्वेद १०/१५९/२ पदार्थ- मैं केतु हूं। मैं मूर्द्धा हूं। मैं उग्र निर्णायक हूं। एक समाचार चैनल के अनुसार कलियुगे संगेशक्ति को चरितार्थ करती बहन बेटियों की सुसंगठित ब्रिगेड ने दूर्दान्त आतंकी बगदादी को स्वदेश में प्राण रक्षा की आशा में छिपने को विवश कर दिया। कवि के शब्दों में **बगदादी उनिन्दो औजके जाण सेज भुजंग निवास।** यह बराबरी नहीं ऊपरी है। तदर्थ इस वीरता को शतसः नमन व साधुवाद। परमात्मा ने स्त्री को मां बनाया। पुरुष की तुलना में निर्माण क्षमता में पूर्णतः अधिक सक्षम बनाया। सुन्दर सुकोमल शरीर प्रदान किया। वस्तुतः वर्तमान परिवेश में देश-दुनिया, विशेषकर भारत माँ को कौशल्या, सुमित्रा, देवकी, यशोदा, कुन्ती, माता मदालसा आदि जैसी माताओं की अत्यधिक आवश्यकता है। जो पुरुषोत्तम भगवान श्री राम, योगिराज भगवान श्री कृष्ण, ऋषि-महर्षि कणाद, गौतम, पतंजलि, दयानन्द सरस्वती। वीर शिरोमणी छत्रपति शिवाजी, अपराजित विजेता सम्राट पृथ्विराज व महाराणा प्रताप जैसे सपूतों को जन्म दे सके। वर्तमान समय में लड़कियों- लड़कों जैसे वस्त्र धारण कर वैसी होने या दिखने का असफल प्रयास कर रही है। यह मानसिक विकार है। सावधान! यह प्रवृत्ति एवं सोच उन्हें स्वभाविक नारी गुणों मातृ ममता व रूप लावण्यादि से वंचित कर कुलक्षणा कुल्टा कलिहारी नार बना कर गृह सुख से वंचित कर सकती हैं । हमारे पूर्वजों ने शारीरिक दृष्टिकोण को ध्यान में रख पूर्ण वैज्ञानिक आधार पर स्त्री-पुरुष की वेषभूषा का आविष्कार कर वस्त्रों का निर्धारण व निर्माण किया। बेटियों के सुन्दर सुकोमल शरीरानुमा नित नए नानाविध रंग-बिरंगे आकर्षक वस्त्र धारण करने का विधान किया। वर्तमान में बेटियों के मुंह सड़कों पर उग्रवादियों के सदृश मास्क से ढके देखे जाते हैं। कुछ बेटियां आधुनिक भ्रम में पड़ स्वच्छन्द भ्रमण करती दिखती है। यदि कोई परिजन या परिचित पास से निकले तो पहचान नहीं सकता। अन्ततः अनहोनी की शिकार होकर स्वयं व परिवार के लिए भी विकट स्थिति की सम्भावना बना देती है। यही नहीं पश्चिम सभ्यता के प्रभाव अतिरेक ने कई स्त्रियों के वस्त्र भी नितान्त घटाये हैं। अगर यही स्थिति रही तो और भी घट जाने की प्रबल सम्भावना है। यदि इसे अंग (नग्नता या असभ्यता) प्रदर्शन कहें तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। विपरित इसके वेद माता का तो आदेश यह है कि-

परि धत्त धत्त नो वर्चसेमं जरामृत्युं कृणुत दीर्घमायुः।
बृहस्पतिः प्रायच्छद्वास एतत्सोमाय राज्ञे परिधातवा उ।।"

अर्थववेद- २.१३.२

अर्थः हे स्त्री-पुरुषों! वस्त्रों को ऐसे धारण करो कि सब अंग पूर्णतया अच्छी तरह से ढंक जायें और इस वस्त्र धारण से उस सामान्य मृत्यु को पूर्ण वृद्धावस्था के पश्चात् आने वाली मृत्यु बना दो अर्थात् लम्बी आयु को प्राप्त करो। असभ्य अपढ़ी समझी जाने वाली बेटी भी इस अंग प्रदर्शन का कवि के शब्दों में ऐसे विरोध व्यक्त करती दिख रही है।

"भीतर सूं अन्तर नहीं दुजर्न सूं नहीं नेह, प्रीतम सूं परदो नहीं जिण निरखी सब, देह" अर्थात् - मेरा अन्तःकरण पवित्र व विकारयुक्त दुर्विचारों से रहित है फिर भी विकृत मानसिकता, धूर्त, धर्म धुरन्धरों व विकृत मानसिकता से ग्रसित दुर्जनों से सर्वदा सचेत सावधान रहूं। दूर रहूं। अंग प्रदर्शन तो पति-पत्नी हेतु स्वाभाविक हो ही जाता है। फिर अल्प वस्त्रों से नारी गौरव को क्यों घटाऊँ। यह असभ्यता है। परमात्मा ने प्रज्ञा प्रदर्शन में विद्या अर्जन में मन मस्तिष्क में स्त्री-पुरुष में कोई अन्तर नहीं किया। वेद ज्ञान सबके कल्याणार्थ दिया। अतः स्त्री-पुरुषों को परस्पर ससम्मान गृहस्थ को कलह रहित स्वर्ग बनाना चाहिए। वर्तमान में मानव स्वभाव की दुर्बलता के कारण कलि के प्रभाव से उच्च शिक्षा प्राप्त डिग्रीधारी बेटे-बेटियों को प्रायः सड़क किनारे पाद पथ (FOOT PATH) पर पांचवी, छठी पास फैल व्यक्तियों से जिनको स्वयं का भविष्य ज्ञात नहीं है अपना भविष्य जानते देखा जाता है। इतना ही नहीं हमने सर्वव्यापी सर्वशक्तिमान भगवान को भी एकदेशीय पराधीन कर दिया है। मन्दिरों में बन्द भगवान चोरी आदि से स्वरक्षा नहीं कर सकता, स्वेच्छा से नहाना- धोना, खाना- पीना, कहीं आना-जाना नहीं कर सकता।

पुजारी आश्रित हो गया है या कर दिया गया है। वास्तव में लगभग ३००० वर्ष पूर्व भारत में तो क्या पूरे विश्व में कहीं कोई मंदिर मस्जिद,चर्च, गुरुद्वारादि नहीं थे। पूरे विश्व में एक ईश्वर एक सत्य धर्म को मानने वाले ही थे। परन्तु जब अविद्यादि के कारण वैदिक धर्म व संस्कृति विकृत होने लगी तब तत्कालीन कुछ विद्वान महापुरुषों ने बिना वेदाध्याय के सुधारार्थ प्रतिमा का आविष्कार किया होगा जो अधूरा था। यद्यपि जबसे श्रद्धालु ने मन्दिर में जाना प्रारम्भ किया तब से मूर्ति के समक्ष खड़े होने पर उसके दोनों हाथ स्वतः नमस्ते की मुद्रा में हृदय के समीप जुड़ जाते हैं, परन्तु आंखें बन्द हो जाती है। यह परमात्मा की प्रेरणा तथा आत्मा व अन्तःकरण का आदेश होता है कि जिसको तुम देखना चाह रहे हो वह तो ईश्वर है ही नहीं। क्योंकि ईश्वर तो इन भौतिक चक्षुओं से कभी दिख ही नहीं सकता। उसके लिए तो तुम्हें अपने प्रज्ञा चक्षु ही खोलने पड़ेंगे। तदर्थ तुम्हें सत्य सनातन वैदिक ज्ञान एवं धर्म ही अपनाना होगा अन्य कोई विकल्प है ही नहीं। किसी कवि ने भी ठीक ही कहा है । बड़ी भारी भूल करी थी, क्या दिलों में ठान लिया। जब मेरे देश के लोगों ने पत्थर को भगवान मान लिया। अर्थात् जड़ पूजा से दिमाग भी विवेक हीन तर्क शून्य हो जाता है। सन्त दादू ने भी इसी प्रकार कहा है -**दादू दुनियां बावरी मण्डियों पूजे ऊत। आप नपूता मर गिया जांसू मांगे पूत।** अर्थात् विवेकहीन व्यक्ति प्रभु प्रदत्त प्रजनन प्रक्रिया को भली भांति न जान समझकर उस स्मृतिशेष

अप्राणी जड़ वस्तु अनुकृति (छायाप्रति) से सन्तान प्राप्ती की याचना एवं सुख समृद्धि मांगता फिरता है जो स्वयं निसन्तान ही इस संसार सागर से विदा हो गया। गुजरात के सन्त अखा जी ने भी सटीक बात कही है- **सजिवाए निर्जिवो घड़ियो, पछि कहि मने काई देई। अखा मैं तमने पूछूं के. तम्मारी एक फूटी के बै।।** अर्थात् - जिसने जिसको बनाया वही उससे कुछ मांग रहा है। तब अखा जी कहते हैं कि लगता है तेरी एक नहीं दोनों आंखें फूट गई है कबीर साहब ने भी कहा था- **पत्थर पूजे भगवान मिले मैं पूजूं पहाड़ याते तो चाकी भली पीस खाए संसार।** इसी युग में एक आजन्म ब्रह्मचारी क्रांतदर्शी महान राष्ट्रवादी समाज सुधारक स्वराज प्रेमी वेद विद्वान सन्यासी महर्षि दयानन्द सरस्वती हुए। जिन्होंने भारत माता की उक्त दुर्दशा को भली प्रकार जान समझकर लुप्त प्राय वेदों के ज्ञान व प्रकरणानुसार अर्थ व अभिप्राय को सर्व सुलभ करा कर वेदों की ओर लौटने की घोषणा कर कहा- " **सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदि मूल परमेश्वर है। वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है।**

वेद का पढ़ना-पढ़ाना, सुनना-सुनाना सब आर्यों (श्रेष्ठजनों) का परम धर्म है।" वेद चार व उनके चार उपवेद हैं। वेदों में संसार सागर से पार उतरने का सम्पूर्ण ज्ञान है। प्रसंगवश कलि के कुप्रभाव से अध्ययन-अध्यापन की प्राचीन शिक्षा पद्धति के अभाव में आयुर्वेद (उप वेद) का नाम सुनकर साधारण व्यक्ति यही समझता है कि रोगोपचार हेतु विभिन्न औषधियों के योग से निर्मित चूर्ण की पुड़िया बनाने के ज्ञान का शास्त्र है। वस्तुतः ऐसा नहीं है। आयुर्वेद का ज्ञान एवं अर्थ बहुत व्यापक है। (आयु- जीवन, वेद-ज्ञान) अर्थात् जन्म से मृत्यु तक जीवन का सम्पूर्ण ज्ञान जिसमें हैं वह आयुर्वेद (उप वेद) है। आहार-विहार, आचार-विचार, गुण-कर्म, स्वभाव, स्वस्थ- अस्वस्थ आदि का ज्ञान। उदाहरणार्थ स्वास्थ्य से सम्बन्धित इस उप वेद का अग्रांकित

हम अन्धविश्वासी लोगों के विवरण प्रकाशित नहीं करते है- सम्पादक 'सैनी लहर'

कुछ लोग हमें '**सैनी लहर**' (पाक्षिक) में प्रकाशनार्थज्ञ अपने युवक-युवतियों के विवरण रिश्ते करने हेतु भेजते हैं तो उनमें ये बातें लिख देते हैं-

१. मांगलिक/बेमांगलिक/आंशिक मांगलिक

२. जन्म किस स्थान पर हुआ?

३. जन्म का समय क्या था?

ऐसे अन्धविश्वासी लोगों के विवरण हम प्रकाशित नहीं करते हैं। कृपया इस तरह के विवरण हमें नहीं भेजें। **(उपरोक्त तथ्यों का वैदिक संसार समर्थन करता है। अतः वैदिक संसार में भी इस प्रकार की सामग्री प्रकाशन हेतु नहीं भेजें- सम्पादक)**

कई लोग रिश्ता करने से पूर्व लड़का एवं लड़की की जन्मपत्री/कुण्डली पण्डित जी को दिखाते हैं और उनसे लड़का-लड़की के गुण मिलान करवाते हैं तथा यह जानने का प्रयास करते हैं कि लड़का-लड़की इस तरह हो-

युवक- युवती

मांगलिक- मांगलिक

आंशिक मांगलिक- आंशिक मांगलिक

बेमांगलिक- बेमांगलिक

इस तरह के अन्धविश्वासों एवं व्यर्थ के पचड़ों में न पड़े। जो लोग आपसे लड़का-लड़की की जन्मपत्री मांगे, उन लोगों से दूर रहे। ऐसे लोगों से बात नहीं करें। आप भी कुंडली न देखें।

सन्तान (लड़की/लड़की) पैदा होने पर उसकी जन्मपत्री नहीं बनवाए तथा बच्चा/बच्ची का नाम राशि अथवा जन्म नक्षत्र के अनुसार न निकालें। नाम आप स्वयं ही निकालें अथवा पण्डित जी से निकलवा लें। वह नाम सुन्दर धूर्त, फलित ज्योतिषियों से दूर रहे।

लड़का/लड़की का रिश्ता करते समय इन बातों को महत्व दें-

१. लड़का/लड़की की शिक्षा, जॉब, रोजगार।

२. शरीर की बनावट, कद, रंग, स्वास्थ्य आदि।

३. लड़का/लड़की का चरित्र, स्वभाव, आदतें, संस्कार, व्यवहार।

४. माता-पिता का चरित्र, व्यवहार, स्वभाव, संस्कार।

५. परिवार की समाज में प्रतिष्ठा।

६. परिवार व युवक की आर्थिक स्थिति, आय के स्रोत।

लड़का/लड़की के संरक्षक ही परस्पर राय करके रिश्ता तय करें। कभी भी रिश्ता तय करने में पण्डित जी, ज्योतिषी, ज्योतिष की भूमिका नहीं होनी चाहिए।

ब्राह्मणी व्यवस्था ने स्वयं को पुजवाने के लिए तथा लोगों को ठगने के लिए अनेक प्रकार के तरीके चला रखे हैं। '**अक्ल के अन्धें, गांठ के पूरे**' लोग इनके जाल में फंस जाते हैं।

सन्त कबीर, स्वामी दयानन्द सरस्वती, महात्मा ज्योरिराव फूले, डॉ. भीमराव आम्बेडकर आदि विद्वानों एवं समाज सुधारकों ने लोगों को अन्धविश्वासों, रुढ़ियों, पाखण्डों एवं कुरीतियों से बाहर निकलने के लिए स्थान-स्थान पर चेताया है, किन्तु फिर भी बहुत से लोग इनके फैलाए जालों में फंस ही जाते हैं। जिन परिवारों में अशिक्षा एवं गरीबी होने के कारण ज्योतिषियों के पास जाने का प्रचलन नहीं था, उन परिवारों की भी आज की युवा पीढ़ी शिक्षा एवं धन हो जाने के कारण ज्योतिषियों की शरण में जाने लगी है। यह अशुभ लक्षण है।

- आचार्य रामगोपाल सैनी -

फतेहपुर शेखावाटी, जिला-सीकर (राज.) चलभाष - ९८८७३९३७१३

श्लोक प्रासंगिक है। **समदोषः समाग्निश्च समधातु मलक्रियाः प्रश्नात्मेन्द्रियमनः स्वस्थ इतिभि धीयते।** अर्थात् - समदोष (त्रिदोष वात, पित, कफ) समअग्नि, समधातु व जठराग्नि सहित शरिरस्थ सभी धातु यथा रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा, रज, वीर्य (स्त्री-पुरुष का) आदि की अपनी-अपनी अग्नि का सम्यक रूप से कार्य करना। मल -मूत्र, स्वेद (पसीनादि) विसर्जन क्रियाओं का सम होना। आत्मा व मन की प्रसन्नता। दशों इन्द्रियों का ठीक से अपना कार्य करना। ये सब लिंग, चिन्ह या लक्षण जिस शरीर में हो वह पूर्ण स्वस्थ माना जाता है। **वेदों की ओर क्यों लौटें यह समझने हेतु वेद ज्ञान का यह संकेत मात्र है।** विद्वानों के मत में वेद अनन्त ज्ञान के भण्डार हैं। अतः इनकी शिक्षा एवं अध्ययन अध्यापन आवश्यक हैं। आंग्ल भाषा प्रेमी तथाकथित उच्च कुलों में पले बढ़े तथा Convent schools में पढ़े-लिखे उच्चाधिकारी लाखों रुपए प्रतिमाह वेतन प्राप्त कुछ एक महानुभाव चन्द रुपयों की घूस लेकर जेलों की भी शोभा बढ़ाते देखे जा रहे हैं। श्री मेकाले जी की यह शिक्षा पद्धति (अपवाद स्वरूप स्मृतिशेष पूर्व राष्ट्रपति महामहिम श्रीमान् ए.पी.जे. अब्दुल कलाम साहब को छोड़) नौकरी तो बना सकती है, परन्तु विद्वान नहीं। अतः इस शिक्षा पद्धति में परिवर्तन वांच्छित है। वर्तमान में हम सबकी स्थिति महाभारत के दुर्योधन जो धर्म अधर्म को जानने के उपरान्त भी प्रवृत्ति निवृत्ति से रहित था तथा उस प्रज्ञाच्क्षु (अन्धे) के समान है। जिसके आगे बेरा (कुंआ-बे राह- जिससे निकलने का मार्ग न हो) बेरा दिखता नहीं अन्धा चलते रुकता नहीं। अतः पतन अवश्यंभावी है। अपन सरकारों के साथ ही साथ हम सबको भी अपने बच्चों हेतु सत शिक्षा की व्यवस्था करनी होगी। अन्यथा पुनः परतन्त्रता की घोर वेदना सहने के लिए तैयार रहना पड़ सकता है। दूरदर्शन पर जो दृश्य परोसे जा रहे हैं उससे विद्या की अपेक्षा अविद्या अन्धविश्वास आदि का प्रचार-प्रसार ही अधिक हो रहा है। यह कलि का ही कुप्रभाव है कि लगभग सभी धर्म सम्प्रदाय जाने अनजाने नें अन्ध विश्वास से ग्रसित हैं। भगवान श्री रामचन्द्रजी महाराज ने राक्षस राजा रावण को अनुमानतः नौ लाख वर्ष पूर्व मार दिया था। पर वर्तमान में मरे हुए अप्राणी रूप रावण को प्रति वर्ष मारने हेतु राष्ट्र में अपना धन फूंका जाता है, फिर भी मरा हुआ रावण मर नहीं रहा है। विचारणीय है कि क्या यह धन का दुरुपयोग नहीं है? इसका उपयोग रचनात्मक कार्यों में किया जा सकता है। आम आदमी की जेब भी जल कर राख हो रही है। यह तो हिन्दू भाइयों की बात है। अन्य मत मतान्तरों की भी न्यूनाधिक यही स्थिति है। यथा मुस्लिम भाई भी हज के समय वर्षों से शैतान को पत्थर मार रहे हैं (संगे अबसद्) पर शैतान है कि मरता ही नहीं। एक मुस्लिम कवि ने भी अपने विचार निम्न प्रकार से व्यक्त किए हैं- **खूब हंसी आती है मुझे हजरते इन्सान पर। फेले बद खुद करे लानत करे शैतान पर।।** अस्तु आस्था अवश्य होनी चाहिए परन्तु सविवेक हो तो राष्ट्र व मानव समाज का बड़ा उपकार हो सकता है। **महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के शब्दों में आंख के अन्धे गांठ के पक्के न बनें। अर्थात् धूर्त, धर्म धुरन्धरों व दुष्ट दुर्जनों की ठगी से बचें।** वस्तुतः घटनाएं पहले घटती है इतिहास बाद में लिखा जाता है। मानव स्वभाव की दुर्बलता के अतिरेक से उसे प्रक्षिप्त (मिलावट) कर दिया जाता है। 'यतो धर्मस्ततो जय- धर्म की जय- धर्म की ही विजय होती है, महाभारत युद्ध भी धर्म के नाम से लड़ा गया था। परन्तु वहां आजकल का धर्म हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, पारसी, जैनी भाई नहीं था। वहां तो दोनों पक्ष एक ही परिवार एक ही वैदिक धर्म की अनुयायी परस्पर भाई थे, परन्तु गुरुकुलीय वैदिक शिक्षा को समाप्त कर गुरु को आश्रम की अपेक्षा राजा के अन्नाश्रित कर दिया गया। फलतः विद्या के विकार युक्त होने से सब गड़बड़ हो गया। बालक की प्रथम गुरु माँ सचक्षु होकर भी प्रज्ञा चक्षु बन या बना दी गई। फलतः एक पक्ष में संस्कारों का नितान्त अभाव तथा दूसरे पक्ष में आधिक्य था। एक छलिया था दूसरा बार-बार छलता जा रहा था। द्रोपदी का विवाह संस्कार भी वहां उपस्थित धाम्य ऋषि के पुरोहित्व में युवराज युधिष्ठिर के साथ सम्पन्न हुआ था। तथा वह एक पत्नी माना व कहा जा रहा है। माता कुन्ती ने अपने पुत्रों को पवित्र संस्कार दिए उन्हें धर्म प्रायण बनाया। अतः वह ऐसा अनैतिक आदेश कैसे दे सकती थी? माना कि अनजाने में यदि ऐसे शब्द कह भी दिए हो तो आभास होने पर आदर्श माँ अपने शब्द वापस भी ले सकती है। भारतीय संस्कृति में यदि बड़ा भाई अविवाहित हो तो छोटे भाई का विवाह वर्जित है। प्रसंगतः चाहे लक्ष्य भेदन अर्जुन ने किया। विजय पराजय राजा की ही होती है। अतः उत्सव में उपस्थित ऋषि मुनियों, विद्वानों सभासदों राजाओं दोनों पक्षों के परिजनों के साथ विचार विमर्शोपरान्त यह सर्व सम्मत निर्णय था। अतः इस शब्द संग्रह के माध्यम से समस्त विद्वजनों धर्माचार्यों आदि से निवेदन है कि आर्ष ग्रन्थों का अध्ययन-अध्यापन कर मानव समाज में विद्यमान अन्धविश्वासों अन्धपरम्पराओं कुरीतियों को समूल दूर करने का सुव्रत, सुसंकल्प लेने का श्रम करें। क्योंकि साधारण जन बड़ों का अनुकरण करता है, कहा भी है **महाजनो तेन गतः स पन्था।** अर्थात् - बड़े लोग जिस मार्ग पर चलते हैं (सुकर्म करते हैं) वही साधारण जन हेतु राजपथ (अनुकरणीय कर्म) बन जाता है। प्राथमिकता से अरावली क्षेत्रवासियों से विशेष आग्रह है जहां अन्धविश्वास ही नहीं शराब आदि का प्रचलन भी अधिक है। फलतः अपवाद को छोड़ परिवारों में पूर्ण परिश्रम पुरुषार्थ के उपरान्त भी नानाविध कुप्रथाओं कुरीतियों व अन्धपरम्परओं के कारण अर्थाभाव का प्राबल्य है। इस बरबादी से बचने का सुप्रयास कर स्वतः समृद्ध बनें। सम्भ्रान्त बनें। अज्ञानता वश अचेतन भगवान की दया दृष्टि व कृपा वृष्टि हेतु निरपराध मूक प्राणियों की क्रूरतापूर्ण बली देने से बचें। उनकी पीड़ायुक्त वेदना व हाय से प्रतिवर्ष अनावृष्टि अतिवृष्टि आदि विपदाओं का सामना करना पड़ रहा है। कृपया अपने विवेक को जगाएं एवं पाप कर्म से बचें। क्योंकि शुभाशुभ पुण्यापुण्य कर्म फल भोग से कोई भी बच नहीं सकता। यह परमात्मा की पक्षपात रहित न्याय व्यवस्था है। अतः सत शिक्षा एवं सत्य धर्म का अनुसंधान कर सुसंस्कारवान जागृत जन बनें। कहा भी है जन्मना जायते शुद्रःसंस्काराद् द्विज उच्यते। वेदपाठाद् भवेद् विप्रो ब्रह्मा जानाति ब्राह्मणः।।●

गतांक से आगे

आध्यात्मिक जिज्ञासा-समाधान

समाधानकर्ता
- आचार्य सोमदेव आर्य -
महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल
ऋषि उद्यान, अजमेर (राजस्थान)
चलभाष- ८६१९६३५३०७

श्रद्धेय आचार्य जी सादर नमस्ते,

कृपया निम्न बिन्दुओं पर शंका समाधान करने का कष्ट करें।

जिज्ञासा-२ : यदि चारों वेद संहिताएं विदेश से मंगवाए गए तो फिर क्यों कहा जाता है कि स्वामी दयानन्द ने २ वर्ष १० महीने में अपने गुरु विरजानन्द जी से चारों वेदों का अध्ययन किया और शंकाओं का समाधान किया। जब वेद मंगवाए ही बाद में हैं तो अपने गुरुजी से कैसे पढ़े? और यदि वेद पहले ही उपलब्ध थे तो मंगवाने की क्या जरूरत थी। इससे यह भी प्रतीत होता है कि स्वामी दयानन्द जी ने भी अपने गुरु जी के पास से शिक्षा पूरी करने के बाद ही चारों वेद पढ़े। गुरु जी के पास तो जो आधे अधूरे उपलब्ध थे वे ही पढ़ पाए। फिर पूरे वेद बाद में पढ़े हैं तो स्वामी जी को पढ़ाने वाले अन्य कौन गुरु मिले जो स्वामी विरजानन्द जी से भी भली प्रकार पढ़ा सकते थे?

जिज्ञासा-३: क्या वर्तमान में अपने देश भारत या अन्यत्र कहीं भी पृथ्वी पर अध्ययन-अध्यापन की ऐसी व्यवस्था है, जहां पर चारों वेदों का ज्ञान कराया जाता हो। यदि हाँ तो कहां-कहां पर ऐसी व्यवस्था है।

जिज्ञासा-४: आर्य समाज के धुंआधार प्रचार से और वेदों का डंका पीटने या बजाने से पौराणिक भी जाग्रत हो गए, तो अब आर्य समाज के कितने केन्द्र चारों वेद पढ़ा रहे हैं और पौराणिकों के कितने केन्द्र हैं?

इन्द्रसिंह आर्य, २९ अनाज मण्डी भिवानी

समाधान-२

गत अंक में हमने देखा कि वेद हमारे पास पहले ही उपलब्ध रहे हैं, यह भ्रान्ति फैलाई गई कि वेद जर्मन में थे भारत में नहीं। महर्षि दयानन्द ने गुरु विरजानन्द से चारों वेद को पढ़ा यह वर्णन कहीं देखने को नहीं मिलता है, हाँ कुछ वक्ता लोग इस प्रकार की अप्रमाणिक बातें बोलते हैं। महर्षि ने गुरु विरजानन्द से २ वर्ष १० महीने में मुख्य रूप से व्याकरण महाभाष्य पढ़ा था। हाँ जहां कहीं व्याकरण में वेद का विषय आया है वहां गुरुवर ने वेद मन्त्रों के उदाहरण अवश्य दिए होंगे। इस विषय में डॉ. रामप्रकाश जी द्वारा लिखित- '**गुरु विरजानन्द दण्डी जीवन एक दर्शन**' पुस्तक की पंक्तियां लिखता हूं- 'कुछ लेखक मानते हैं कि दयानन्द ने दण्डी जी से केवल व्याकरण पढ़ा और कुछ नहीं परन्तु यह कैसे सम्भव है कि जिस आर्ष-अनार्ष ग्रन्थ निर्णय के लिए पूरा एक दशक (१८५९-१८६८) लगा दिया तथा किसी भी पण्डित से एतद् विषयक चर्चा अथवा शास्त्रार्थ का अवसर हाथ से न जाने दिया, वह चिन्तन वे अढ़ाई साल की लम्बी अवधि में अपनी आशा के केन्द्र बिन्दु दयानन्द से सांझा न करते। वे तो व्याकरण मात्र को मानते ही वेदादि के अध्ययन के लिए थे। अतः संहिता विशेष भले ही न पढ़ाई हो पर यत्र-तत्र वेद से उदाहरण देकर व्याकरण समझाना तो स्वाभाविक था। स्वामी दयानन्द ने भी गुरु से जितना पढ़ा, उससे कहीं अधिक सीखा। यद्यपि अभी वैदिक साहित्य का सम्पूर्ण ज्ञान करना शेष था, परन्तु उन्हें आर्ष-अनार्ष ग्रन्थों के विवेक की सूझ अवश्य प्राप्त हुई।'

इस समस्त कथन से ज्ञात हो रहा है कि महर्षि ने गुरु विरजानन्द जी से चारों वेद संहिताओं का अध्ययन नहीं किया, अपितु आंशिक रूप से कुछ अध्ययन किया और मुख्य रूप से व्याकरण का अध्ययन किया। चारों वेदों का अध्ययन महर्षि ने व्यक्तिगत रूप से अपनी योग्यता के आधार पर स्वयं किया। इस आधार पर हम यह नहीं कह सकते कि गुरु विरजानन्द के समय वेद आधे-अधूरे थे, ऊपर इस विषय में लिखा जा चुका है।

समाधान-३-४

(ग) वर्तमान में अपने देश व अन्यत्र चारों वेद पढ़ने की व्यवस्था है या नहीं इस विषय में मैं नहीं जानता। हाँ वर्तमान में आर्य समाज के वरिष्ठ विद्वान आचार्य श्री सत्यानन्द वेदवागीश चारों वेदों को पढ़ाने का सामर्थ्य रखते हैं। उनसे एक युवा विद्वान आचार्य सनतकुमार जी ने चारों वेद पढ़े हैं और वे अन्य को पढ़ाने का प्रयास करते हैं। किसी गुरुकुल संस्था आदि की जानकारी मुझे नहीं है। वेद कण्ठस्थ कराने वाली संस्थाएं तो हैं जो कि प्रायः पौराणिकों की है। आपके बिन्दु ४ का उत्तर भी इसी में आ गया है।

शेष आगामी अंक में

आध्यात्मिक जिज्ञासा-समाधान
प्रश्न- आपके
उत्तर- मूर्धन्य वैदिक विद्वान के

समस्त पाठकगणों से अनुरोध है कि आपकी ईश्वर, जीवात्मा, प्रकृति, पुनर्जन्म, कर्मफल व्यवस्था, मनुष्य जीवन, धर्म- संस्कृति आदि विषयों से सम्बन्धित कोई जिज्ञासा, शंका, अथवा प्रश्न हो तो लिख भेजें। आपकी जिज्ञासा, शंका अथवा प्रश्नों का समाधान वेद शास्त्रों के मर्मज्ञ मूर्धन्य विद्वान आचार्य सोमदेव जी के द्वारा प्रस्तुत किया जावेगा। अपनी जिज्ञासाएं डाक से **आचार्य सोमदेव जी आर्य**, ऋषि उद्यान, पुष्कर रोड अजमेर (राज.) के पते पर भेजें। जिसकी प्रति वैदिक संसार कार्यालय के पते पर भी भेजें। एक माह में मात्र एक जिज्ञासा, शंका अथवा प्रश्न करें। - **सम्पादक**

देश का आठवां राज्य- महाराष्ट्र

- इन्द्रदेव गुलाटी -
संस्थापक-सावरकरवाद प्रचार सभा
बुलन्दशहर, (उ.प्र.)
चलभाष- ०८९५८७७८४४३

१. धन्य है कि छत्रपति शिवाजी- बाल गंगाधर तिलक, गोपाल कृष्ण गोखले, वीर सावरकर, डॉ. हेडगेवार, डॉ. मुंजे, बाला साहब ठाकरे, डॉ. भीमराव अम्बेडकर और नाथूराम गोडसे का जन्म महाराष्ट्र में हुआ था।

२. विश्व के सबसे बड़े संगठन राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का मुख्य कार्यालय नागपुर में है। इसके लगभग १०० अनुषांगिक संगठन हैं।

३. देश की ९० प्रतिशत धनराशि दान की संघ परिवार को मिलती है।

४. १९४० तक संघ राजनीति क्षेत्र में हिन्दू महासभा का समर्थक रहा, लेकिन डॉ. हेडगेवार के २१ जून १९४० को स्वर्गवासी हो जाने के बाद संघ के सरसंघ संचालक पद पर माधव सदाशिव गोलवलकर उपाख्य गुरुजी बैठे।

५. डॉ. हेडगेवार की सोच आक्रामक थी। वे वीर सावरकर की पुस्तक हिन्दुत्व को पढ़कर कांग्रेस को छोड़कर हिन्दुवादी बने और १९२५ में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ आरम्भ किया। वे वीर सावरकर को झुककर प्रणाम किया करते थे और संघ की शाखाओं में उन्हें बुलाया करते थे।

६. गुरुजी की सोच बचावकारी की रही। १९४५-४६ के चुनावों में एक स्वयं सेवक ने भी हिन्दू महासभा के टिकट से चुनाव नहीं लड़ा और स्वयं सेवकों की भी वोट कांग्रेस को मिली, जिसके फलस्वरूप हिन्दू महासभा को १६ प्रतिशत वोट तो मिली किन्तु सारे प्रत्याशी हार गए।

७. विभाजन होने पर संघ ने भारत आने वाले शरणार्थियों को बसाने में अच्छा कार्य तो किया, किन्तु मुस्लिमों को पाकिस्तान भेजने में कोई रुचि नहीं ली।

८. गुरुजी और वीर सावरकर की सोच में अन्तर बढ़ता जा रहा था, फिर १९५१ में गुरुजी ने हिन्दू महासभा से सम्बन्ध तोड़कर भारतीय जनसंघ बनवा दिया। इसके अध्यक्ष डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी बने। मुखर्जी बम्बई जाकर वीर सावरकर से आर्शीवाद लेने गए, लेकिन दूरदर्शी वीर सावरकर ने यह कहकर आर्शीवाद नहीं दिया कि भविष्य में यह दल कांग्रेस जैसा हो जाएगा।

९. बम्बई राज्य १-५-१९६० को विभाजित हुआ, तब महाराष्ट्र राज्य बना।

१०. महाराष्ट्र विधानसभा में वीर सावरकर का फोटो भी लगा हुआ है।

११. महाराष्ट्र में २८८ विधायक और ४८ सांसद चुने जाते हैं।

१२. नागपुर उप राजधानी बनी है फिर भी विदर्भ बनाने की मांग जारी है।

१३. नवीं मुम्बई शहर बना है ताकि मुम्बई में भीड़ कम हो जाए।

१४. बम्बई/ बौम्बे का नाम बदलकर देवी का नाम हर भाषा में मुम्बई कर दिया गया है। हवाई अड्डे का नाम छत्रपति शिवाजी पर है।

१५. बाला साहब ठाकरे ने शिवाजी के स्वप्नों का राज्य बनाने के लिए १९६६ में शिवसेना बनाई थी। अब वह मजबूत आधार वाला सावरकरवादी राजनीतिक दल है और इस समय राज्य व केन्द्र में भाजपा के साथ सत्ता में है। अब दुबारा सत्ता में है।

१६. पहली बार सत्ता में आने पर सावरकर के भगूर स्थित मकान को राष्ट्रीय स्मारक घोषित कर दिया था।

१७. वीर सावरकर २६ साल जेल में तथा दो साल नजरबंद रहे। मांग की जाती है कि राज्य सरकार २८ मई को सावरकर जयन्ती पर राज्य स्तर का सरकारी अवकाश घोषित करे।

१८. अब्दुल रहमान अंतुले कांग्रेस की ओर से मुख्यमंत्री भी रहे। वे अपना नाम ए.आर.अंतुले लिखते थे, ताकि यह स्पष्ट न हो कि वे मुस्लिम हैं।

१९. हैदराबाद की मुस्लिम पार्टी एम.आई.एम. ने अक्टूबर में विधायकों का चुनाव भी लड़ा था पहली बार इसके दो मुस्लिम विधायक बने हैं।

२०. मुम्बई देश की आर्थिक राजधानी और फिल्म नगरी है।

२१. वर्धा में हिन्दी विश्वविद्यालय है। मराठी भाषा के लिपि देवनागरी ही है।

२२. पूरे राज्य में गणेश उत्सव कई दिन तक अति उत्साह से मनाया जाता है।

२३. १८७५ में मुम्बई में ही आर्य समाज की स्थापना दयानन्द ने की थी।

२४. भाजपा-शिवसेना की सरकार ने कांग्रेस द्वारा दिया गया मुस्लिम को ५प्रतिशत आरक्षण रद्द कर दिया है। ●

दान सहायता-सहयोग

बुलन्दशहर माह पौष तदनुसार दिसम्बर २०१७-जनवरी २०१८

(१) हिन्दू सभा वार्ता नई दिल्ली	२४००/-
(२) अ.भा. हिन्दू महासभा नई दिल्ली-	११०१/-
(३) दो कुंआरी सगी बहनों को दिए-	१०००/-
(४) गुरु गोविन्द सिंह जयन्ती समारोह-	५००/-
माह माघ	
(५) नारायण सेवा संस्थान उदयपुर-	५०००/-
(६) श्री महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट, टंकारा-	५०१/-
(७) आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली-	५१००/-
(८) उड़ीसा की पीड़ितों की सहायतार्थ-	१००/-
(९) नगर आर्य समाज बुलन्दशहर-	२५०/-
(१०) ७५वीं वर्ष गांठ पर भण्डारा-	११५००/-
(११) हिन्दू सभावार्ता नई दिल्ली-	१५००/-
कुल-	२८९५२.००

महर्षि दयानन्द जी द्वारा स्थापित आर्य समाज या मन्दिर?

महर्षि द्वारा आर्य समाज के गठन की दूरदर्शिता पर एक प्रेरक चिन्तन

- पं. उम्मेदसिंह विशारद -
गढ़निवास, मोहक्कमपुर, देहरादून
(उत्तराखण्ड)
चलभाष- ०९४११५१२०१९

महाभारत काल के बाद भारतवर्ष में ईश्वरीय व्यवस्थानुसार ईश्वरीय वाणी वेदों की ओर लौटाने तथा वैदिक धर्म अर्थात् सत्य सनातन वैदिक धर्म का मार्ग बताने वाले महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने भारत माता के माथे पर कलंक पराधीनता का तथा भारतवासी धार्मिक, अन्ध विश्वास, सामाजिक कुरीतियां व भ्रष्ट राजनीति के गहरे संस्कारों में जकड़े हुए थे। महर्षि दयानन्द जी दूरदर्शी थे, उन्होंने समाज में तमाम बुराइयों को दूर करने के लिए एक वैचारिक क्रान्ति का संगठन "**आर्य समाज**" अर्थात् ऐसे लोगों का संगठन जो सदैव उक्त बुराइयों को दूर करने में सहायक हो सकते हैं। आर्य समाज की स्थापना की। आर्य समाज एक राष्ट्रीय संगठन है।

महर्षि दयानन्द जी ने भारत को ऐसा मंच दिया कि जो भारत की दिशा और दशा सुधारने में सक्रिय आन्दोलित हो उठा। यह ऐतिहासिक सत्य है। इस आर्य समाज ने भारत को स्वतंत्र करा दिया। इस स्वतंत्रता संग्राम में सर्वाधिक बलिदान आर्य सामाजियों ने दिया था।

आर्य समाज की स्थापना हुए १४३वां वर्ष चल रहा है।

आर्य समाज के स्थापना के ७२ वर्ष

१८५७ से १९५७ तक एक क्रान्तिकारी युग था, उसको हम आर्य समाज का स्वर्णिम युग भी कह सकते हैं। आर्य समाज का सदस्य बनाना भी एक गौरव की बात होती थी, क्योंकि आर्य समाज के सदस्य का चरित्र अत्यन्त प्रेरणादायक व सत्यवादी, राष्ट्रवादी, ईश्वरवादी, शुद्ध समाजवादी होता था। एक निष्ठा एवं समर्पण की भावना साधारण सदस्य तक में होती थी। प्रत्येक आर्य अपने में चलता-फिरता क्रान्ति का बिगुल बजाने वाला आर्य समाज था। स्वतन्त्रता आन्दोलन में आर्यों ने सर्वाधिक बलिदान किये। समाज में तमाम धार्मिक अन्धविश्वास रुढ़ी परम्पराएं एवं सामाजिक कुरुतियों के विरुद्ध एक वैचारिक आन्दोलन चला दिया था। ज्ञानमार्ग चुन कर अनेक विषयों पर तत्कालीन मठाधिशों से शास्त्रार्थ करके एक नई ज्योति जगा दी। धार्मिक क्षेत्र, सामाजिक क्षेत्र, राजनीतिक क्षेत्र के महन्तों को सोचने में मजबूर कर दिया। उनकी सदियों से जमी जड़े हिलाकर रख दी। इन ७२ वर्षों में आर्य समाज ने अपना एक नया इतिहास रच दिया और महर्षि दयानन्द के कार्यों को पहली श्रेणी में रखा। हम इन वर्षों को आर्य समाज का बलिदानी युग भी कह सकते हैं।

१९५७ से २०१७ तक ६० वर्ष का आर्य समाज

आर्य समाज ने भारत को स्वतन्त्र करा दिया तथा स्वतन्त्रता मिलते ही आर्य समाज का आन्दोलन धीमा पड़ गया, क्योंकि चुनौतियां समाप्त हो गई, क्या? हम सचमुच में ही स्वतन्त्र हो गए? क्या महर्षि दयानन्द का सपना पूर्ण हो गया? आर्य समाज की प्रासंगिकता कब तक बनी रहेगी? आर्य समाज की स्थापना के उद्देश्यों के साथ हमें इन बिन्दुओं पर गम्भीरता से विचार करना होगा। आर्य समाज एक अनुपम आन्दोलन है। संस्था को जीवित रखने के लिए, मूल उद्देश्यों के प्रति सतत आन्दोलन और उनका क्रियान्वयन आवश्यक होते हैं। आर्य समाज का सामाजिक आन्दोलन शनैः शनैः मरने लगा है और आर्य समाज पर रुढ़ीवाद की जंग लगने लगी है। कालान्तर में यह रुढ़ीवाद की जंग आर्य समाज संगठन को एक सम्प्रदाय का रूप दे सकती है।

आर्य समाज के पदाधिकारी भी विद्वानों से कहते हैं तर्क की बात मत करो, खण्डन मत करो, अन्य बुरा मान जाएंगे। विद्वान मंचों से भींच-भींच कर बात करते हैं, क्योंकि आर्य समाज का वर्तमान युग नेतृत्व पर प्रभावी है। सिद्धान्तों पर कहीं कहीं समझौतावादी होता जा रहा है। आर्य समाज के सिद्धान्त, आर्य समाज के तथाकथित मंदिरों में कैद होकर रह गए हैं। शास्त्रार्थ की परम्परा समाप्त हो गई है।

मैं आर्य समाजी संन्यासियों, विद्वानों इसके प्रति पूर्णतः समर्पित महारथियों को अपवाद मानते हुए निःसंकोच कहना चाहता हूं कि आम आर्य समाजी दूसरे

उपकरण

हर नए गेजेट में हमें आलसी
निष्क्रिय अकर्मण्य बनाया है.
टीवी ने पुस्तकें पढ़ना छुड़वाया
कार ने पैदल चलना भुलाया है।
पत्र व्यवहार पर मोबाइल ने
शब्दकोश पर कम्प्यूटर ने पूर्ण विराम लगाया है,
ए.सी. आया छूटी पेड़ों की छाया
बैंकों कार्डों ने पैसे का मोल बिसराया है,
फास्टफूट से खाना पकाना छूटा
महानगर-वास ने मिट्टी की खुशबू से
परिचय छुड़वाया है
डियो ने पसीने से और पर्फ्यूम ने
फूलों की महक से अनजान बनाया है.
रही सही कसर फेकबुक ट्विटर ने पूरी कर दी
जिसने आपस में बोलना बात करना
तक बंद करवाया है।

ओमप्रकाश बजाज
कालिंदी कुंज,
पिपलिया हाना, इंदौर
चलभाष- ९८२६४-९६९७५

लोगों के साथ या तो समन्वय स्थापित करने में लगा है या फिर दूरदर्शिता के अभाव में आर्य समाज व अन्य मत-मतान्तरों में अन्तर न करके आर्य समाज के सिद्धान्तों के प्रति नीरस होता जा रहा है। अधिकांश आर्य परिवारों में जहां वैदिक पताका लहराती थी, उनमें आज गणेश जी व अन्य देवी देवताओं की मूर्तियां पूजी जाती है। आर्य परिवारों में मिलीजुली पूजा हो रही है। यह आर्य समाज के भविष्य के लिए चिन्ता का विषय है।

आर्य समाज-आर्य समाज मन्दिरों में परिवर्तन होने से हानि

महर्षि दयानन्द जी ने यज्ञ को देव यज्ञ कहा है और यह यज्ञ क्रिया आध्यात्मिक व्यक्तिगत पर्यावरण को शुद्ध करने तथा वेद मन्त्रों की रक्षा व उस परमपिता का आभास होता रहे यह व्यक्ति का आन्तरिक मामला है, किन्तु यज्ञ सर्व सार्वजनिक प्रदर्शन की क्रिया नहीं है, किन्तु आर्य समाज केवल बड़े-बड़े यज्ञों के प्रदर्शन को ही प्रचार समझ रहा है, अपितु यज्ञ को एक माध्यम अलग कृत्य है।

यह ठीक है जनसंख्या के आधार पर आर्य समाज भवनों की अत्यधिक बढ़ोती हुई है। यह भी सत्य है कि आर्य समाज के कार्यकर्ता आर्य समाज के भवनों की देखरेख को ही आर्य समाज का कार्य समझ रहे हैं और अपनी तसल्ली के लिए महर्षि दयानन्द जी के नारे लगा कर संतुष्ट हो रहे हैं। सनातनी मन्दिरों में रोज मूर्तियों की पूजा होती है, आर्य समाज के मन्दिरों में हवन द्वारा होती है। फर्क केवल यह है सनातनी मूर्ति पूजक हैं व आर्य समाजी ईश्वर को पूजते हैं। तथा पद लोलुपता, प्रभावशाली व्यक्तित्व एवं परस्पर दोषारोपण से आर्य समाज मूल उद्देश्यों से भटक रहा है, अर्थात् आर्य समाज मन्दिरों में परिवर्तित होने के कारण मन्दिरों में कैद हो गया है।

आर्य समाज संगठन को अंगडाई लेनी ही पड़ेगी

लाखों वर्षों के स्वर्णकाल के पश्चात् पिछले हजारों वर्षों से भारत ने पतन की पीड़ा झेली है। आर्य समाज की स्थापना महर्षि दयानन्द जी द्वारा इस पीढ़ी से मुक्ति दिलाने की दिशा में बोया गया बीज है। भारत की स्वतन्त्रता का पौधा आज लहलहा रहा है। यह १० अप्रैल १८७५ की आर्य समाज की स्थापना का ही सुपरिणाम है। यह स्पष्ट है आर्य समाज के लिए आने वाला समय अधिक महत्वपूर्ण होगा।

अव्यवस्था अति का दूसरा नाम है। संसार में वर्तमान में अव्यवस्था है, अनीति है, अनाचार है। यह संसार व्यवस्था नीति और सदाचार के लिए तड़प रहा है। जो केवल आर्य समाज ही शान्त कर सकता है। अतः आर्य समाज का भविष्य उज्जवल है, चुनौति को स्वीकार करने और उद्यमशील, पुरुषार्थी व वैदिक सिद्धान्तों के आर्य समाज के मन्दिरों की चार दीवारों से बाहर आकर कार्य करने की आवश्यकता है। आर्य समाज को प्रचार के लिए मीडिया को माध्यम बनाना होगा। आज मीडिया का युग है। मेरे इस लेख का उद्देश्य आर्य समाज में और अत्यधिक कार्य करने की विकास के लिए आर्य समाज के कार्यकर्ताओं से प्रार्थना करना मात्र है। ●

हमारी चार माताएं है...

'रमदा' ने वेदों से जाना, हमारा चार माताएं हैं।
जिन्हें मातृ दिवस पर याद कर, उन्हें नमन-वन्दन है।।

प्रथम हमारी वेदमाता ने हमें सत्य ज्ञान देकर कल्याण किया।
द्वितीय धरती माता ने, अन्न, वायु, जल सबको दिया।।

तृतीय जननी माता ने जन्म देकर, पालन-पोषण किया।
चतुर्थ गाय माता ने, अमृत जैसे दूध को पिला दिया।।

इन चारों के ऋण से उऋण, हमको याद करके होना है।
मातृ दिवस आठ मई पर, जननी माता को स्मरण करना है।।

उन्हें मान-सम्मान देकर हमें, अपना कर्त्तव्य निभाना है।
उनसे ज्ञान, भोजन, दूध, घी पाकर, निरोगी स्वस्थ रहना है।।

क्षण भर प्रातः-सायं को ध्यान-योग से, ऊर्जा शक्ति पा लेना है।
अपने संयम-संकल्प और सद्विचारों-कर्मों से, महान बनना है।।

सदाचारी-निर्विकारी बनकर, सद्कार्यों-परोपकारों में व्यस्त रहना है।
'रमदा' को सर्वश्रेष्ठ सुन्दर-स्वच्छ जीवन देने से भारी ईश आभार है।।

मर्यादा में रहकर सत्यमार्ग पर चलकर, मुक्ति पा जाना है।
ब्रह्म के सौ वर्षों तक 'रमदा' इच्छा मुक्त होकर, परमानन्द है।।

मोक्ष अवधि समाप्ति पर, अमैथुन सृष्टि से पुनः युवा मानव है।
यह क्रम अनादि से अनन्त तक, कभी प्रकट, कभी अप्रकट रूप में है।

ऐसे ही आना-जाना, जीव प्रकृति का, अनादि से अनन्त तक है।
'रमदा' यह चराचर माया का खेल प्रभु का रहस्यपूर्ण है।।

आठ मई को प्रतिवर्ष, मदर्स डे-मातृ दिवस हमें मनाना है।
अपनी जननी माँ को मान-सम्मान देकर, आशीर्वाद पाना है।।

'रमदा' की प्रथम गुरु जननी माँ ने, दिव्य गुण प्रदान किए हैं।
सृजन हार से वह, ब्रह्म के समान, यहां बन गई है।।

पालन से विष्णु और कल्याण करने से वह शिव है।
उसके असंख्य उपकारों से, 'रमदा' उऋण न हो सका है।।

जननी माँ ने अपने निधन की दूसरी प्रातः को 'रमदा' से कहा है।
स्वयं सुधर कर पुस्तकें लिखकर, जग को सुधारना है।।

'रमदा' ईश कृपा से, निःशुल्क पुस्तकें, वितरित कर रहा है।
गांव में 'रमदा' को वैदिक आश्रम बनाना, अभी शेष पूरा करना है।।

जहां वैदिक संस्कार-दिव्य आचार विचार दिये जाने शेष हैं।
सदाचारी-निर्विकारी और सद्कर्मों -परोपकारों से ही,
मोक्ष पाने का 'रमदा' पात्र बन जाता है।।

अ.प्रा. प्रो. रामसिंह 'रमदा'
रामाश्रय महात्मा रमदा कुटी, तिकोनिया
गुरुतेगबहादुर लिंकरोड, नैनीताल,(उत्तराखण्ड)
चलभाष- ९९९७३३७९३१

प्रेरक पत्र- सन्देश

- मोहनलाल दशोरा 'आर्य' -
नारायणगढ़, जिला-मन्दसौर (म.प्र.)
चलभाष- ०९५७५७९८४१२

माननीय मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह जी चौहान
मध्यप्रदेश, शासन भोपाल

विषयः नशाखोरी की गिरफ्त में प्रदेश की युवा पीढ़ी व गृहस्थियां उजड़ने से बचाने के लिए नशे की वस्तुओं पर प्रतिबंध हेतु...

माननीय महोदय,

समाज उत्थान और गरीबों के जीवन स्तर को ऊंचा उठाने के लिए हमारी सरकार ने कई जनकल्याणकारी योजनाएँ चला रखी हैं। तम्बाखू, गुटखा पर भी प्रतिबंध प्रदेश में लगा दिया। धन्यवाद। परन्तु शराबखोरी से समाज व गृहस्थियां त्रस्त हैं। आये दिन कई शराबी माता-पिता, पत्नियों और बच्चों को प्रताड़ित कर रहे, मार रहे हैं। कई घर बर्बाद हो गए हैं। नशे में वाहन चलाने से कई हादसे होकर सैकड़ों मर रहे, हजारों घायल होकर अस्पताल भरे पड़े हैं। शराबखोरी से कई, अवैध कार्य, लूट, हत्या, ज्यादती, बलात्कार आदि बढ़ रहे हैं। कई बार शराब बंदी का दबाव भी पड़ रहा है। आप भी भविष्य में शराब बंदी का मन बना रहे हैं। हाई कोर्ट भी अहाते बंद करने हेतु स्पष्टीकरण मांग रही है। फिर क्यों नहीं आपकी केबिनेट शराबबंदी का कानून पास कर रही है। करोड़ों की आय के लालच में लाखों जिंदगियां बर्बाद हो रही है। समाज में शांति और नैतिकता डूब रही है। आय के अन्य विकल्प भी खोजे जा सकते हैं।

अतः आपसे एक वरिष्ठ नागरिक का जो आपका प्रशंसक है, करबद्ध निवेदन हैं कि जिस प्रकार हमारी सरकार ने गुटखा, तम्बाखू पर प्रतिबंध लगाया, अन्य राज्यों में पूर्ण प्रतिबंध शराब पर लगाया, वैसा ही कानून पास कर सख्ती से पालन कराया जावे तो गरीब गृहस्थियां बर्बाद होने से बच जावेंगी व आप शिवराजसिंह 'मामा' की कई बहनें व भानजे भानजी दुआ देंगे। गुटखा (पान पराग+ तम्बाखू) पर भी रोक लगेगी तो युवा पीढ़ी की उम्र बढ़ जावेगी, जो राष्ट्र की नींव व भविष्य है। जनहित में नम्र निवेदन है । -आर्य

मोहनलाल दशौरा

....

श्रीमती साधनासिंह शिवराजसिंह चौहान
मुख्यमंत्री निवास भोपाल (म.प्र.)

विषयः कन्याभ्रूण हत्या एक चिन्ताजनक कृत्य और समस्या....

महोदया, जहां एक ओर हमारी सरकार ने बेटी पढ़ाओ, बेटी बचाओ के तहत बेटी के जन्म पूर्व से वयस्क होने तक कई नई कल्याणकारी योजनाएं चला रखी हैं। शिक्षा, शादी और रोजगार तक की चिंता पाल रखी है, जिससे बेटियां बेटों से आगे निकल रही हैं। आगे चलकर दो खानदानों का नाम रौशन कर रही हैं। वहीं भ्रूण हत्या और अबोध मासूमों के साथ ज्यादति की खबरें प्रतिदिन पढ़ने, देखने और सुनने को मिल रही है। इसका कारण भौतिक विकास पर सामाजिक नैतिक पतन हावी हो रहा है। आज अपरिचित तो ठीक मामा, जीजा, काका और भाई तक यकिन के काबिल नहीं दिखते। **यस्य नार्यस्तु पूज्यते, रमन्ते तत्र देवता।** की जगह देवी के बजाय भोग और सेक्स का खिलौना समझा जा रहा है। **'यूज एण्ड थ्रो'** के फामूर्लो पर ज्यादती व हत्या आम बात हो गई। हर न्यूज पेपर में भ्रूण हत्या, लावारिस औलाद की खबर देखने को मिल जाती है। अवैध रिश्ते, लव अफेयर्स, लिव इन रिलेशन शीप भी इसके लिए जिम्मेदार हैं। लूट, ठगी, अपहरण और शराबखोरी भी इसमें सहयोगी है। अवैध आय, अधिक साधन भी दिमाग खराब कर रहे हैं। दहेज लोभी भी आंकड़े बढ़ा रहे हैं। सास, माता, पत्नी, ननद, देवरानी, जिठानी भी चाहती हैं कि बहू के पेट में लड़की न आवे, इसीलिए लड़कियों की औसत घट रही है।

अतः मेरा करबद्ध निवेदन है कि पाश्चात्य संस्कृति या विकृति व फेशनेबल लाईफ के अवैध रिश्तों व भ्रूण हत्या पर लगाम लगाने हेतु सख्त कानून बनें। जैसा कि बलात्कारी के लिए बनाया गया है। आप प्रदेश के मामा-मामी से बालिकाओं को बड़ी उम्मीद है। उनकी आप शिक्षा, सुरक्षा और सुखमय भविष्य के लिए अपनी ओर से विशेष पहल सरकार के माध्यम से करेंगी तो कृपा होगी। -

मोहनलाल

....

भाई शैलेनद्र जी बोहरा, जावद

आपने मेरे विचार और लेखन पसंद किया, इसके लिए धन्यवाद, यद्यपि हम एक दूसरे से फिल्म 'सिर्फ तुम' की तरह एकदम अपरिचित हैं। आपने तो मेरा स्केफ पुस्तक में देखा होगा। परन्तु मैं तो आपकी तस्वीर से एकदम अपरिचित हूं। आपने जावद आने का आग्रह भी किया, परन्तु ७८वर्ष की आयु, शुगर, हाई पेशेंट हूं। चलता फिरता एक्टिव पुतला। इस पर भी घर के सदस्य जिन पर मैं आश्रित हूं, अकेले कहीं जाने नहीं देते। यदि आपको कभी अवसर मिले तो दर्शन देना। यहां भी आपके १०-१५ घर हैं व मेरा घर भी आपका ही घर है। आपकी आध्यात्म के प्रति रुचि प्रशंसनीय है, वरना इस उम्र में लोग ईश्वर तो क्या माता-पिता को भी भूल बैठे हैं।

आपकी यह रुचि देखकर ही मैंने आपको इन्दौर से निकलने वाली मासिक पत्रिका **''वैदिक संसार''** का सदस्य बनाया है। पच्चीस रुपए हम पांच मित्र बैठकर होटल की काली चाय पीकर फेंक देते हैं। यह पत्रिका आपके दिल दिमाग का वॉश मर्जन करेगी जो भी पढ़ेगा उसे ज्ञानवर्धक, लाभकारी होगी। एकदम आडम्बर, पाखण्ड व अंधविश्वास से दूर सत्य-सत्य-सत्य । जैसी मेरी लिखी पुस्तकें आपने पढ़ी। आज जहां मन्दिर बनाना, मूर्ति स्थापना, प्राण प्रतिष्ठा, पाठ परायण, पूजा, अभिषेक, छप्पन भोग ही कर्म और धर्म बन गया। प्रेक्टिकल में हम शिष्टाचार, सदाचार, सात्विकता, नैतिकता और सत्कर्म से विपरीत आचरण और व्यवहार अपना रहे हैं, जो केवल आंख पर पट्टी बांधकर यात्रा (जीवन) के समान है। मैंने २५ सदस्य इस माह बनाए उसमें आपका इक्कीसवां नम्बर है। सिर्फ स्वान्तः सुखायः परोपकारायः न दाम कमाना न नाम। सिर्फ काम। नमूने के तौर पर कुछ लेख, पत्रिका भेज रहा हूं। कभी सक्षम परिचय की आशा में। **-मोहनलाल दशौरा**

....

भाई श्री हजारीरामजी आर्य/श्री परमवीर सिंह जी राजपुरोहित
बाड़मेर राजस्थान
सादर नमस्ते,

आपका फोन आया, आपने मेरी लिखी पुस्तकें **'जीवनसुधा' 'अनुभव के बिखरे मोती', ईश्वर चालिसा'** पसंद की। वैदिक संसार पत्रिका में भी मेरे लेख व कविता की प्रशंसा की। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि मेरे विचार कई पाठकों जैसे आपको भी अच्छे लगे। मनुष्य की कथनी और करनी में समानता होना जरूरी है, परन्तु आजकल सब तरफ नकली माल की भरमार है। प्रदर्शन ही प्रदर्शन, जिसमें दर्शन कहीं भी नहीं। रावण, कुम्भकरण को बुराइयों का प्रतीक बताकर उनके पुतले फूंककर हर साल विजय दिवस मनाते हैं। प्रदूषण फैलाते हैं, परन्तु हमारे मन के राक्षस हर साल अधिक शक्तिशाली होते जा रहे हैं। कोई मान मर्यादा नहीं। मां, बहन, बेटी, पोती, पत्नी, प्रेमिका सब एक समान दिखने लगी तथा भोग की वस्तु हो गई **(यूज एण्ड थ्रो)** बड़ी हो या छोटी, मासूम, पराई हो या अपनी ही रिश्ते की। किस पर यकीन करें, लिखते ही शर्म आ रही है। वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण के साथ वैचारिक (कर्म) प्रदूषण इतना फैल गया है कि कोई भी सुरक्षित, स्वस्थ और स्वच्छ नहीं है। हमने मन्दिर निर्माण, मूर्ति स्थापना, प्राण प्रतिष्ठा, पूजा, अभिषेक, भेंट, पाठ, पारायण, कथा श्रवण, छप्पन भोग को ही धर्म समझ लिया है। यही हमारा कर्म बन गया। प्रेक्टिकल में भले ही विपरीत हो चलें। धर्म को अपने हिसाब से मोड़ लिया। धर्म प्रदर्शन और व्यापार की वस्तु हो गई। जगह-जगह दुकानें खुल गई। सुन, देख, पढ़कर पीड़ा होती है। कुछ प्रतिशत भले लोगों की वजह से वैदिक संस्कृति रक्षित, संचालित है, वर्ना.....

आपकी चाहत अनुसार पुस्तकें भेज रहा हूं। ऋषि मिशन में जुड़े रहे। सत्य परेशान हो सकता है, परन्तु जीत उसी की होती है। होगी। शेष कुशल। **आपका भाई- मोहनलाल दशौरा 'आर्य'**

पाखण्डी बाबाओं से सावधान

'समरथ को नहीं दोष गोसाई' कहावत तुलसी बाबा ने कुटिल जनों को छल-कपट, भ्रष्टाचार यहां तक कि ईश्वर बनकर भोले-भाले लोगों को ठगने का सुनहरा मौका दे दिया। इसी कड़ी में न जाने कितने ही ठग बाबा लोग जेल में बंद होकर जेल की शोभा बढ़ा रहे हैं। उनमें आसाराम-नारायण स्वामी और रामपाल आदि करीब दो-तीन साल से जेल में है। और अब राम-रहीम, गुरमीत बाबा का भी जेल में नम्बर लग गया है। ये सभी जनता को, अपने शिष्यों को धोखा देकर तन-मन-धन सब गुरुजी के अर्पण का वचन लेकर उनका शारीरिक शोषण, बलात्कार करके जिन्दगी बर्बाद कर रहे हैं। इसी का परिणाम है कि राम-रहीम, गुरमित को दो शिष्याओं से बलात्कार का दोषी करार देते हुए १०-१० साल की सजा और ३० लाख रुपए का जुर्माना की सजा हुई है। बाबा की गिरफ्तारी में कितना श्रम करना पड़ा, यह सभी जानते हैं। और इनके भक्तों द्वारा उपद्रव में आगजनी, बसों में, मोटर साईकिलों, घरों आदि में आग लगाकर तबाही किया और इसमें करीब चालीस लोगों की जानें गई। ये सब इस बाबा की वजह से इनके चेलों की वजह से। इस सबका दोष भी बाबा पर ही जाएगा, जिनकी जानें गई उसकी पूर्ति कभी नहीं हो सकती। क्या बाबा के असली रूप को उनके भक्त समझ पाएंगे या समझ गए हैं। बाबा लोगों को सस्ती या बिना शुल्क बड़ी-बड़ी जमीन दे देना और उनसे वोट मांगना, उनके दरबार में नत मस्तक होना क्या सरकार की गलती नहीं है? सरकार का फर्ज है कि इस तरह के पाखण्डी बाबाओं पर निगरानी रक्खे, अपने गुप्तचर भेजकर उनके चाल-चलन पर चैकिंग करती रहे। १५ साल बाद इस केस का फैसला आया है। क्या इतना विलम्ब से फैसला आना सही है? जिसके साथ बलात्कार हुआ है, वह अगर खुदकुशी कर लेवे या उसको मार दिया जावे तो क्या गुनहगार को सजा हो सकती है? इसके लिए भी समय सीमा होनी चाहिए। नहीं तो न्याय से विश्वास उठ जाएगा। इसी तरह जेल में बंद बाबाओं को सख्त से सख्त सजा तुरन्त मिलनी चाहिए।

महर्षि दयानन्द ने करीब १४२ साल पूर्व आर्य समाज की स्थापना करके और हरिद्वार में पाखण्ड खण्डनी पताका फहराकर व सत्यार्थ प्रकाश लिखकर आम भोली-भाली जनता को ऐसे पाखण्डियों से सावधान रहने की शिक्षा दी थी। सच्चे वैदिक धर्म-वेद-उपनिषद्-दर्शन-ब्राह्मण ग्रन्थ-मनु- स्मृति आदि का शिक्षाओं पर चलने का संदेश दिया था। काश! उनकी शिक्षाओं को आत्मसात कर लिया होता तो आज कोई भी इन पाखण्डियों की चोट का शिकार नहीं होता। प्रचार के बावजूद भी उस समय से अब और अधिक पाखण्ड फैल गया है। कब लोगों में सच्चे धर्म के प्रति चेतना जागेगी, ऊपर वाला ही जानता है।

दिखतरा साहुकार, लखण सब चोर का।
करे भयंकर अपराध, बणभक्त ईश्वर।
ऐसो से रहे सावधान, बणो पारखी।।

- नरसिंह सोनी आर्य -
डागा सेठिया मोहल्ला बीकानेर
चलभाष- ९२५२६१८२६४

वैदिक धर्म संस्कृति के प्रचार-प्रसार के इच्छुक सेवाभावी बन्धु ध्यान दें...

वैदिक संसार मासिक पत्रिका के संचालनार्थ तथा अति पिछड़े वनवासी बहुल जिला मुख्यालय बड़वानी जो कि सतपुड़ा पर्वत श्रेणियों की तलहटी में गुजरात-महाराष्ट्र प्रान्त की सीमा पर स्थित मध्यप्रदेश का रेलवे तथा औद्योगिक इकाइयों का अभावग्रस्त रियासतकालीन नगर है। जहां से १२५ किलोमीटर की परिधि में सक्रिय कोई आर्य समाज तथा वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार का कोई संस्थान नहीं है।

दुर्गम वनांचल से जुड़े इस क्षेत्र में मिशनरियों तथा अन्य विधर्मियों की गतिविधियां प्रबल वेग से सक्रिय है और तथाकथित हिन्दू वर्ग आंखें मूंदे पड़ा है। ऐसे सुदूर क्षेत्र में दूरस्थ वनवासी देहातों से विद्या अर्जन हेतु विद्यार्थी जिला मुख्यालय पर आते हैं, जहां पर शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय है। वैदिक संसार- अतिशीघ्र **'महर्षि दयानन्द वैदिक विद्यार्थी आवास'** प्रारम्भ करने का इच्छुक है।

अतः पत्रिका एवं विद्यार्थी आवास से सम्बन्धित कार्यों के सम्पादन के लिए वैतनिक-अवैतनिक सेवाभावी बन्धुओं की निम्नानुसार आवश्यकता है-

(१) **इंदौर कार्यालय प्रभारी-** जिन्हें कम्प्यूटर पर हिन्दी टाईपिंग का ज्ञान हो और जो कार्यालयीन कार्यों को कर सकें।

(२) **सह-सम्पादक-** जो गुरुकुल के स्नातक हिन्दी, संस्कृत का विपुल ज्ञान रखते हैं जो पत्रिका के लिए समाचार- रचनाओं के लेखन के साथ अन्य स्थानों पर भी जाकर समाचार संकलन के साथ-साथ सदस्यता आदि के माध्यम से धन संग्रह, पत्रिका प्रूफ रिडिंग आदि का कार्य निपुणता से कर सके।

(३) **भ्रमणशील प्रचारक-** जो बन्धु आवागमन में सक्षम हो और स्थान-स्थान पर जाकर पत्रिका का प्रचार-प्रसार कर सदस्य बना सके चार पहिया वाहन चलाने में दक्ष को प्राथमिकता।

(४) **जिला प्रतिनिधि-** जो बन्धु अपने निवास जिला मुख्यालय स्तर पर पत्रिका का प्रचार-प्रसार कर सदस्य बना सके।

(५) **तहसील प्रतिनिधि-** जो बन्धु अपने निवासी तहसील स्तर पर पत्रिका का प्रचार-प्रसार कर सदस्य बना सकें।

(६) **नगर प्रतिनिधि-** जो बन्धु स्वयं के आवास पर निवास करते हुए अपने कार्यों समय-समय निकाल कर पत्रिका का प्रचार-प्रसार कर अपने नगर क्षेत्र में पत्रिका सदस्य बना सकें।

(७) **विद्यार्थी आवास प्रभारी-** जो बन्धु छात्रावास का संचालन कर सकें। विद्यार्थियों को अनुशासन में चलाकर उनमें वैदिक धर्म के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न कर सकें। विद्यार्थियों को सन्ध्या-हवन प्रशिक्षण के साथ-साथ प्रतिदिन संध्या-हवन कर और करवा सकें। जो कम्प्यूटर पर हिन्दी टाईपिंग तथा भजन-उपदेश करने में दक्ष हों।

(८) **वैदिक धर्म उपदेशक-** जो बन्धु पुरोहित कार्य, भजन-उपदेश तथा संस्कार आदि प्रभावशाली शैली में सम्पादित करने में सक्षम हो। बड़वानी स्थित विद्यार्थी आवास में निवास बनाकर क्षेत्र में वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार का कार्य जुझारूता से कर सकें।

उपरोक्त सभी कार्यों के लिए वैतनिक हो अथवा अवैतनिक, धीर-गम्भीर, सहनशील विनम्र, तपस्वी, सेवाभावी, राष्ट्रभक्त, व्यवहार कुशल, ऐषणाओं से रहित, वैदिक सिद्धान्त निष्ठ, वैदिक धर्म को समर्पित सज्जन अपने पूर्ण विवरण से उल्लेखित पत्र द्वारा सम्पर्क करें।

टीप- (१) दूरभाष पर इस सम्बन्ध में वार्ता न करें।

(२) जब तक आमंत्रित न किया जावे पधारने का कष्ट न करें।

(३) आमंत्रित न करने की दशा में समझ जायें की आवश्यकता की पूर्ति हो गई है। प्रतिक्षा न करें।

(४) वैतनिक- अवैतनिक स्थिति स्पष्ट करें। वैतनिक स्थिति में न्यूनतम कितने वेतन की अपेक्षा रखते हैं। स्पष्ट करें।

-सुखदेव शर्मा, प्रकाशक : वैदिक संसार

प्री-वेडिंग अर्थात् भारतीय संस्कृति पर प्रहार करती फूहड़ता

- विक्रमसिंह सिसौदिया -
सम्पादक-सिम्पल समाचार
शामगढ़ जिला- मंदसौर,
चलभाष- ९९९३८३८३९३

पिछले दो-तीन वर्षों से देश में भारतीय संस्कृति से होने वाले विवाह समारोह में एक नया प्रचलन सामने आया है। जिसको वर्तमान में ऐसे परिवारों द्वारा आयोजित किया जा रहा है जो समाज के अन्दर रीढ़ की हड्डी कहे जाते हैं। जिनकी समाज में तूती बोलती है या जो समाज के संचालक होते हैं। ऐसे पैसे वाले लोग आजकल अपने बेटे-बेटियों के लिए प्री-वेडिंग आयोजित करवा रहे हैं।

इसके तहत होने वाले दूल्हा-दुल्हन अपने परिवारजनों की सहमति से शादी से पूर्व फोटो ग्राफर के एक समूह को अपने साथ में लेकर अलग-अलग सैर सपाटो की जगह, बड़ी होटल, हेरिटेज बिल्डिंग, समुद्र बीच व अन्य ऐसी जगहों पर जहां सामान्यतः पति पत्नी शादी के बाद हनीमून मनाने जाते हैं। वहां जाकर अलग-अलग और फिल्मी स्टाइल में एक दूसरे की बाहों में समाते हुए वीडियो शूटिंग करवाते हैं और फिर उसी वीडियोग्राफी/ फोटोग्राफी को शादी के दिन एक बड़ी सी स्क्रीन लगाकर दिखाते हैं, जहां लड़की और लड़के के परिवार से जुड़े तमाम रिश्तेदार मौजूद होते हैं, उन सभी की उपस्थिति में सार्वजनिक रूप से उस कपल को वह सब करते हुए दिखाया जाता है, जिनकी अभी शादी भी नहीं हुई है... और जिनको जीवन साथी बनाने के साक्षी बनाने और उन्हें आशीर्वाद देने के लिए सगे संबंधियों और सामाजिक लोगों को वहां बुलाया जाता है।

लेकिन यह क्या? गेट के अन्दर घुसते ही जो देखने को मिलता है, वह शर्मशार करने वाला होता है। जिस भावी कपल को हम वहां आशीर्वाद देने पहुंचते है वह कपल वहां पहले से ही एक दूसरे की बाहों में झूल रहे होते हैं और सबसे बड़ी बात यह है कि यह सब दोनों परिवारों की सहमति से होता है और लड़का-लड़की कई दिन तक बाहर रहकर साथ में कई बार आलिंगन माहौल बिता चुके होते हैं।

इन सब सच्चाई को देखकर एक विचार मन में आता है जब सब कुछ हो चुका है तो आखिर हमें यहां क्यों बुलाया गया है, क्या हमें सलाद काटने के लिए बुलाया है? पैसे वाले का तो कुछ नहीं बिगड़ता, लेकिन मध्यमवर्गीय परिवारों में ये सब चिंता का कारण बन पड़ा है, क्योंकि शादी जैसे पवित्र बंधन पर शादी से पूर्व ही एक फूहड़ चित्रांकन पर उन्हें भी खर्चा करना पड़ेगा और जिसका खामियाजा समाज के हर छोटे तबके को भुगतना पड़ेगा।

जो कभी अपने घर में पानी भरके नहीं पीते वे युवक अपनी मंगेतर को गोद में उठाते हुए फोटो शूट करवा रहे हैं। बद से बदसूरत मगर पैसे वाले लड़के को उसकी मंगेतर आंखों में आंखे डालकर फोटो शूट करवा रही है। दुकान निपट चुकी है, लोगों के पैसे देना है, वे मंगेतर के साथ फोटो शूट करवा रहे हैं। लोगों से छोड़िये पड़ोसी से तब बातचीत नहीं करते वे फोटो/वीडियो शूट करके शादी में प्रदर्शन करवा रहे हैं। खुद में कोई गुण/योग्यता नहीं लेकिन पिता के पैसे से फोटो शूट करवा रहे हैं। बाल उड़ गए, गंजे हो गए, लेकिन शादी से पहले प्री-वेडिंग शूट करवा रहे हैं। मां-बाप को चरण स्पर्श नहीं करते, लेकिन मंगेतर के बाहों में बाहें डालकर निर्लजता का फूहड़ प्रदर्शन कर रहे हैं।

पैसा पास है तो पैसों के दम पर फूहड़ता का प्रदर्शन करना कहां तक जायज है? भारतीय संस्कृति का उपहास उड़ाते हुए पाश्चात्य संस्कृति का चोला पहनकर बेशर्मी ओढ़ लेना कितना तर्कसंगत है? माता-पिता, ताऊजी- बड़ी माँ, दीदी-जियाजी, शिक्षा देने वाले गुरुजनों के समक्ष वर-वधु का शादी से पहले का मेलजेल फोटोजैनिक प्रदर्शन सभ्य व शालीन समाज के लिए गरीमा को नोंच-नोंचकर समाप्त करने वाला विषय बन पड़ा है।

हालांकि जो बेशर्म हैं उन्हें इस लेख की बिलकुल भी परवाह करने की आवश्यकता नहीं है। वे अपना काम पूर्ण असभ्यता से सचालित करते रहे। बीवी जब फिल्मी दुनिया के भ्रामक माहौल से बाहर आएगी तो वह यही उलाहना देगी की शादी के समय तो खूब हीरो बन रहे थे, अब क्या हुआ?

हम ऐसी सैकड़ों शादियां देख चुके हैं, जहां लाखों रुपए शादी के खर्च के नाम पर पानी की तरह बहा दिए गए और साल दो साल में कई दाम्पत्य जीवन तलाक के नाम पर अलग-अलग हो गए। यक्ष प्रश्न विचारणीय ये है कि जब इतना पैसा था तो शादी क्यों टूटी? दरअसल भारतीय संस्कृति से हटकर कोई भी अपने आपको अलग सा दिखाने की कोशिश करता है तो वह इसी तरह का परिणाम भी भुगतता है।

समझदारों को ज्यादा समझाने की जरुरत नहीं है। शादी की भव्यता की चर्चाएं जिंदगीभर चले तो मन प्रफुल्लित हो जाता है, लेकिन शादी में आपके बहू-बेटे के द्वारा स्वरचित दाम्पत्य फूहड़ता की चर्चा हो तो आप कैसा महसूस करेंगे? ●

व्यसन-मुक्ति

बीड़ी-सिगरेट, गुटखा, पान-मसाला या हो कोई अन्य,
ऐसा ही व्यंजन निराला,
दिलो-दिमाग में हमने इनको क्यों है इतना पाला?
किशोरों, नवयुवकों और वृद्धजनों का है इसने जीवन ही नष्ट कर डाला,
तमाम बीमारियां भले ही दिखती हो पल-पल पर,
फिर भी तलबगारों का मन क्यों करता है 'कुछ और खा लो...'।
पड़ गया मुंह में छाला, रूप-स्वरूप सब इसने बदरंग कर डाला,
कैंसर, ट्यूमर और श्वास सरीखे रोगों का जनक भी यही है आला,
फिर क्यूं रुकते नहीं हम सबके यूं कदम,
सिगरेट के छल्ले में, गुटखा-पान व सूर्ती की बल्ले-बल्ले में।
हम क्यूं भरते रहते हैं दनादन दम,
छद्म खुशियों की भ्रान्ति खोते रहते हैं सर्वत्र जीवन की कान्ति।
मत करो आसरा औरों पर यारो,
आइए, अपने ही हाथों इसे रोककर नयी मशाल जलायें।
बीड़ी-सिगरेट, पान-मसाला, तम्बाकू के उद्योगों में रत,
बाल मजदूरों का भविष्य बचायें।
मत करो सुप्रीम कोर्ट के आदेशों का इन्तजार,
कर रहा आपका खुद का सुप्रीम कोर्ट-आपका हृदय,
आपकी आत्मा, इजहार।
समझें इसे तुरंत होकर धूमपान के प्रति जागरुक,
औरों की ओर भी करे रुख समझे व समझायें महत्ता तम्बाकू-निषेध की,
और इससे भी बढ़कर ८४ लाख योनियों में सर्वश्रेष्ठ मानव जीवन को।
बेमतलब की नहीं है ये बातें, ऐ तलबगारों!
तलब करे इस प्रण का, नहीं लेंगे जहर कभी निकोटिन का।
छोड़ चलेंगे आज और अभी से वास्ता, इस '**धूमपान-ए-रण**' का।
सम्पूर्ण जीवन को धूमपान मुक्त हम सभी बनायेंगे?
सच में '**सच्चे मानव**' होने का गौरव हम तभी पायेंगे।
गौरव, हम तभी पायेंगे....।

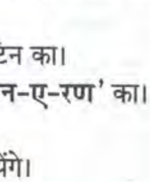

शिवकुमार
भारी पानी संयंत्र रावतभाटा
जिला-चित्तौड़गढ़, राजस्थान
चलभाष- ९४१३२२२०३४

परोपकारिणी सभा, अजमेर द्वारा आयोजित आगामी कार्यक्रम

दिनांक - २३ से ३० मई, २०१८

आर्यवीर दर शिविर, सम्पर्क- ०९४६००१६५९०

दिनांक - ०५ से १२ जून, २०१८

आर्य वीरांगना शिविर, सम्पर्क- ०९४६००१६५९०

दिनांक - १७ से २४ जून, २०१८

योग साधना शिविर, सम्पर्क- ०१४५-२४६०१६४

दिनांक - १६,१७,१८ नवम्बर २०१८

ऋषि मेला, सम्पर्क- ०१४५-२४६०१६४

....

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल शिविर

दिनांक-२७ मई से ३ जून २०१८

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल के तत्वावधान में इस वर्ष का राष्ट्रीय शिविर दिनांक २७ मई से ३ जून २०१८ तक इलाहाबाद (उत्तरप्रदेश) में लगाया जाएगा। कृपया अधिक से अधिक वीरांगनायें शिविर में पहुंच कर इस अवसर का लाभ उठायें।

साध्वी डॉ. उत्तमा यति- प्रधान संचालिका: ९६७२२८६८६३
मृदुला चौहान- संचालिका: ९८१०७०२७६०,
आरती खुराना- सचिव: ९९१०२३४५९५
विमला मलिक- कोषाध्यक्ष: ७२८९९१५०१०

....

ध्यान योग शिविर एवं वैदिक सत्संग

दिनांक- १७ से २० मई २०१८ तक

स्थान- माताजी मन्दिर, रंगवाड़ी मोहल्ला

आर्य समाज सैलाना जिला- रतलाम (म.प्र.) के तत्वावधान में चतुर्दिवसीय प्रातः काल ध्यान योग शिविर तथा सायंकाल वैदिक सत्संग शिविर का आयोजन वर्णित दिनांक को वर्णित स्थान पर किया जा रहा है। धर्मनिष्ठ महानुभाव पधार कर लाभ प्राप्त करें।

आमंत्रित विद्वान- श्री चन्द्रेशजी आर्य- गान्धीधाम
सम्पर्क- शेखर आर्य , चलभाष- ९५८४२२६५५०

....

ध्यान-योग-साधना शिविर

दिनांक-२४ से २७ मई २०१८ तक

वेद प्रचार मण्डल तहसील मल्हारगढ़ के संयोजन में चतुर्थ दिवसीय आवासीय ध्यान योग साधना शिविर का आयोजन दिनांक २४ से २७ मई तक महर्षि दयानन्द विद्या मन्दिर बूढ़ा जिला- मन्दसौर, पर वानप्रस्थ साधक आश्रम रोजड़ से प्रशिक्षित, व्यक्ति की शुद्ध-ज्ञान-कर्म-उपासना कैसे हो? विषय के विशेषज्ञ श्री चन्द्रेश जी आर्य गान्धीधाम के सानिध्य में आयोजित किया जा रहा है।

उपरोक्त शिविर में आध्यात्मिक उन्नति के प्रति निष्ठावान, जिज्ञासुजनों को ईश्वर प्राप्ति के मार्ग पर आगे बढ़ने का मार्ग प्रशस्त किया जावेगा। अत: धीर गम्भीर प्रवृत्ति के साधकगण अतिशीघ्र अपना पंजीयन करवायें। स्थान सीमित। पंजीयन शुल्क मात्र २५१/-

शिविर पूर्णतः आवासीय होगा बाहर आना-जाना व बाहरी सम्पर्क , दूरभाष, चलभाष आदि का उपयोग पूर्णतः निषेध होगा। पंजीयन तथा अन्य विवरण के लिए सम्पर्क करें-

रामभजन पाटीदार, अध्यक्ष वेदप्रचार मण्डल तह-मल्हारगढ़
चलभाष ९४२४५३८५७५
विनोद नागरिया, कनघट्टी, चलभाष- ९७५५३००२९४,

....

२८वां वेद परायण यज्ञ

दिनांक-१५ से १८ मई २०१८ तक

स्थान-सत्संग भवन, नेनौरा (मन्दसौर)

डॉ. सोमदेवजी शास्त्री, मुम्बई के द्वारा अपने पैतृक आवास ग्राम नेनौरा, जिला- मन्दसौर (म.प्र.) पर प्रतिवर्ष किए जाने वाले वैदिक यज्ञ-सत्संग का २८वां आयोजन यजुर्वेद पारायण यज्ञ तथा सत्संग के रूप में आयोजित किया जा रहा है। समस्त धर्मनिष्ठजनों की उपस्थिति सादर प्रार्थनीय है।

आमंत्रित विद्वान- स्वामी श्रद्धानन्द जी सरस्वती-पलवल (हरियाणा)
आचार्य योगेन्द्र जी याज्ञिक-होशंगाबाद (म.प्र.)
डॉ. सीमा जी आर्या- चितौड़गढ़ (राज.)
पं. योगेश दत्त जी आर्य- बिजनौर (उ.प्र.)
पं. केशवदेव जी आर्य- सुमेरपुर (राज.)
निवेदक/ सम्पर्क- डॉ. सोमदेव शास्त्री ९८६९६६८१३०

....

आर्य समाज स्थापना दिवस महोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज का स्थापना दिवस इन्दौर नगर की समस्त आर्य समाजों के तत्वावधान में '**महोत्सव**' के रूप में आर्य समाज संयोगितागंज (छावनी) के संयोजन में दिनांक १८ मार्च २०१८ को हर्षोल्लास पूर्ण आर्य समाज संयोगितागंज के अपने भवन में श्री गोविन्दराम आर्य, उपप्रधान मध्यभारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा एवं इंदौर सम्भाग प्रभारी की अध्यक्षता तथा श्री प्रकाश जी आर्य, महामन्त्री, सा. आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के मुख्य वक्तृत्व में मनाया गया। सर्वप्रथम देवयज्ञ, पश्चात् भजन-प्रवचन हुए। इंदौर महानगर की आर्य समाज संयोगितागंज, आर्य समाज- महर्षि दयानन्द गंज, आर्य समाज मल्हारगंज नगर, आर्य समाज-श्रद्धानन्द भवन, आर्य समाज-मोहता नगर, आर्य समाज वी.के. सिंधी कालोनी, आर्य समाज-न्यू पलासिया के पदाधिकारीगण, सदस्य एवं इंदौर नगर के वैदिक धर्म को समर्पित महर्षि दयानन्द के सिपाहियों के साथ-साथ अन्य जन सामान्य ने भी अधिकाधिक संख्या में उत्साहपूर्वक भाग लिया। प्रतिवर्ष निर्धारित आयोजनानुसार आर्य समाज संयोगितागंज के पदाधिकारी अत्यन्त निष्ठ और कर्मठता के साथ इस आयोजन को करते हैं। सहभोज की सुन्दर व्यवस्था समाज द्वारा की गई। मंच संचालन संस्था मन्त्री मनोज सोनी ने किया। आभार संस्था प्रधान वेद रत्न जी आर्य ने व्यक्त किया। वैदिक संसार, इंदौर द्वारा महापुरुषों के चित्र तथा वैदिक साहित्य की प्रदर्शनी विक्रयार्थ लगाई गई। सफलतापूर्वक आयोजन सम्पन्न हुआ।

आर्य समाज स्थापना दिवस कोटा में सम्पन्न

कोटा। आर्य समाज के विचारों को जन-जन तक पहुंचाने के लिए सभी आर्यजन एवं आर्य समाज संकल्पित होकर कार्य करें। इसके लिए चरणबद्ध कार्यक्रम बनाकर गति प्रदान करें। उक्त विचार आर्य साज स्थापना दिवस के अवसर पर आयोजित समारोह में आचार्य अग्निमित्र शास्त्री ने व्यक्त किए।

इस अवसर पर वैदिक विद्वान वृद्धिचंद शास्त्री ने अपने उद्बोधन में कहा कि आडम्बर, अंधविश्वास और पाखण्ड से मुक्ति केवल ऋषि दयानन्द के वैदिक विचारों से संभव है। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि नगर निगम कोटा की उपमहापौर श्रीमती सुनीता व्यास ने अपने सम्बोधन में कहा कि स्त्री एवं दलितों के लिए आर्य समाज द्वारा किए गए कार्य सभी के लिए अनुकरणीय है। आर्य समाज धर्म एवं संस्कृति का रक्षक है।

इस अवसर पर आर्य समाज के जिला सभा प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि हमें समाज सेवा के कार्यों के माध्यम से आर्य समाज के लोगों को जोड़ना चाहिए। कार्यक्रम में ब्यावर अजमेर से पधारे आर्य जगत् के प्रसिद्ध भजनोपदेशक पण्डित अमरसिंह जी ने आर्य समाज के गौरवशाली इतिहास का वर्णन करने वाले प्रेरणादायी गीत प्रस्तुत किए। कार्यक्रम के बारे में विस्तृत जानकारी देते हुए आर्य समाज तिलक नगर के प्रधान ओमप्रकाश तापड़िया ने बताया कि आर्य समाज का स्थापना दिवस दो दिवसीय कार्यक्रम के साथ मनाया गया। जिसमें प्रतिदिन सायं प्रातः पण्डित वृद्धिचंद शास्त्री के ब्रह्ममत्व में यज्ञ का आयोजन किया गया। जिसमें आगन्तुक आर्यजनों ने मंत्रोच्चार पूर्वक आहुतियां दी। द्वितीय दिवस प्रात:काल यज्ञ के समय आर्य समाज के उपेन्द्रधूत की पौत्री सावी का मुण्डन संस्कार भी किया गया।

महर्षि दयानन्द वेदप्रचार समिति के अध्यक्ष श्री चंदगुप्ता को शॉल ओढ़ाकर अभिनंदन किया गया। इस अवसर पर कोटा की सभी आर्य समाजों के प्रधान एवं मंत्री के साथ आर्यजन विभिन्न क्षेत्रों से पधारे आगन्तुक अतिथि तथा विशाल संख्या में स्त्री, पुरुष, युवा एवं बच्चे उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन आर्य समाज के उपप्रधान गणपतिलाल तापड़िया द्वारा किया गया।

....

आर्य समाज स्थापना दिवस खेड़ा अफगान में मनाया गया

भारतीय नववर्ष के प्रथम दिवस आर्य समाज खेड़ाअफगान (सहारनपुर) में सर्व प्रथम यज्ञ किया गया। आज के यज्ञमान निशकुमार जी सपत्निक थे। यज्ञ के उपरांत वैदिक संस्कृति उत्थान के अध्यक्ष आदित्य प्रकाश गुप्त ने कहा कि लगभग २ अरब वर्ष पूर्व परमेश्वर ने अपने ज्ञान और सामर्थ्य से सत्व, रज, तम,(प्रकृति) के कणों को इकट्ठा करके क्रमश: वायु, अग्नि, जल, सूर्य, चन्द्र, तारे, पृथ्वी आदि स्थूल जगत् को बनाया। वनस्पति, मछलियां, कीट, पतंग, पशु, पक्षी आदि के उपरान्त मनुष्यों (स्त्री-पुरुषों) के शरीर की रचना की। मनुष्य सब युवा उत्पन्न हुए। अमैथुनी सृष्टि बनी। यह भारतीय नववर्ष प्रकृति और विज्ञान पर आधारित होकर मानव समाज को उत्कृष्ट पथ पर निरंतर आगे बढ़ने का सन्देश देता है। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को ही विक्रम संवत् का आरम्भ होता है। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र जी महाराज तथा महाराज युधिष्ठर का राज्यभिषेक भी इसी दिन हुआ था। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने आर्य समाज की स्थापना भी मानव कल्याण के लिए की थी। महाराजा विक्रमादित्य जी ने विक्रम संवत का आरम्भ भी इसी दिन किया। राजेश आर्य जी ने महर्षि दयानन्द जी के प्रति बहुत ही उपदेशात्मक भजन सुनाये। नववर्ष उत्साहपूर्वक मनाया गया। बालेश देवी, शशि प्रभा, कुंवर पालसिंह आर्य, हिमांशु, वीरेन्द्र कुमार, ब्रह्म सिंह, शशिकांत, श्यामलाल जाजवा, सन्दीप कुमार, श्रवण कुमार, सतीश कुमार, आदि उपस्थित रहे।

....

अन्ना हजारे को आर्य समाज ने भेंट किया सत्यार्थ प्रकाश

कोटा। आर्य समाज जिला सभा कोटा द्वारा देश के प्रसिद्ध समाजसेवी अन्ना हजारे को सत्यार्थ प्रकाश भेंट किया गया।

गायत्री शक्तिपीठ विज्ञाननगर में बुद्धिजीवियों के लिए आयोजित एक कार्यक्रम में आर्य समाज जिलासभा के प्रधान अर्जुनदेव चट्ढा की अगुवाई में आर्य समाज के एक शिष्ट मण्डल ने सुप्रसिद्ध समाजसेवी अन्ना हजारे से भेंट कर अन्ना हजारे को सामूहिक वेद मन्त्रोच्चार के साथ केसरिया ओम का पट्टा पहनाकर अभिनन्दन किया तथा शिष्ट मण्डल में आर.सी. आर्य, प्रधान महावीर नगर, प्रेमनाथ कौशल प्रधान भीमगंजमण्डी, श्रीमती सरिजा रंजन गौतम प्राचार्य डीएवी कोटा, आर्य विद्वान बिरधीचन्द पण्डित रामदेव शर्मा, राधा वल्लभ राठौर एवं वेदमित्र वैदिक, बनवारीलाल सिंघल उपस्थित थे।

....

डॉ. चंद्रशेखर लोखण्डे की चार पुस्तकें प्रकाशन की राह पर

लातूर-महाराष्ट्र-भारतीय संस्कृति और अध्यात्म पर प्रा. डॉ. चन्द्रशेखर लोखण्डे जी ने अब तक दो दर्जन के लगभग पुस्तकें लिखीं है जो भारतवर्ष के विभिन्न प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित हुई। उनके द्वारा लिखित-'' **हैदराबाद मुक्ति संग्राम का इतिहास और शुद्धि आन्दोलन और मुस्लिम विद्वानों की घर वापसी**'' ये विशेष हैं। उनकी आगामी पुस्तकें- **'ईश्वर अवतार शास्त्र सम्मत है?'** आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली- **'सुमन्त्र सुविचार, चार भाषाओं में महापुरुषों सुवचन विजय प्रकाश नागपुर में दयानन्द बोल रहा हूं।'** हैं।

उन्होंने भारतीय संस्कृति की रक्षा हेतु 'संस्कृति रक्षक मंच' की स्थापना की है। जिसके माध्यम से वे व्याख्यान माला चलाते हैं। उनके सामाजिक एवं साहित्यिक सेवा के लिए शुभकामनाएँ! पुस्तकों की प्राप्ति हेतु लेखक से इस दूरभाष ९९२२२५५५९७ पर सम्पर्क करें।

आर्य (वैदिक) विचारधारा से ओतप्रोत वैदिक प्रवक्ता, आचार्य (संस्कृत-योग विज्ञान), संस्कारवान, आर्य समाज मल्हारगंज, इंदौर में पुरोहित के रूप में कार्यरत आयु ३८ वर्ष हेतु गुरुकुल की स्नातिका अथवा वैदिक सिद्धान्त आर्य परिवार की विवाह इच्छुक कन्या के अभिभावक सम्पर्क करें।

सम्पर्क सूत्र-९४२५९०७०७०, ९४२५४०१२४७१

वैदिक संसार को आप महानुभावों का आर्थिक सहयोग (दान)

दिनांक २१ दिसंबर २०१७ से २० अप्रैल २०१८ तक

वैदिक संसार के सम्मानित प्रतिनिधि श्री गोविन्दरामजी आर्य का जन्म इंदौर जिले के देपालपुर तहसील के ग्राम अटावदा में यादव कुलवंश में हुआ था।

आप वर्तमान में मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान तथा इंदौर सम्भाग के प्रभारी हैं। आप वर्तमान लोकसभा स्पीकर माननीय श्रीमती सुमित्रा महाजन के जिला पंचायत प्रतिनिधि भी है। आप राजनीति में है जरूर किन्तु आप दूसरे प्रकार के नेता हैं आपके हृदय में व्यक्ति सुधार के माध्यम से परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व सुधार की तड़प होती है। आप राजनीति में भौतिक धन की कमाई की चाह न रखते हुए अपने जेब का भी व्यय कर आध्यात्मिक पुण्य रूपी धन की कमाई करते हैं। समाज सुधार के सामाजिक कार्य आपको अपने पिता से विरासत में प्राप्त हुए हैं। आपके पिता श्री अम्बाराम जी यादव एक सम्पन्न कृषक होकर ग्राम अटावदा में प्रतिष्ठित सरपंच रहे हैं तथा उनका जीवन सामाजिक रुढ़ियों-कुरीतियों के उन्मूलन हेतु समर्पित रहा। आपका परिवार शिव भक्त था। आपके पिता ने अपने घर में शिव मन्दिर बना रखा था। आपने भी अपने जीवन में जड़ पत्थर के तथाकथित शिव को खूब नहलाया-धुलाया और खिलाया, किन्तु कुछ काम न आया। कालान्तर में आपने अपना निवास स्थान देपालपुर को बना लिया। देपालपुर निवासी श्री मांगीलाल जी विजयवर्गीय जिनकी ससुराल आपके जन्मग्राम अटावदा में थी, उनसे आपका घनिष्ठ पारिवारिक सम्बन्ध था। वे वैदिक सिद्धान्ती व्यक्ति थे। उन्होंने आपको सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने हेतु दिया। सत्यार्थ प्रकाश तथा उसके बाद महर्षि दयानन्द जी का जीवन चरित्र पढ़कर आपके जीवन में अज्ञानता के तिमिर का नाश होकर वैदिक धर्म सिद्धान्तों का प्रकाश हो गया। आप ७५ वर्ष की आयु में सामाजिक सेवा कार्यों में एक युवा से कोसों आगे हैं। नशा मुक्त गांव-नगर का अभियान पर कार्य करते हैं। स्थान-स्थान पर मन्दिरों में वेदादि शास्त्रों की स्थापना आपके प्रयासों से हुई है। स्वाध्याय और लेखन आपके जीवन के अभिन्न अंग हैं। आपके द्वारा **'हम चले किस ओर', 'अज्ञानता का खुलासा', जन्माष्टमी का पावन पर्व', 'लोकसभा में वेदों को विश्व ग्रन्थ घोषित किया जावे', लोकसभा में गाय को शाकाहारी राष्ट्रीय पशु घोषित किया जावे', 'अपने गांव की खुद सरकार बने', 'देश का सुधार दिल्ली से नहीं ग्राम से होगा'**, आदि अनेक पुस्तकें एवं प्रचार-प्रसार के पत्रक प्रकाशित हो चुके हैं। आपके लिखे लेख वैदिक संसार में समय-समय पर प्रकाशित होते रहते हैं।

आप सिंहस्थ २०१६ में वैदिक धर्म प्रचार शिविर के अध्यक्ष पद का उत्तरदायित्व का बखूबी निर्वहन कर चुके हैं। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती केसर बाई हैं जो आपके कार्यों में आपको सहयोग करती हैं। आपका एक ही पुत्र था शिवकुमार आर्य जिसका निधन हो चुका है। आपकी एक सुपुत्री श्रीमती सुमन आर्य, आर्य समाज देपालपुर की प्रधाना हैं तथा श्रीमती सरिता आर्य-आर्य समाज बड़नगर से सक्रिय रूप से जुड़ी होकर भजन गायिका हैं। आपके दो सुपौत्र **'आर्य इलेक्ट्रानिक्स'** नामक प्रतिष्ठान का संचालन करते हैं।

आपका वैदिक संसार के प्रति स्नेह हृदय की गहराई से है। इंदौर जिले में वैदिक संसार को घर-घर पहुंचाने का सर्वाधिक श्रेय आपको जाता है। अनेक आजीवन, त्रैवार्षिक, वार्षिक सदस्यता के माध्यम से विपुल आर्थिक सहयोग किया है। वैदिक संसार परिवार आपका आभार व्यक्त करते हुए आपके स्वस्थ, सुख-शान्तिमय, यशस्वी दीर्घायुष्य जीवन की कामना करता है। आपका सम्पर्क क्रमांक ९४२४०१२४७१ है।

आपके प्रेरणा से बने वार्षिक सदस्य निम्नानुसार हैं-

मध्यप्रदेश- जिला-इंदौरः श्री कंचनसिंह सहेबसिंह जी कछावा-कर्की (देपालपुर) (द्विवार्षिक), श्री ईश्वरसिंह गिरवरसिंह जी रजावत-कर्की (देपालपुर), श्री गरसिंह जी डोड -देपालपुर , श्री राजेन्द्र जी जैन-देपालपुर, श्री राजेन्द्र उमरावसिंह जी यादव- आकासौदा (आगरा), श्री बृजमोहन जी व्यास-देपालपुर, श्री श्रीराम बाबूलाल जी मकवाना-सगड़ौद (देपालपुर), श्री गोकुलसिंह जी सोलंकी- हासलपुर, श्री किशोर जी चौधरी-पेमलपुर (देपालपुर), श्री दयाराम जी परिहार 'अधिवक्ता'-जलोदियापंथ (देपालपुर), श्री सन्तोष जी रोपिता-पलसीकर कालोनी इन्दौर-०७, श्री जगदीश भैरूसिंह जी 'सरपंच'- पेमलपुर (देपालपुर), श्री जगदीश शंकरलाल जी चौधरी- रणावदा (देपालपुर) (द्विवार्षिक), श्री प्रेमसिंह भंवरसिंह जी यादव- देपालपुर (द्विवार्षिक), श्री चन्द्रशेखर इन्द्रसिंह जी यादव- देपालपुर (द्विवार्षिक), श्री शंकरसिंह जी पटवारी-हरनासा, श्री ऊंकार सेठ- देपालपुर (द्विवार्षिक), श्री हरिशंकर जगन्नाथ जीपटेल- गोहान (हातोद) द्विवार्षिक, डॉ. भवानी शंकर फकीरचन्द जी व्यास- देपालपुर, श्री भगवानसिंह शंकरसिंह जी चौहान 'पार्षद'- गांधीनगर, इन्दौर , श्री बालमुकुन्द ऊंकारलाल जी चौहान- गान्धीनगर, इन्दौर, पटेल एग्रो इन्टर प्राइजेस श्री ओमप्रकाश जी पटेल- देपालपुर, श्री भूपेन्द्र रामकृष्ण जी पोतदार (द्विवार्षिक), श्री रामनारायण जी पांचाल- देपालपुर, श्री धेराज जी अग्रवाल 'रजत एजेंसी'- इन्दौर ०१।

जिला-उज्जैनः श्री राजेन्द्र नन्दकिशोर जी व्यास-उज्जैन।

जिला-देवासः श्री नन्दकिशोर जी वाधवानी-देवास।

जिला- शाजापुरः श्री रमेशचन्द्र जी इन्द्रिया (पाटीदार)-झोंकर (मक्सी)।

....

वैदिक संसार के सम्माननीय प्रतिनिधि श्री ज्ञानकुमार तात्याराव जी आर्य निवासी सीताराम नगर, लातूर (महाराष्ट्र)। आप महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रतिष्ठित सदस्य तथा आर्य समाज रामनगर लातूर के मन्त्री पद पर अपनी सेवाएं दे रहे हैं। आप अन्तर्जातीय विवाह मण्डल रेणापुर के संस्थापक और संचालक श्री माणिकराव जी भोसले के छोटे भाई है। आपके बड़े भाई माणिकराव जी का सम्पूर्ण जीवन वैदिक धर्म एवं आर्ष साहित्य प्रचार तथा आर्य समाज के कार्यों को समर्पित रहा है। दिन-दुखियों की सेवा करना, जाती तोड़ो आन्दोलन के तहत सैकड़ों अन्तर्जातीय विवाह आप करवा चुके हैं। लगभग शतायु अवस्था के होने जा

रहे माणिकराव जी अभी भी सक्रिय है, शरीर से अवश्य अशक्त हो गए हैं किन्तु भावनात्मक रूप से आप अत्यन्त दृढ़ है। ज्ञानकुमार जी को वैदिक संसार से जोड़ने का श्रेय माणिकराव जी को है। ज्ञानकुमार जी के सहयोग से ही आपने पूर्व में संरक्षक सदस्य बनाए थे जिनका परिचय प्रकाशन-आपके विस्तृत परिचय के साथ मार्च २०१७ के अंक में पृष्ठ ४३ पर प्रकाशित किया गया था। श्री ज्ञानकुमार जी महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र **वैदिक गर्जना** मासिक के सहसम्पादक तथा **लातूर समाचार** साप्ताहिक के भी सहसम्पादक का दायित्व निर्वहन कर रहे हैं। आप साहित्यकार के साथ-साथ मराठी, संस्कृत तथा हिन्दी भाषा के प्रूफ रीडर है। आपने अपने ७५वें जन्मदिवस पर २०१६ में विभिन्न सामाजिक संस्थाओं को ७६ हजार का दान देकर अपना जन्मदिवस मनाया था।

सम्पूर्ण महाराष्ट्र में लातूर जिले के क्षेत्र में सर्वाधिक परिवारों के वैदिक संसार से जुड़ने का श्रेय आपको जाता है। आपके द्वारा अनेक सदस्यों को आजीवन, त्रैवार्षिक, वार्षिक सदस्य बनाकर वैदिक संसार को विपुल आर्थिक सहयोग किया गया। वैदिक संसार परिवार आपका हार्दिक आभार व्यक्त करता है तथा आपके स्वस्थ, सुख, शान्तिम, यशस्वी दीर्घायुष्य जीवन की कामना करता है। आपका चलभाष क्रमांक- ९६२३८४२२४० है।

आपके द्वारा बनाए गए सदस्य निम्नानुसार हैं-

महाराष्ट्र, जिला- लातूरः श्री गणपतराव नारायण राव जी शिन्दे- लातूर, श्री वाल्मिकराव लिंबाजी जाधव- कार्ला (औसा), श्री कुलदीप धर्मदीप जी लोखण्डे- लातूर, श्री हनमंत राव भाऊराव जी जादव (पाटील)- बिबराव (उजेड़), श्री शिवाजी किसनराव जी निकम- मोगरगा, श्री विश्वदास कामराव जी शिन्दे- लातूर, सौ. रत्नमाला सोनेराव जी आचार्य- लातूर, (त्रैवार्षिक), श्री मणिकराव तात्याराव जी भोंसले- लातूर (त्रैवार्षिक), डॉ. बालकृष्ण ग्रन्थालय-रामनगर, लातूर (त्रैवार्षिक), श्री गंगाराम रामजी खानापुरकर- लातूर, श्री ओमप्रकाश गणपत राव जी जाधव- लातूर (त्रैवार्षिक), श्री रघुनाथ दशरथ जी गरड- लातूर, सौ. गायत्री विश्वनाथ जी गायकवाड़- लातूर (आजीवन), श्री पाण्डुरंग नागेश जी खरे 'अधिवक्ता'-लातूर (त्रैवार्षिक), श्री दयानन्द शंकरराव जी जड़े- लातूर, श्री रामेश्वर धनप्पा जी राउत- लातूर (आजीवन), श्री अनन्त रामस्वरूप जी लोखण्डे- लातूर (त्रैवार्षिक), श्री एस.आर. मोरे जी- लातूर (आजीवन), श्री नागराज राचप्पा जी चुड़मुड़े-लातूर (आजीवन)।

जिला- नान्देडः श्री हनमनलु लछमन्ना जी पुल्लागोर- शहापुर (देगलुर), श्री रविन्द्र तानाजी राव नवेकर-मुखेड़।

जिला- उस्मानाबादः श्री किशनराव माणिकराव सूर्यवंशी- उमरगा, श्री दयानन्द ईश्वर जी कोपनार- वाल्हा (भूम)।

जिला-सोलापुरः श्री मन्त्री जी आर्य समाज-सोलापुर, सौ. सत्यवती तुकाराम जी आर्य-सोलापुर।

....

आभार-शुभेच्छा

वैदिक संसार के सम्माननीय प्रतिनिधि श्री गोविंदराम जी आर्य- देपालपुर (मध्यप्रदेश), तथा श्री ज्ञानकुमार जी आर्य-लातूर (महाराष्ट्र) तथा श्री नन्दनसिंह जी रावत-कोटद्वार (उत्तराखण्ड) एवं अन्य सभी सहयोगी दानदाता महानुभावों द्वारा वैदिक संसार को प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष जो सहयोग किया जा रहा है उसके लिए मैं आप सभी का हृदय की गहराइयों से आभार व्यक्त करता हूँ तथा शुभकामनाएं व्यक्त करता हूँ कि आप सभी महानुभाव अधिक से अधिक धनवान, आयुष्यमान, विद्यावान, धर्मात्मा, यशस्वी, पुरुषार्थी, प्रतापी, परोपकारी तथा दानी बनें। जिससे और अधिकाधिक पवित्र कार्य कर अन्तःकरण की पवित्रता में वृद्धि करते हुए पुण्य और यश को प्राप्त कर मोक्ष मार्ग के पथिक बने। पुनः आप सभी का धन्यवाद-हार्दिक आभार.... **– सुखदेव शर्मा**, प्रकाशक वैदिक संसार

उत्तराखण्ड प्रान्त में वैदिक संसार सर्वाधिक किसी जिले में जाता है तो वह है पौड़ी गढ़वाल और उस जिले में भी सर्वाधिक कोटद्वार में जाता है, इसका श्रेय **वैदिक संसार के सम्माननीय प्रतिनिधि श्रीनन्दनसिंह जी रावत**, निवासी कोटद्वार को है।

क्षत्रिय कुल गौरव श्री नन्दनसिंह जी रावत, सुपुत्र श्री मोहनसिंह जी रावत निवासी- सत्येन्द्र नगर, नजीबाबाद रोड, कोटद्वार, जिला- पौड़ी गढ़वाल (उत्तराखण्ड) चलभाष- ९४१०५०९३३९

आप वैदिक सिद्धान्तों को समर्पित सेवाभावी व्यक्ति हैं आप १९७६ में माध्यमिक शिक्षा के दौरान वैदिक धर्म से जुड़े। आप एन.सी. वैदिक इण्टर कालेज आगरा के विद्यार्थी होने से वैदिक धर्म के सम्पर्क में आए। वर्तमान में आप ५८ वर्ष आयु के होकर वन विकास निगम उत्तराखण्ड में स्केलर के पद पर सेवारत हैं तथा आर्य समाज कोटद्वार के सदस्य हैं एवं आर्य उप प्रतिनिधि सभा गढ़वाल के कोषाध्यक्ष पद पर अपनी सेवाएं प्रदान कर आर्य जगत् की सेवा कर रहे हैं। आपको स्वर-ताल का मौलिक ज्ञान भी है। जिसका उपयोग आप परमात्मा के गुणानुवाद तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन पर गीत-भजन प्रस्तुत करते हैं। आप वैदिक संस्कारों को सम्पादित करवाने हेतु भी सेवाएं देते हैं। आप अखिल भारतीय पंचांग सुधार समिति के सक्रिय प्रचारक भी हैं। आपकी धर्म पत्नी श्रीमती उर्मिला रावत (गृहिणी) है। आपके दो सुपुत्र चि. भवभूति रावत तथा चि. दिव्यांश रावत तथा एक सुपुत्री कु. सुमेधा रावत हैं। आप वैदिक संसार के प्रति गहन आत्मियता रखते हैं। आपके सहयोग से ही वैदिक संसार दूरस्थ उत्तराखण्ड के अनेक परिवारों में पहुंचकर वैदिक सिद्धान्तों का लाभ जन-जन को पहुंचा रहा है।

गत वर्ष भी आपके द्वारा बनाए गए सदस्यों का परिचय प्रकाशन जनवरी २०१७ अंक के पृष्ठ ४१ पर प्रकाशित किया गया था। वैदिक संसार परिवार आपका हार्दिक आभार व्यक्त करता है तथा आपके स्वस्थ्य, सुख-शान्तिमय दीर्घायुष्य, यशस्वी जीवन की कामना करता है। आपका सम्पर्क क्रमांक चलभाष-९४१०५०५०९३३९ है। आपके द्वारा वैदिक संसार के वार्षिक, त्रैमासिक निम्न सदस्यों को जोड़कर सहयोग किया गया।

उत्तराखण्ड, जिला-पौड़ी गढ़वालः श्री कन्हैयासिंह खुशहालचन्द्र जी दीवान (५०० दान)- ग्रास्टनगंज, श्री महेन्द्रसिंह जी सैनी- रतनपुर सुखरो (त्रैवार्षिक), श्री सूरवीर सिंह जी खेतवाल- ध्रुवपुर (द्विवार्षिक), श्री आनन्द प्रकाश जी अग्रवाल-कोटद्वार, श्री महेश जी घिल्डियाल- विकासनगर, कोटद्वार (त्रैवार्षिक), डॉ. हरेन्द्र कुमार जी-शिब्बू नगर- श्रीमती मंजूदेवी धर्मपालसिंह जी-शिवपुर, श्री बलवीरसिंह जी रावत- ध्रुवपुर (त्रिवार्षिक), श्री जीतसिंह जी-

किशनपुर (त्रैवार्षिक), श्री जितेन्द्र कुमार लालमणि जी राकेश- उत्तरी झण्डी चौड़, श्री औतारसिंह जी नेगी- उमरावपुर, आर्य समाज- ध्रुवपुर, सुश्री कल्पेश्वरी-कोला दरिया, श्री वासुदेव विमल जी-सेरा मल्ला पट्टी, श्री आशुतोष जी वर्मा, प्रधान आर्य समाज- कोटद्वार (त्रैवार्षिक), श्री राजेन्द्रसिंह जी आर्य- कोटद्वार (त्रैवार्षिक), श्री उमानन्द जी खेतवाल-शिवपुर, श्री अवधेश जी उपाध्याय- सतपुली (त्रैवार्षिक), श्री नन्दनसिंह जी रावत- कोटद्वार (दान-११००)।

जिला- हरिद्वार: श्री सुशीलकुमार सिंह जी मुरलीमल धर्मशाला- हरिद्वार (त्रैवार्षिक)।

जिला- देहरादून: श्री मनमोहनसिंह जी- डाक पत्थर विकासनगर (त्रैवार्षिक), श्रीमती कौशल्यादेवी सुपुत्री श्री विक्रमसिंह जी-देहरादून (त्रैवार्षिक)।

....

अन्य महानुभावों से प्राप्त सहयोग

संरक्षक

आचार्य आनन्द जी पुरुषार्थी- अंतर्राष्ट्रिय वैदिक प्रवक्ता होशंगाबाद (मध्यप्रदेश)

स्वैच्छिक अनुदान

मध्यप्रदेश, जिला-विदिशा: श्री शिवचरण उमाराव सिंह जी पांचाल-गंजबासौदा।

जिला-शिवपुरी: श्री हरिनिवास कुंजलालजी गुप्त- सिरसौद, श्री हनी ओमप्रकाश जी हरियानी-शिवपुरी, आर्य समाज -शिवपुरी, श्री मनोज लक्ष्मीनारायण जी अग्रवाल-शिवपुरी, श्री गुरुदत्त ब्रह्मदत्त जी शर्मा- एस. डी.ओ.पी. शिवपुरी।

जिला- इन्दौर: श्री मालीराम गणपतलाल जी शर्मा-विजय नगर इन्दौर- १०, श्री ओमप्रकाश मांगीलाल जी पाटीदार-महू।

जिला-उज्जैन: श्री सत्य इन्टर प्राईजेस-उज्जैन (विज्ञापन), श्री लक्ष्मीनारायण मांगीलाल जी आर्य- मौलाना (विक्रम नगर) (विज्ञापन)।

उत्तरप्रदेश, जिला- अलीगढ़: श्री देवनारायण जी भारद्वाज- अलीगढ़।

जिला-बुलन्दशहर: श्री इन्द्रदेवजी गुलाटी- बुलन्दशहर।

जिला- आगरा: श्री ओमप्रकाश अशरफीलाल जी शर्मा- आगरा, श्री एस.पी. शर्मा जी- आगरा।

पश्चिम बंगाल, जिला- कोलकाता: श्री खुशहालचन्द्र गोविन्दराम जी आर्य- कोलकाता।

राजस्थान, जिला- भरतपुर: श्री लेखराज बृजलाल जी शर्मा- भरतपुर।

जिला- प्रतापगढ़: श्री राजाराम घीसालाल जी पाटीदार- गोमाना।

आजीवन

गुजरात, जिला- अहमदाबाद: श्री महेन्द्र भाई साधुचरण दास जी आर्य- नरौड़ा, अहमदाबाद।

मध्यप्रदेश, जिला- रतलाम: श्री नन्दकिशोर नाथूलाल जी जायसवाल- आक्याकला,

जिला-इन्दौर: श्री संजय जगदीश जी लछेटा- वेलकम हार्डवेअर विजय नगर, इन्दौर-१०, श्री माणक बद्रीलाल जी जांगिड- सूरज नगर इन्दौर-१६।

हरियाणा, जिला-झज्जर: श्री विवेक धर्मेन्द्र जी आर्य (गुल्या)- बादली।

जिला- फरीदाबाद: श्रीमती चन्द्रमणि मनोहरलाल जी शर्मा- फरीदाबाद

हिमाचल प्रदेश, जिला- मण्डी: श्री श्रवण कुमार तुलसीराम जी आर्य- सुन्दर नगर (श्री रामफलसिंह जी आर्य की प्रेरणा से)।

महाराष्ट्र, मुम्बई: डॉ. सोमदेव भुवानीराम जी शास्त्री- मुम्बई, श्री चन्द्रभूषण जी गिरोत्रा- चेम्बूर मुम्बई।

त्रैवार्षिक

मध्यप्रदेश, जिला- रायसेन: प्रधान/ मन्त्री जी आर्य समाज- मण्डीदीप, श्री उमाशंकर सीताराम जी शर्मा- मण्डीदीप।

जिला-सिहोर: श्री करणसिंह माखनलाल जी वर्मा- आष्टा, श्री राहुल कमोदसिंह जी आर्य- खामखेड़ा बैजनाथ, श्री नवीन रमेशचन्द्र जी आर्य- खामखेड़ा बैजनाथ, श्री सचिन भगवतसिंह जी आर्य- खामखेड़ा बैजनाथ, श्री शिवनारायण रामप्रसाद जी आर्य-मुहाली।

जिला- धार: श्री राजकुमार बाबूलाल जी चौहान (आर्य)-धार।

जिला-उज्जैन: डॉ. ललित कैलाशचन्द्र जी नागर-उज्जैन, श्री राजेन्द्र नन्दकिशोर जी व्यास-उज्जैन, श्री भरतलाल नन्दरामजी पटेल-मौलाना (विक्रम नगर), श्री कृष्णचन्द्र कचरूलाल जी पाटीदार- मौलाना (विक्रम नगर), श्री जगदेवसिंह दूलेसिंह जी पंड्या-मौलाना (विक्रम नगर)। जिला-इन्दौर: श्री अजय महादेव जी शर्मा- कनाड़िया, श्री एस.एन. हरिशचन्द्र जी वर्मा- निधि कालोनी इन्दौर-१८, श्री कैलाशचन्द्र मोहनलाल जी शर्मा- विश्वकर्मा नगर, इन्दौर-०९, श्री संजय लक्ष्मण रावजी गायकेवाड़ 'अधिवक्ता'- नेहरू नगर, इन्दौर।

जिला-शाजापुर: श्री हेमराज दिलीप सिंह जी वर्मा- अवन्तिपुर बड़ोदिया, श्री राधेश्याम नाथूसिंह जी आर्य-करजू, श्री प्रधान जी/ मन्त्री जी आर्य समाज-करजू।

जिला-खरगोन: श्री महेन्द्र भगवान जी आर्य-नान्द्रा, श्री सुखदेव रणछोड़ जी आर्य- नान्द्रा।

जिला-देवास: श्री गोवर्धनलाल गोविन्दराम जी आर्य- देवगढ़।

जिला-आगर: श्री पप्पूसिंह बापूसिंह जी चौहान- भाचाखेड़ी, श्री दरबारसिंह जी आर्य- आर्य मेडिकल स्टोर्स-कानड़।

जिला- रतलाम: डॉ. रामलाल भेरूलाल जी पांचाल- आक्याकला।

जिला- शिवपुरी: श्री नमन शैलेष जी विरमानी-शिवपुरी, श्री मनोज लक्ष्मीनारायण जी अग्रवाल- शिवपुरी।

गुजरात, जिला- जामनगर: श्री जयन्ति भाई करसनभाई कोरिंगा- जामनगर।

जिला-कच्छ: श्री सूर्यकान्त रामजी भाई, हरसोरा- गान्धीधाम।

महाराष्ट्र, जिला- नागपुर: श्री प्रकाश शिवप्रसाद जी शिवहरे- नागपुर, डॉ. रामरतन जी गुप्त- नागपुर, श्री सुरेन्द्र पाल जी आर्य- जरी पटका।

जिला- बुलढाणा: श्री ओमप्रकाश शिवलाल जी शर्मा- बुलढाणा, श्री जगदीश बालूराम जी शर्मा- बुलढाणा, श्री भैरूलाल रामसहाय जी शर्मा- बुलढाणा, श्री पन्नालाल छगनलाल जी धनरेवा- बुलढाणा।

राजस्थान, जिला-अजमेर: माता उत्तमा यति जी-महर्षि दयानन्द

वैदिक संसार के संरक्षक सदस्य बनकर आर्थिक सहयोग कर पूण्यार्जन कीजिए

वैदिक संसार के निर्बाध गति से प्रकाशन हेतु आर्थिक सहयोग करने निमित्त एकमुश्त २५ हजार रुपए प्रदान करें अथवा प्रतिवर्ष ५१०० रुपए नकद देने या अन्यों को सदस्य बनाकर प्रतिवर्ष ५१०० रुपए के सहयोग का व्रत (संकल्प) धारण कर वैदिक संसार के संरक्षक सदस्य बनकर पुण्यार्जन कीजिए। - **सम्पादक**

वैदिक संसार के सम्माननीय संरक्षक महानुभाव

ठा. विक्रमसिंह जी आर्य
अध्यक्ष
राष्ट्र निर्माण पार्टी, दिल्ली

श्री नेमीचन्द जी शर्मा
भामाशाह-राज सरकार
गान्धीधाम (गुजरात)

श्री पूनाराम जी बरनेला
पंच.विश्वकर्मा चेरिटेबल ट्रस्ट
जोधपुर (राजस्थान)

श्री रामफलसिंह जी आर्य
प्रा. वरिष्ठ उपप्रधान
सुन्दर नगर (हिमाचल प्रदेश)

अधि.रतनलाल जी राजौरा
उपमन्त्री-आर्य समाज
निम्बाहेड़ा (राजस्थान)

आ. आनन्द जी पुरुषार्थी
अ. वैदिक प्रवक्ता
होशंगाबाद (म.प्र.)

श्री वेदप्रकाश जी आर्य
आई.ओ.सी.एल.
सवाई माधोपुर (राज.)

श्री लेखराज जी शर्मा
टी.पी.टी. कॉन्ट्रेक्टर
भरतपुर (राज.)

श्री सुनील जी शर्मा
जा.ब्रा. प्रदेशाध्यक्ष
पौण्डा (गोवा)

श्री नानूराम जी जांगिड
जा.ब्रा. जिलाध्यक्ष
धूलिया (महाराष्ट्र)

श्रीमती सुमित्रा जी शर्मा
योग प्रशिक्षिका
अहमदाबाद (गुजरात)

सुश्री अंजलि आर्या
वैदिक भजनोपदेशिका
घरोंडा, (हरियाणा)

श्री आदित्यप्रकाश जी गुप्त
खेड़ा अफगान (उ.प्र.)

आचार्य सर्वेश जी
गुरुकुल केहलारी, म.प्र.

श्री रमेशचन्द्र जी दीक्षित
गाधी, बागपत, उ.प्र.

प्रेरणास्पद व्यक्तित्व
श्रीमान आर.सी.आर्य
जेल अधीक्षक, केन्द्रीय जेल इंदौर

विस्तृत जीवन परिचय आगामी अंक में पढ़ें

आर्य जगत् की सम्पन्न विविध गतिविधियों की चित्रावली

कोटा (राज.) आर्यजनों द्वारा आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया गया।

आर्य समाज खेड़ा अफगान पर आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया गया।

समाजसेवी अन्ना हजारे को सत्यार्थ प्रकाश भेंट करते आर्य जिला सभा कोटा के प्रधान एवं साथी।

90 वर्षीय वयोवृद्ध भजनोपदेशक श्री ओमप्रकाश जी वर्मा यमुनानगर का आर्य समाज खेड़ा अफगान पधारने पर अभिनन्दन किया गया।

भारत के संविधान निर्माता

भारत रत्न
बाबा साहब
डॉ. भीमराव अम्बेडकर

की 127वीं जयंती
14 अप्रैल 2018
के अवसर पर
सभी प्रदेशवासियों को
हार्दिक बधाई
और शुभकामनाएँ

बाबा साहब की जन्मभूमि डॉ. अम्बेडकर नगर (महू), जिला इंदौर में अम्बेडकर जयंती समारोह में भारत के माननीय राष्ट्रपति

श्री राम नाथ कोविन्द

ने मुख्य अतिथि के रूप में शामिल होकर मध्यप्रदेश का मान बढ़ाया है।

श्री शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

D-18016

आकल्पन : म.प्र. माध्यम/2018

मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक - सुखदेव शर्मा 'जांगिड'-इन्दौर, इन्दौर ग्राफिक्स-२४ कुंवर मण्डली खजुरी बाजार से मुद्रित, १२/३, संविद नगर-इन्दौर-४५२०१८ से प्रकाशित
संपादक - गजेश शास्त्री, एम.पी.एच.आई.एन.- २०१२/४५०६६,डाक पंजीयन-एम.पी./आई.सी.डी./१४०५/२०१५-१७